वार्षिक पत्रिका

अपराजिता

2015-2016

स्वर्ण जयन्ती अंक

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रुड़की (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

हमें सब दिशाओं से श्रेष्ठ विचार प्राप्त हों।

Let Noble Thoughts Come to Us from Every Side

ऋ.1.89.1।

50 स्वर्णजयन्ती वर्ष

अपराजिता

अंक – 15 2015–2016

10/10

संरक्षिका

डा० शालिनी पंत, प्राचार्या

मुख्य – सम्पादिका

डा० अर्चना मिश्रा

सम्पादक मण्डल

डा० अनुपमा गर्ग डा० प्रतिभा शुक्ला

डा० रेखा सिंह

कला सम्पादिका

डा० अलका आर्य

छात्र – सम्पादिका

कु0 खुशबू, बी.ए. तृतीय वर्ष कु0 गुलअफशा, बी.ए. द्वितीय वर्ष

कु0 शैला बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

NAAC Accredited - B

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की

सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (स्थापित 1966)

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में प्रकट विचार लेखकों के अपने है। सम्पादक मण्डल की उनसे सहमति होना अनिवार्य नहीं है।

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद

NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

Certificate of Accreditation

The Executive Committee of the
National Assessment and Accreditation Council
on the recommendation of the duly appointed
Peer Team is pleased to declare the
Sri Sanatan Dharam Prakash Chand Kanya Snatkottar Mahavidyalaya
Roorkee, affiliated to Hemvati Nandan Bahuguna Garhwal University, Uttarakhand as
Accredited
with CGPA of 2.33 on four point scale
at B grade
valid up to January 18, 2021

Date : January 19, 2016

Director

E-Mail - sspdegree@gmail.com

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] जून 2012 में सदस्य [illegible] के रूप में निर्वाचित हुए। [illegible]

डॉ॰ शालिनी पंत – प्राचार्या
श्री अतुल कुमार – [illegible] प्रतिनिधि
डॉ॰ अनुपमा गर्ग – [illegible] प्रतिनिधि
डॉ॰ अलका आर्य – शिक्षक प्रतिनिधि

प्रधानमंत्री कार्यालय
नई दिल्ली - 110011
PRIME MINISTER'S OFFICE
New Delhi - 110011

संदेश

प्रधान मंत्री जी को संबोधित आपके पत्र से ज्ञात हुआ है कि सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की के स्थापना वर्ष की स्वर्ण जयंती के अवसर पर वार्षिक पत्रिका 'अपराजिता' का प्रकाशन हो रहा है। इस अवसर पर पत्रिका 'अपराजिता' की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(चंद्रेश सोना)
उप सचिव

डॉ शालिनी पंत
प्राचार्या
श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रुड़की, हरिद्वार
उत्तराखण्ड।

हरीश रावत

उत्तराखण्ड शासन
मुख्य मंत्री, उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड सचिवालय,
देहरादून 248 001
फोन : 0135-2755177
0135-2650433 (आ.)
फैक्स : 0135-2712827

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की द्वारा पत्रिका 'अपराजिता' का 'स्वर्णजयन्ती अंक' के रूप में प्रकाशन किया जा रहा है।

पत्रिका में संकलित की जा रही सामग्री छात्र-छात्राओं के साथ अन्य पाठकों के लिये उपयोगी व ज्ञानवर्द्धक होगी, ऐसी आशा है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिये शुभकामनाएं।

(हरीश रावत)

डॉ शालिनी पंत
प्राचार्या
श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रुड़की, हरिद्वार
उत्तराखण्ड।

HEMVATI NANDAN BAHUGUNA GARHWAL UNIVERSITY, SRINAGAR (GARHWAL)-246174, UTTARAKHAND, INDIA
हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल-246 174, उत्तराखण्ड, भारत
(A Central University)

Prof. J.L. Kaul
Vice-Chancellor
प्रो० जे०एल० कौल
कुलपति

Ph. No. : [illegible]
Fax No. : [illegible]

Ref. No. : [illegible]
Dated : [illegible]

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की, हरिद्वार, उत्तराखण्ड की वार्षिक पत्रिका 'अपराजिता' का अपनी स्थापना के 50वें वर्ष के उपलक्ष्य में 'स्वर्ण जयन्ती अंक' के रूप में प्रकाशन करने जा रहा है। इस हेतु समस्त प्रकाशक मण्डल को हार्दिक बधाई।

यह एक अच्छा प्रयास है, इससे न केवल महाविद्यालय की गतिविधियों एवं महत्वपूर्ण जानकारियों को प्रत्येक छात्र-छात्रा तक पहुँच आसान होगी बल्कि जन सामान्य भी इसके माध्यम से लाभ उठा सकेंगे। आशा है कि कॉलेज पत्रिका में छात्रोपयोगी महत्वपूर्ण, ज्ञानवर्द्धक एवं अन्य रोचक पाठ्य सामग्री का समावेश कर पत्रिका को विशेष बनाने का प्रयास करेगा।

मैं पत्रिका 'अपराजिता' के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

जे०एल० कौल

डॉ शालिनी पंत
प्राचार्या
श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रुड़की, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

प्रो० महावीर अग्रवाल
डी.लिट., साहित्य
पूर्व कुलपति

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय

शुभकामना

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि विद्या की नगरी रुड़की का प्रसिद्ध श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पूर्व वर्षों की भाँति इस वर्ष भी 'अपराजिता' पत्रिका का विशेष अंक प्रकाशित कर रहा है।

यह सुखद संयोग है कि महाविद्यालय की स्थापना के स्वर्णिम पचास वर्ष संस्था पूर्ण कर स्वर्ण जयन्ती मनाने जा रहा है। इस महाविद्यालय ने सफलता, प्रगति एवं विकास से परिपूर्ण शिक्षा जगत में अनेक गौरवपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। इसका संपूर्ण श्रेय महाविद्यालय के कुशल प्रबन्धन को तथा प्राचार्याओं एवं शिक्षिकाओं की महान् परम्परा को ही दिया जाना चाहिये। डॉ० मधुलिका सक्सेना एवं डॉ० अंजू अग्रवाल ने जिस परम्परा को स्थापित किया वर्तमान प्राचार्या डॉ० शालिनी पंत उसे आगे बढ़ा रही हैं।

स्वर्ण जयंती के ऐतिहासिक एवं पावन अवसर पर मैं स्नेहमयी प्राचार्या जी, लोकप्रिय मेधावी शिक्षिकाओं एवं समस्त महाविद्यालय परिवार को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

दिनांक : 31.5.16

महावीर अग्रवाल
मंगलाभिलाषी

आवास : 'वेदालोक' 22 ... विहार, पो० गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार -249 404 (उत्तराखण्ड)

Prof. Manjula Rana
Member

उत्तराखण्ड लोक सेवा आयोग
UTTARAKHAND PUBLIC SERVICE COMMISSION

संदेश

अत्यन्त गौरव एवं हर्ष का विषय है कि श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की (जिला हरिद्वार) उत्तराखण्ड अपनी वार्षिक पत्रिका 'अपराजिता' का स्वर्ण जयंती अंक प्रकाशित करने जा रहा है।

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका छात्र छात्राओं को सृजनात्मक धरातल प्रदान कर उनमें प्रेरणास्पद रचनात्मकता का बीज वपन करती है। वस्तुतः भूमण्डलीकरण के इस दौर में सृजनात्मक प्रतिभाओं को संरक्षित रख उन्हें समुचित परिवेश प्रदान करना इन पत्रिकाओं का मुख्य ध्येय भी है। मूलतः हमारी संस्था विद्यार्थी ही है, उनके उत्तम व्यक्तित्व निर्माण का सम्पूर्ण दायित्व हम सभी का है। इस संदर्भ में 'अपराजिता' के संकलन प्रशंसनीय हैं।

मैं हृदय से समस्त सम्पादक एवं संरक्षक मण्डल को शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ तथा पत्रिका के सफल एवं दीर्घजीवी होने की मंगलकामनाएं करती हूँ।

सादर सद्भाव सहित।

शुभेच्छु
प्रो० मंजुला राणा

Anag Bhawan, Gurukul Kangri, Roorkee Road, Haridwar - 249404
Ph.: 01334-244966 (O) 01334-240604 (R)

स्थापित : 1966

फोन : 01332-26[illegible]
फैक्स : 01332-26[illegible]

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रुड़की – 247 667 (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

(सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर)

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय अपनी स्वर्ण जयंती वर्ष में पत्रिका आराधिका का प्रकाशन कर रहा है। आशा है पत्रिका में ज्ञानवर्धक, रोचक जानकारी प्रकाशित होंगी जो छात्राओं में नैतिक व सांस्कृतिक मूल्यों का विकास करेंगी। महाविद्यालय की पत्रिका के माध्यम से छात्राओं की रचनात्मकता को एक आधार मिलेगा। स्वर्णिम जयंती वर्ष में प्रवेश करने पर उज्ज्वल भविष्य हेतु आप सभी प्रयासरत रहेंगे।

प्राचार्या, संपादिका, मंडल व समस्त महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं।

दिनांक – 18.04.16

अजय [illegible]
अध्यक्ष, प्रबंध समिति

स्थापित : 1966

फोन : 01332-26[illegible]
फैक्स : 01332-269434

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रुड़की – 247 667 (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

(सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर)

संदेश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष हो रहा है कि महाविद्यालय पत्रिका आराधिका व शोध पत्रिका प्रकाशित की जा रही है। पत्रिका छात्राओं व प्राध्यापिकाओं की रचनात्मकता व महाविद्यालय की उपलब्धियों का दर्पण होती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि संपादिका मंडल व महाविद्यालय परिवार के प्रत्येक सदस्य के सहयोग से यह गत वर्षों की भांति नवीन कलेवर में सजी-संवरी होगी व [illegible] पाठकों को महाविद्यालय संबंधी जानकारी देगी। स्वर्णिम जयंती के अवसर पर महाविद्यालय स्थापना से जुड़े प्रकाश इसे रोचक बनायेंगे। मैं स्वर्ण जयंती वर्ष में महाविद्यालय के प्रगति पथ पर अग्रसर हेतु प्राचार्या, समस्त शिक्षक व शिक्षणेतर सदस्यों को हृदय से शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

दिनांक – 20.4.2016

दिनेश गुप्ता
उपाध्यक्ष, प्रबंध समिति

स्थापित : 1966

फोन : [illegible]
फैक्स : [illegible]

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रुड़की – 247 667 (हरिद्वार) उत्तराखण्ड
(सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर)

संदेश

[illegible] की अनुभूति है कि श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय रुड़की अपनी स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण कर स्वर्ण जयन्ती के सोपान पर आरूढ़ हो चुका है। [illegible]

[illegible] 50 वर्ष [illegible]

[illegible]

[illegible] महाविद्यालय दिनों दिन नई ऊँचाइयों को प्राप्त करे ऐसी मेरी शुभकामनाएं हैं।

दिनांक : 28-05-16

[illegible]
सचिव, प्रबंध स[illegible]

स्थापित : 1966

फोन : [illegible]
फैक्स : [illegible]

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रुड़की – 247 667 (हरिद्वार) उत्तराखण्ड
(सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय रुड़की अपनी वार्षिक पत्रिका "[illegible]" का प्रकाशन करने जा रहा है।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

धन्यवाद।

दिनांक : 12.02.16

सौरभ भूषण
कोषाध्यक्ष, प्रबंध समिति

प्राचार्या - संदेश

[illegible] है कि महाविद्यालय के स्वर्ण जयंती वर्ष में प्रकाशित हो रही अपराजिता-2016 [illegible] होगी। महाविद्यालय के संस्थापकों व [illegible] यह अंक उनके लिए श्रद्धांजलि स्वरूप है। हम उन सभी के [illegible] जिन्होंने कन्या शिक्षा के महत्व को [illegible] महाविद्यालय [illegible] इस छोटे से बीज को [illegible] विद्यालय प्रगति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील [illegible] ऐसे सभी कर्म-योगियों को शत-शत प्रणाम।

सत्र 2015-16 न केवल स्वर्णिम जयन्ती वर्ष के रूप में अपितु स्वर्णिम उपलब्धि वर्ष के रूप में [illegible] की महाविद्यालय ने [illegible] 2.53 सी॰जी॰पी॰ए॰ के साथ 'B' ग्रेड प्राप्त किया।

[illegible] 50 वर्षों के [illegible] को पिरोकर कलात्मकता की [illegible] से सजाकर प्रस्तुत [illegible] निश्चित ही आनन्दित करेगा। [illegible] हम सभी को [illegible] जायेगा।

[illegible] यह अंक पाठकों को ज्वलंत मुद्दों से जुड़ने की प्रेरणा देगा [illegible] की अनुभूति। आइये, भौतिक उपलब्धियों के साथ संवेदनशील [illegible] और इन पौधों को [illegible] पल्लवित पुष्पित होने का [illegible] है।

[illegible] सम्पादन, सुनियोजित प्रस्तुतिकरण, इन्द्रधनुषी साज-सज्जा हेतु सम्पादक [illegible] महाविद्यालय परिवार के प्रत्येक शिक्षक व शिक्षणेत्तर सदस्यों को अन्तः [illegible] के लिए सतत् शुभकामनायें। हमारी छात्रायें [illegible] पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों का निर्वाह सफलतापूर्वक करते हुए [illegible] ऐसी आकांक्षाओं के साथ.....................

दिनांक - 31.5.16

प्राचार्या

डा॰ शालिनी [illegible]

सूची

		पृष्ठ
सम्पादकीय		15
आधार		
1. महाविद्यालय के [illegible]		19
2. विकास यात्रा		29
सोपान		
[illegible] (संस्मरण)		
1. [illegible]	- डा॰ [illegible]	39
2. [illegible] के आँगन में	- डा॰ [illegible]	41
3. [illegible] की पगडंडी पर	- डा॰ [illegible]	43
4. [illegible] के झरोखे में	- डा॰ [illegible]	45
5. यादों का [illegible]	- डा॰ [illegible]	47
6. [illegible] के [illegible] से	डा॰ [illegible]	48
7. [illegible] : मेरा कॉलिज	- डा॰ [illegible]	49
8. [illegible]	- डा॰ [illegible]	50
9. यादों के झरोखे से	- डा॰ [illegible]	51
10. यादें......	- [illegible]	52
11. महाविद्यालय : मेरी कर्मस्थली	[illegible]	53
12. मेरा महाविद्यालय: मेरी प्रेरणा	- [illegible]	53
13. मेरी [illegible] का [illegible] विद्यालय	- [illegible]	54
14. मेरा प्रिय कॉलिज	- श्रीमती [illegible]	54
15. क्या भूल जा सकता है उन्हें......	- डा॰ [illegible]	55
आरोहण : पत्रिका खण्ड		
महाविद्यालय की प्रगति आख्या (2015-16)		61
NAAC - Revisiting the Moments		77
1. [illegible]	- कु॰ [illegible]	83
2. [illegible]	- [illegible] उपाध्याय	84
3. भारतीय संस्कृति में प्रकृति	- कु॰ [illegible]	85
4. [illegible] में भारत का [illegible]	- डा॰ [illegible]	86
5. एक नजर में लड़की	- कु॰ [illegible]	87
6. [illegible] में शिक्षक की भूमिका	- डा॰ [illegible] शर्मा	88
7. भारतीय समाज में संयुक्त परिवार का भविष्य	- कु॰ [illegible]	90

8. आधुनिक युग में प्राचीन भारतीय मूल्यों की प्रासंगिकता	-	कु० [illegible]
9. प्राचीन भारतीय कला - एक अनमोल धरोहर	-	कु० कल्पना पांडे
10. [illegible] एवं [illegible] व्यवस्था	-	सुश्री अंजलि
11. [illegible]	-	डा० किरन बाला
12. प्रकृति एवं मनुष्य	-	आरती अग्रवाल
13. पुस्तकों के [illegible]	-	कु० खुशबू
14. भारतीय संस्कृति में [illegible]	-	कु० [illegible]
15. [illegible] की [illegible]	-	श्रीमती [illegible] कुमारी
16. [illegible] हिन्दी का प्रयोग एवं विकास	-	डा० सीमा [illegible]
17. [illegible]	-	कु० [illegible]
[illegible]	-	खुशबू
[illegible]	-	[illegible]
18. [illegible] (नाटक) : [illegible]	-	[illegible]
19. आधुनिक [illegible] में शैक्षिक मूल्य	-	कु० [illegible]
20. [illegible] और [illegible] के अनुभव	-	डा० अर्चना मौर्या 110
21. [illegible] महाविद्यालय पुस्तकालय	-	श्रीमती प्रीति शर्मा
22. वर्तमान [illegible] में सांस्कृतिक मूल्यों का महत्व	-	डा० [illegible] आर्य
23. [illegible] के [illegible] के साथ होली	-	कु० खुशबू
24. [illegible]	-	डा० अर्चना मिश्रा
25. [illegible]	-	कु० अनुराधा
26. [illegible]	-	कु० रितु रानी

English Section

1. Indian Achievement in space	-	Priyanka Rana
2. Essence of Education	-	Kalpana Pandey 122
3. 50 Years of Scientific Advancement	-	Himanshi Thakur & Mudita Verma
4. Social Impact of Genetic - Engineering	-	Dr. Neelam R. Dashade & Mrs Jyoti Sharma
5. Education	-	Fatma Parveen
6. The Youth and Real Make in India	-	Dr. Bharati Sharma
8. Environmental Pollution	-	Dr. Anupma Garg

[illegible]

अपनी बात.....

[illegible]

धन्यवाद।

डा० अर्चना मिश्रा

चरन् वै मधु विन्दति चरन् स्वादुमुदुम्बरम्।
सूर्यस्य पश्य श्रेमाणं यो न तन्द्रयते चरन्।।
चरैवेति, चरैवेति।

ऐतरेय ब्राह्मण

चलता हुआ मनुष्य ही मधु पाता है,
चलता हुआ ही स्वादिष्ट फल चखता है।
सूर्य का परिश्रम देखो, जो नित्य
चलता हुआ भी कभी आलस्य नहीं करता।
............इसलिए चलते रहो, चलते रहो।

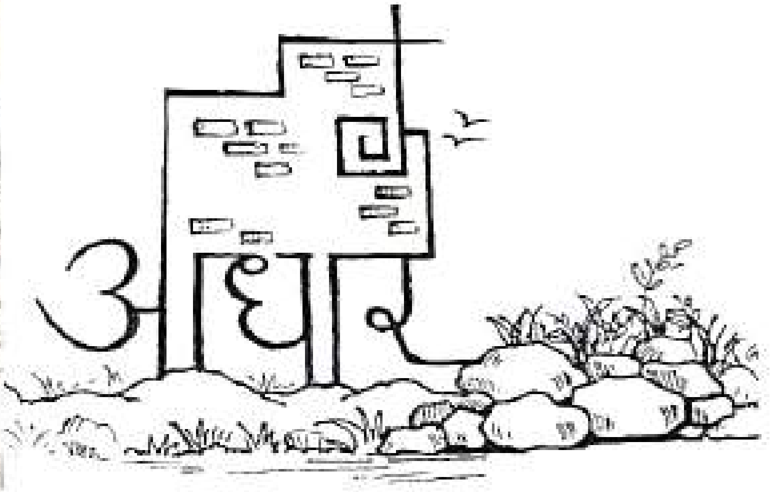

अतीत.....
वर्तमान.....
और भविष्य......

प्रवहमान काल की लहरों पर चलते-चलते
आज जानना है सागर को
पहचानना है....
अंतरंग परिचय पाना है....,
स्पर्श करना है अतल गहराई का —
करना है मंथन
पाने को मोती, मानिक, अनमोल रतन।

महाविद्यालय के प्रकाश स्तंभ

'कीर्तिर्यस्य स जीवति'
जिस की कीर्ति जिन्दा है वही जीवित रहता है।

सृष्टि के विराट प्रवाह में अनेक व्यक्ति जन्म लेते और पुनः उसी में लीन हो जाते हैं। किन्तु काल के प्रबल वेग द्वारा सभी कुछ समेट कर बहा ले जाने के बावजूद कुछ व्यक्तित्व ऐसे भी होते हैं जिनके जीवन की आभा और कर्मों की दीप्ति कभी धूमिल नहीं पड़ती। 50 वर्ष तो क्या आने वाले सैकड़ों वर्षों तक उनका जीवन जगत के लिए एक मिसाल बना रहता है और उनके कृतित्व की शुभ्र-उज्ज्वल कीर्ति चतुर्दिक प्रकाश बिखेरकर समग्र मानवता का मार्ग प्रशस्त करती रहती है।

महाविद्यालय का गौरवशाली अतीत ऐसे ही अलौकिक व्यक्तित्व वाले अनेक महानुभावों के उच्च आदर्शों व उत्कृष्ट विचारों की दिव्य आभा से प्रकाशित है। महाविद्यालय के आधारस्तंभ हमारे इन संस्थापक सदस्यों का जीवन संकीर्ण स्वार्थों में नहीं वरन् उदात्तता, सद्भावना और जनकल्याण जैसे उच्च मानवीय आदर्शों के लिए समर्पित था। उनके व्यापक कार्यक्षेत्र और असाधारण कृतित्व का आकलन करना तो एक असंभव सा कार्य है, जो किया जा सकता है-उनके जीवन-आदर्शों का अनुशीलन और उनके मार्ग अनुसरण.....

स्व० श्री कृष्ण चंद जी

4.3.1926 - 6.1.2015

कार्यकाल : 1967 से 201[illegible]

अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति

पथप्रदर्शक के प्रणेता, स्व० श्री कृष्ण चंद प्रधानजी.........

[illegible]

[illegible] वर्ष 1966 में महाविद्यालय की स्थापना से लेकर उसकी वर्तमान ऊँचाइयों तक पहुँचाने में उनका अविस्मरणीय योगदान रहा। [illegible]

[illegible]

[illegible] व्यक्तित्व को महाविद्यालय परिवार की भावभीनी श्रद्धांजलि।

स्व० श्री विश्वेश्वर दयाल जी

कार्यकाल : महाविद्यालय स्थापना से वर्ष 1987 तक
मंत्री, प्रबन्ध समिति

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

महाविद्यालय परिवार

स्व० श्री नरेन्द्र कुमार सिं ल

17.8.1942 - 31.5.201

कार्यकाल : 1987 से मई 20 तक

सचिव, प्रबन्ध समिति

स्व० श्री रूप चन्द शर्मा

24.10.1924 - 14.3.2009

कार्यकाल : 1966 से प्रबंध समिति के सक्रिय संस्थापक सदस्य एवं 1987 से 2009 तक सब सृजित कोषाध्यक्ष पद पर कार्यरत

महाविद्यालय के शक्ति स्तंभ, स्व० पं० रूप चंद शर्मा जी

'[illegible]'

[illegible]

परस्पर प्रेमपूर्वक सत्य प्रिय और हित वचन बोलते हुए सम्मिलित रूप से अनुष्ठान का प्रयास करें।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

महाविद्यालय के [illegible] पं० रूपचन्द शर्मा जी को शत-शत प्रणाम।

संस्थापक प्राचार्या, स्व. श्रीमती दमयंती सिंघल

सतत निष्ठा
प्रेरणामय जीवन, कर्मठता,
गरिमामय व्यक्तित्व,
कोमल मनभावना,
काल के पन्नों पर आज भी
है मूर्त, सघन-साकार
आपका जीवन-मन्त्र
लेकर नित नवीन रूप रंग
मजबूत आधार।

जुलाई 1966 में श्रीमती दमयंती सिंघल ने सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या महाविद्यालय के प्रथम प्राचार्य के रूप में कार्य भार संभाला। उनके सम्मुख इस संस्थान को एक आदर्श शिक्षण संस्थान के रूप में स्थापित करने की कठिन चुनौती थी। उद्देश्य महान था और संसाधन अत्यन्त सीमित, अनेक विषम परिस्थितियों के बीच से राह निकालकर उनके कदम निरन्तर आगे ही बढ़ते गए।

अपने सुदृढ़ व्यक्तित्व की स्वामिनी श्रीमती दमयंती सिंघल बहुत अनुशासन प्रिय थीं। उनका एक दृष्टि निक्षेप ही किसी भी अव्यवस्था या ढिलाई को दूर करने के लिए काफी था। प्रशासन कठोर किन्तु वात्सल्य से भरी अपने अधीनस्थ प्रत्येक कर्मचारी, शिक्षिका वर्ग के दुख सुख, समस्याओं के प्रति अत्यंत सजग, सचेत भी थीं। अपने व्यक्तित्व के इसी मानवीय पक्ष के कारण वे छोटे से बड़े प्रत्येक व्यक्ति को साथ लेकर, महाविद्यालय को पर्याप्त ऊँचाइयों तक पहुँचा सकीं।

उनके व्यक्तित्व की महकती उनके आस-पास के प्रत्येक व्यक्ति को निमग्न करती थी। वास्तव में वे एक ऐसे सुदृढ़ वृक्ष की भाँति थीं जिसका आधार पाकर छोटी-छोटी लताएँ भी आकाश छूने लग जाती हैं। कोई भी कार्य उनके सम्मुख छोटा नहीं था। किसी भी आयोजन में हुए आवश्यकता पड़ने पर वे मेज, कुर्सी, दरी बिछवाने से लेकर शैक्षणिक दूर या कैंप की छोटी-छोटी समस्याओं आदि हर कार्य में सहयोग दे सकती थीं। उनकी सफलता और महानता में ही उनकी महानता के सूत्र छिपे थे।

अपनी मेहनत, कर्मनिष्ठा और दूरदृष्टि से उन्होंने दिन-रात की परवाह किए बिना कार्य लेकर इस संस्था को एक सुदृढ़ आधार प्रदान किया। ऐसे कर्मनिष्ठ व प्रेरणामय व्यक्तित्व को नमन।

विकास यात्रा (1966–2016)

स्थापना एवं संक्षिप्त इतिहास

आज से पचास वर्ष पूर्व, रुड़की नगर में कन्या शिक्षा हेतु समुचित सुविधाओं के अभाव को दृष्टिगत रखते हुए श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द गर्ल्स इन्टर कॉलेज की प्रबन्धसमिति द्वारा दिनांक 30.05.1965 को, बालिकाओं को उच्चस्तरीय स्नातक शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या महाविद्यालय की स्थापना का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया। तत्पश्चात दिनांक 13.06.1965 को आयोजित बैठक में प्रबन्धसमिति के पावन संकल्प को मूर्त रूप देने के लिए नगर निगम के तत्कालीन अध्यक्ष श्री ... जी द्वारा संस्था को स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए अपनी पारिवारिक फर्म 'कालूराम-कैलाश चन्द' द्वारा प्रचुर की राशि दान स्वरूप प्रदान की गई। माननीय कृष्ण चन्द प्रधान जी ने तथा अन्य सदस्यों ने अन्य आवश्यक कार्यों हेतु प्रारम्भिक सहयोग राशि का प्रबंध किया। दिनांक 01. .1966 को प्रस्तावित डिग्री कॉलेज के सुचारु संचालन के लिए संस्थापक सदस्यों द्वारा Bylaws बनाई गई तथा दिनांक 11.07.1966 को आहूत बैठक में भावी महाविद्यालय की प्रथम प्रबन्ध समिति द्वारा महाविद्यालय परिसर के निर्माण हेतु आवश्यक भूमि लीज पर प्राप्त करने का प्रस्ताव शासन को भेजा गया।

आगरा विश्वविद्यालय, आगरा (उ०प्र०) द्वारा महाविद्यालय को जुलाई 1966 में प्रारम्भ सत्र से स्वीकृत विषयों में कक्षाएं संचालित करने हेतु मान्यता प्राप्त हुई। इसके तत्पश्चात अविलम्ब जुलाई 1966 से नवोदित महाविद्यालय के प्रथम सत्र का शुभारम्भ हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान तथा चित्रकला एवं गृहविज्ञान विषयों के विधिवत शिक्षण से हो गया।

प्रारम्भिक सत्र में महाविद्यालय के पास अपनी भूमि तथा भवन न होने के बावजूद श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द गर्ल्स इन्टर कॉलेज की प्रबन्धसमिति के सहयोग से डिग्री कक्षाओं के सुचारु संचालन हेतु अस्थाई रूप से कक्षों की व्यवस्था की गई। इसी सन्दर्भ में डा० शीतल प्रसाद जी, तत्कालीन कुलपति, आगरा विश्वविद्यालय का सहयोग भी भुलाया नहीं जा सकता। स्व. शीतल प्रसाद जी ने श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या महाविद्यालय की स्थापना के प्रस्ताव को सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ अनुमोदित कर इसकी शीघ्रातिशीघ्र स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।

अपनी स्थापना से ही एक अग्रगामी सोच और सुविचारित कार्यप्रणाली लेकर चलने वाले इस संस्थान की गणना बालिका शिक्षा के क्षेत्र में नगर के अग्रणी संस्थानों में होती है। एक बार अस्तित्व में आने के बाद विकास और विस्तार की प्रक्रिया अबाध गति से चलती रही। पहले कक्षा-संचालन हेतु व्याख्यान कक्षों, पुस्तकालय व अन्य आवश्यक उपादानों की व्यवस्था हुई। छात्राओं का वर्तमान युग से उनके परिवेश से सम्यक परिचय हो सके और वे निरन्तर परिवर्तनशील विश्व-परिदृश्य के साथ कदम से कदम मिलाकर चल सकें इस हेतु 1996 से महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर विज्ञान विषयों का शिक्षण भी प्रारम्भ हुआ। विज्ञान कक्षाओं का प्रारंभ जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भौतिकी, गणित एवम् रसायन विज्ञान विषयों से हुआ। वर्ष 2002 से कम्प्यूटर साइंस (गणित संवर्ग) तथा 2012 से माइक्रोबायोलॉजी (जीव विज्ञान संवर्ग) विषयों

[illegible]

संस्थापक सदस्य

[illegible]

प्रारंभिक चुनौतियाँ, भवन एवं कार्य संस्कृति

[illegible]

साथ ही नव स्थापित महाविद्यालय में साहित्य, संस्कृति और स्वाध्याय के संस्कारों के साथ-साथ, प्राचीन भारतीय आदर्शों और नवीनतम ज्ञान पर आधारित एक सर्वथा विशिष्ट कार्य संस्कृति की आधारशिला रखी। [illegible]

[illegible] महाविद्यालय अपने शैक्षणिक व सांस्कृतिक वातावरण, उच्चस्तरीय अनुशासन तथा प्राचीन भारतीय मूल्यों के साथ नवीन वैज्ञानिक ज्ञान के साथ संतुलन स्थापित करती अपनी मूल्यपरक, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए क्षेत्र में एक अग्रणी स्थान बना चुका है।

[illegible]

गौरवशाली अतीत, [illegible] वर्तमान

[illegible]

अध्ययन नहीं आया। कोठ विश्वविद्यालय से संबद्धता की अवधि में और उत्तराखण्ड राज्य बनने के बाद हे॰ नन्दन बहुगुणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर से संबद्ध होने के उपरान्त भी हमारी होनहार छात्रायें [illegible] विश्वविद्यालय की श्रेष्ठता सूची में स्थान बनाती रही हैं।

महाविद्यालय में पठन-पाठन को गति प्रदान करने के लिए विविध विषयों की पुस्तकों से सुसज्जित एक [illegible] पुस्तकालय है। एक छोटे से कक्ष से प्रारंभ पुस्तकालय भवन का भी महाविद्यालय के विकास के साथ-साथ [illegible] विस्तार हुआ है। पुस्तकों के अतिरिक्त अनेकों दैनिक पत्र, विविध पत्रिकायें व कला, साहित्य, मानविकी विज्ञान [illegible] विषयों से संबंधित जर्नल छात्राओं को अध्ययन हेतु सुलभ है। लाइब्रेरी के ऊपरी तल में छात्राओं के प्रयोग हेतु [illegible] सुविधायुक्त कम्प्यूटर कक्ष का निर्माण किया गया है।

वर्तमान समय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए पिछले कई वर्षों से छात्राओं के लिए - इंग्लिश स्पीकिंग [illegible] कम्प्यूटर तथा सामान्य ज्ञान कक्षाओं का भी प्रारंभ किया गया है। प्रारंभिक वर्षों से ही यहाँ की विदुषी प्राध्यापिकाओं [illegible] छात्राओं को पठन-पाठन व स्वाध्याय की दिशा में प्रेरित करने के साथ-साथ परिसर में सुरुचिपूर्ण साहित्यिक, सांस्कृतिक वातावरण का भी सृजन किया। इस संदर्भ में कुछ प्रसंग उल्लेखनीय हैं। इनमें से प्रथम है महाविद्यालय रंगमंच [illegible] **प्रसिद्ध साहित्यकार** भगवतीचरण वर्मा **की कृति 'चित्रलेखा' का सफल मंचन।** इस नाटिका के [illegible] वेशभूषा-सज्जा आदि की तैयारी प्राध्यापिकाओं ने रुड़की यूनिवर्सिटी (अब I.I.T. रुड़की) की लाइब्रेरी में [illegible] अध्ययन की थी और इसके नाट्य लेखन व निर्देशन का भार सँभाला था राजनीति विज्ञान की प्राध्यापिका डॉ॰ [illegible] गोस्वामी जी ने। नाटक के सफल मंचन से प्राप्त लगभग 4000 रु॰ की राशि नवोदित महाविद्यालय के विकास [illegible] समर्पित की गई थी।

इसी उत्कृष्ट परम्परा का निर्वहन आगामी वर्षों में अनेक श्रेष्ठ मंचीय प्रस्तुतियों के माध्यम से हुआ। श्रीमती [illegible] अग्रवाल द्वारा निर्देशित नाटिका 'संक्रमणकाल', डॉ॰ कुसुम लता वर्मा द्वारा निर्देशित **स्वामी विवेकानंद का ऐतिहासिक शिकागो उद्बोधन, झाँसी की रानी, कृष्ण-अर्जुन संवाद, रानी हाड़ा आदि प्रस्तुतियों** में से प्रत्येक ने महाविद्यालय की यशवृद्धि की। इनमें से अनेक को C.B.R.I. म्यूनिसिपल कमेटी, रुड़की के सभागार में पुनः मंचन हेतु भी आमंत्रित [illegible] दर्शकों की भरपूर सराहना प्राप्त हुई।

सुश्री [illegible], प्राध्यापिका वर्ग के कुशल निर्देशन में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ-साथ वाद विवाद, निबंध [illegible] विचार-प्रस्तुतियां, पोस्टर प्रतियोगितायें सेमिनार, वर्कशाप आदि गतिविधियाँ सतत पर्यन्त आयोजित की जाती थीं। [illegible] कुसुमलता वर्मा, श्रीमती कौशल्या [illegible] आदि के मार्गदर्शन में छात्राओं ने अनेक अन्तर्महाविद्यालयी वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में पुरस्कार अर्जित किए। वर्तमान में भी छात्रायें इस सिलसिले को जारी रख संस्था के गौरव में वृद्धि कर रही हैं। गत तीन वर्षों से महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर भी शोध गतिविधियों के प्रारंभ ने पठन-पाठन की [illegible] परंपरा में एक नवीन आयाम जोड़ा है। महाविद्यालयों की गतिविधियों में कला विभाग द्वारा आयोजित रंगोली, [illegible] सज्जा, दीपक सज्जा हस्तशिल्प इत्यादि प्रतियोगितायें हैं। चित्रकला विभाग द्वारा प्रति वर्ष आयोजित होने वाली [illegible] प्रदर्शनी **अभिव्यक्ति** का एक विशिष्ट स्थान है। यहाँ की छात्रायें प्रतिवर्ष राष्ट्रीय, राज्य स्तरीय में प्रतियोगिताओं [illegible] प्रतियोगिता का अनेक पुरस्कार जीतती आ रही हैं। उपरोक्त बहुआयामी गतिविधियों के अतिरिक्त हमारी प्रतिभा[illegible] छात्राओं को कलाजगत में नवीन पहचान दिलवाने के उद्देश्य से वर्ष 2010 से वरिष्ठ प्राध्यापिका डा॰ स्वर्णलता [illegible]

के प्रयासों से प्रारंभ रंगीन कैटेलॉग का प्रकाशन आज भी समय समय पर किया जा रहा है। कैटेलॉग में विभागीय प्राध्यापिकाओं तथा छात्राओं की उत्कृष्ट कलाकृतियाँ प्रकाशित की जाती हैं। प्रतिवर्ष नगर में तथा निकटवर्ती स्थानों में होने वाले मेलों/आयोजनों में उनकी पेंटिंग तथा अन्य हस्तशिल्प वस्तुओं के स्टॉल लगाये जाते हैं। गत वर्षों में छात्राओं द्वारा निर्मित वस्तुओं व कलाकृतियों को दर्शकों की अच्छी प्रतिक्रिया प्राप्त हुई है।

विभिन्न अवसरों पर अनेक विशिष्ट अतिथियों ने महाविद्यालय प्रांगण में आकर इसके गौरव को बढ़ाया है। इस संदर्भ में वर्ष 2001 में उत्तराखण्ड राज्य के तत्कालीन मुख्यमंत्री माननीय श्री नित्यानंद स्वामी द्वारा महाविद्यालय के नवनिर्मित विज्ञान-भवन के उद्घाटन का अवसर उल्लेखनीय है।

कक्षाओं में प्राप्त ज्ञान के साथ-साथ देश दुनिया व्यावहारिक ज्ञान मिलकर ही शिक्षा को पूर्ण करता है। अतः शैक्षणिक भ्रमण प्रारम्भ से ही महाविद्यालय की कार्यसंस्कृति का हिस्सा रहे हैं। छात्रायें दूरस्थ स्थानों तक प्राध्यापिकाओं के साथ जाती रही हैं। **एक उल्लेखनीय प्रसंग सत्तर के दशक में पार्लियामेंट की कार्यवाही देखने के दौरान तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से छात्राओं की मुलाकात का है।** आज भी शैक्षणिक भ्रमणों का सिलसिला जारी है। इसी क्रम में छात्राओं की सृजनात्मक रुचियों को उपयुक्त मंच प्रदान करने के उद्देश्य से प्रारंभ वार्षिक पत्रिका 'अपराजिता' का भी उल्लेख आवश्यक है। अनेक व्यावहारिक अवरोधों के बावजूद 'अपराजिता' के शुभारंभ का संपूर्ण श्रेय इसकी प्रथम संपादिका डा॰ कुसुमलता वर्मा (रीडर हिन्दी विभाग, सेवानिवृत्त) के प्रयासों को जाता है। अपने वर्तमान स्वरूप में 'अपराजिता' महाविद्यालय परिवार की आकांक्षाओं एवं उपलब्धियों का स्वर्णिम दर्पण है। प्रकाशन के प्रथम वर्ष से आज तक की अल्पावधि में ही अनेक सामाजिक विषयों को केन्द्रीय विषय वस्तु के रूप में लेकर शिक्षा, नारी सशक्तीकरण पर्यावरण, विज्ञान, लोकतंत्र, राष्ट्रभाषा हिन्दी, सांस्कृतिक विरासत, एवं विश्वशांति आदि विशेषांकों का प्रकाशन हो चुका है। गत सत्र (2014-15) से एक नवीन शोधपत्रिका के प्रकाशन हेतु ISNN No. प्राप्त कर नवीन पीढ़ी ने उसके [illegible] को आगे बढ़ाया है।

महाविद्यालय में अनुशासन सदैव सर्वोच्च प्राथमिकता प्राप्त विषयों में रहा है। अनुशासन भी वैसा जो आरोपित न हो, अपने ही भीतर से आये अर्थात आत्म-अनुशासन। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए महाविद्यालय में प्रारंभिक वर्षों से ही प्रीफेक्ट प्रणाली अपनाई गई है। यह व्यवस्था बदलते समय के साथ आये परिवर्तनों को आत्मसात् कर, हर कसौटी पर खरे उतरते हुए आज भी अपने श्रेष्ठतम रूप में कार्य कर रही है। यह न सिर्फ परिसर में अध्ययन हेतु उपयुक्त वातावरण बनाये रखने में सफल हुई है बल्कि युवापीढ़ी में छुपी नैसर्गिक नेतृत्व क्षमता के विकास में भी सहायक सिद्ध हुई है।

महाविद्यालय में वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिताओं की परंपरा काफी पुरानी है। खेल-कूद छात्राओं को हार जीत को समभाव से स्वीकारने की सीख देकर भविष्य की चुनौतियों का सामना करने की मजबूती देते हैं। महाविद्यालय परिसर में सीमित स्थान क्रीड़ा स्थल की अनुमति नहीं देता पर निकटस्थित नेहरू स्टेडियम में प्रतिवर्ष अत्यंत उत्साह से वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता का आयोजन होता है। खेल-कूद में विशेष रुचि व योग्यता रखने वाली छात्राएं लगातार राज्य/राष्ट्रीय स्तर पर स्थान बनाती रही हैं। वोलीबॉल, बास्केटबॉल आदि खेलों में हमारी छात्राओं ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। **महाविद्यालय की छात्रा कु॰ पूनम मित्तल ने वर्ष 2001 से 2004 तक तीन अध्ययन सत्रों में अन्तर्महाविद्यालय एथलेटिक मीट तथा उत्तरांचल स्टेट ओलम्पिक मीट में विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता**

करते हुए कुल [illegible] स्वर्ण पदक, दो रजत व एक कांस्य पदक प्राप्त कर एक नया कीर्तिमान [illegible] [illegible] की तीनों [illegible] की [illegible] भी [illegible] [illegible] [illegible] इनडोर खेल - जैसे, शतरंज आदि सम्मिलित किये [illegible] [illegible] आयोजन किया जाता है।

[illegible] से योग्य प्रशिक्षक की देख-रेख में छात्राओं के [illegible] [illegible] है। यह प्रशिक्षण छात्राओं में आत्मविश्वास एवं [illegible] [illegible] होने वाली क्रीड़ा प्रतियोगिता का मुख्य आकर्षण [illegible] [illegible] है। इनमें भी छात्रायें राज्य/राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भाग [illegible] [illegible] रही है।

[illegible] सामाजिक सरोकारों से जोड़ने की परंपरा भी महाविद्यालय में इसकी [illegible] [illegible] है। 1971 के बंगलादेश युद्ध के समय प्राध्यापिकाओं के निर्देशन में [illegible] [illegible] किया और अपनी बनाई वस्तुओं के विक्रय से प्राप्त 5000/- रु० [illegible] [illegible] सिद्धि में भेजी छात्राओं को देश व समाज की समस्याओं के प्रति [illegible] [illegible] प्रयोग करने के उद्देश्य से महाविद्यालय में सत्र 2012-13 [illegible] [illegible] इकाई कार्यरत है। डा० स्वर्णलता मिश्रा के निर्देशन में [illegible] [illegible] शिविर में ग्राम [illegible] में स्वयंसेवी छात्राओं द्वारा अदम्य उत्साह, [illegible] [illegible] का परिचय देते हुए श्रमदान द्वारा 71 फीट लम्बी और 8 फीट चौड़ी [illegible] [illegible] करने का उदाहरण अपने तरह का अकेला ही है। बाद के वर्षों में भी [illegible] [illegible] 'साक्षरता', 'पर्यावरण उन्मूलन' [illegible] [illegible] सक्रिय योगदान देती रही है।

[illegible] गतिविधियाँ

[illegible] के उद्देश्य को सम्मुख रख महाविद्यालय में अनेक नवीन गतिविधियाँ [illegible] [illegible] आवश्यक है।

• [illegible] पत्रिका

[illegible] छात्राओं के [illegible] ज्ञान को बढ़ाने के उद्देश्य से 'दिशा' भित्ति पत्रिका [illegible] [illegible] भित्ति पत्रिका की समाप्ति पर उसमें प्रदर्शित सामग्री के आधार पर [illegible] [illegible] अपने नाम के अनुरूप ही यह गतिविधि निश्चय ही छात्राओं के [illegible] [illegible] भविष्य को स्पष्ट दिशा एवं सफलतायें देने में सहायक सिद्ध होगी।

• बहुभाषी अन्त्याक्षरी (Multilingual Antyakshri)

संस्कृत हिन्दी व अंग्रेजी भाषाओं में संचालित बहुभाषी अंत्याक्षरी एक अनोखा प्रयोग है। [illegible] [illegible] छात्राओं के [illegible] व [illegible] अभिरुचि के संवर्द्धन में भी सफल रहा है।

[illegible] क्लिनिक

"[illegible]" [illegible] छात्राओं को [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] महाविद्यालय परिवार के [illegible] और [illegible] संरक्षण [illegible] [illegible] है।

विस्तार - '[illegible]' [illegible] छात्राओं का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है विस्तार, [illegible] [illegible] कोशिश है विस्तार। पुस्तकों में समाया ज्ञान अनन्त है और [illegible] में निहित संभावनायें भी अनंत हैं तो अनंत को अनंत से मिलाने की कोशिश है विस्तार।

स्वावलंबन

[illegible] छात्रायें अपनी कला [illegible] के माध्यम से [illegible] आत्मनिर्भर बन सकें इस उद्देश्य को सम्मुख रख कर उन्हें [illegible] और [illegible] करने के लिए विस्तार द्वारा 'स्वावलंबन' [illegible] Online Painting Portal [illegible] महाविद्यालय Website से जोड़ने की योजना प्रस्तावित है।

हमारी पूर्व छात्राओं के [illegible] के बिना यह विवरण पूर्ण नहीं हो सकता। [illegible] [illegible] में शिक्षा प्राप्त छात्रायें [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अनेक पूर्व छात्रायें [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अपना योगदान दे रही हैं।

इसी वर्ष महाविद्यालय को नैक टीम द्वारा [illegible] में [illegible] के बाद [illegible] ग्रेडिंग भी प्राप्त हुई है। राष्ट्रीय [illegible] एवं मूल्यांकन परिषद की टीम द्वारा निरीक्षण के समय भी टीम सदस्यों द्वारा महाविद्यालय की अनेक गतिविधियों और [illegible] की प्रशंसा प्राप्त हुई।

स्रोत - महाविद्यालय कार्यालय द्वारा प्रस्तुत अभिलेखों तथा अपराजिता के पूर्व अंकों में प्रकाशित सामग्री के आधार पर।

श्रद्धयाल्लभते ज्ञानम्।
श्रद्धा से ज्ञान प्राप्त होता है।

आस्ते भग आसीनस्य ऊर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठतः।
शेते निपद्यमानस्य चराति चरतो भगः।
चरैवेति, चरैवेति।
ऐतरेय ब्राह्मण

बैठे हुए का सौभाग्य बैठा रहता है,
खड़े होने वाले का सौभाग्य खड़ा हो जाता है।
पड़े रहने वाले का सौभाग्य सोता रहता है।
……………इसलिए चलते रहो, चलते रहो।

इन मीठी स्मृतियों से
आज भीग आता है,
मानस जो स्वर्ण सरोवर में
खिल रहे हैं जितने ही कमल,
अनेक रंग-रूप आकार ले,
सभी पल्लवित पोषित आपसे ही
गुरुवर्य अपराजिता...
आज भी देते प्रेरणा, दिखाते दिशा,
आपके जीवन मूल्य, आपकी शिक्षा।

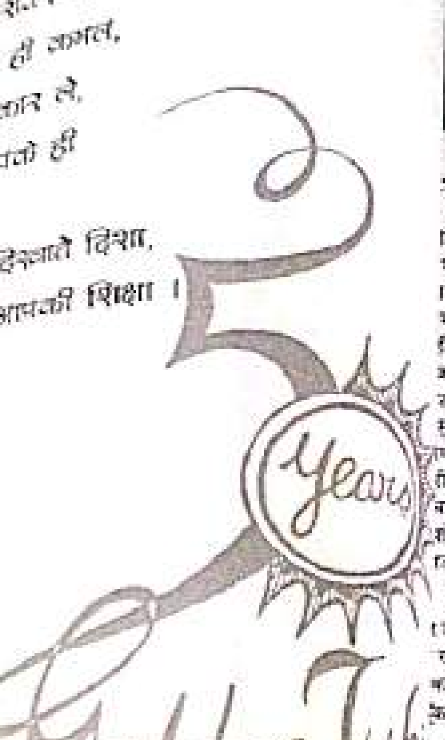

सृजन की यात्रा

-डॉ० मधुरिका सक्सेना
पूर्व प्राचार्या

**"उम्र में तलाशी ली तो जेबों से कुछ पुराने लम्हे बरामद हुए,
कुछ नम थे, कुछ टूटे, तो कुछ सही सलामत थे।"**

[illegible] 'अपराजिता' का [illegible] [illegible] 5 सितम्बर 1965 [illegible] नियुक्ति-पत्र [illegible] महाविद्यालय [illegible] एकमात्र कन्या महाविद्यालय, छोटा-सा परिसर, [illegible] चतुर्थ श्रेणी वर्ग। [illegible] मुश्किल होगा [illegible] डा० (श्रीमती) [illegible] महाविद्यालय के अनुशासन का दायित्व उन पर था। उनका परिवार [illegible]

[illegible] प्रधान प्रबन्ध समिति श्री कृष्ण चन्द जी, [illegible] स्व० श्री रूपचन्द शर्मा जी। [illegible]

नियुक्ति-पत्र संस्थापक सचिव स्व० श्री [illegible] जी के कर-कमलों से प्राप्त हुआ था [illegible] स्व० श्री नरेन्द्र कुमार [illegible] जी का [illegible] आधुनिक साज सज्जा-विहीन यह महाविद्यालय आज उत्तराखण्ड का न भी कहें तो हरिद्वार जिले का [illegible] महाविद्यालय है। [illegible] मानवीय श्री [illegible] जी का अथक [illegible] और मेहनत है। उनकी एक-एक ईंट उनकी कहानी है, कण-कण में उनकी आत्मा झलक रही है। इस

[illegible] इनका प्रकाश दिनोंदिन बढ़ता रहे, यही अभिलाषा [illegible]

इसी की शाखा पर [illegible]
कोई कितना भी [illegible]
अपनी जड़ों को [illegible]
मेरे लिए यह मंदिर है, [illegible]
संस्कार है, परिवार है
मेरी बहनों और बेटियों।
शिक्षा के मोती इतना [illegible]
इतना बिखराना कि
कोई उसे समेट न पाए।
दूर-सुदूर देशों में
हमारी बेटियाँ पहचानी जाएं,
शैक्षिक गंगा, अविरल [illegible]
इसकी पावन ज्ञान-धारा
कभी दूषित न हो, [illegible]
आस्था और विश्वास का [illegible]
नए कीर्तिमान स्थापित करे
यही शुभ कामना है।

सुधियों के आँगन से

डॉ० [illegible]
[illegible], हिन्दी विभाग
([illegible])

[illegible] "महकाने को यादें"। [illegible]

1969 का कॉलिज का वह प्रथम दिन मुझे आज भी याद है। [illegible]

[illegible] जीवन को नया अर्थ दे जाता है।

मुझे यह कहते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है कि महाविद्यालय में शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक [illegible] मैं स्वयं को भाग्यशाली समझती हूँ।

[illegible] 'चुनौती' का

[illegible]

[illegible]

इस अवसर पर मैं अपने उन सभी सहयोगियों का पुण्य-स्मरण करना चाहूँगी जो इस काल में हमसे बिछड़ गए। [illegible] जो आज भी हमारी स्मृति में जीवित हैं, [illegible]। मैं पत्रिका की संपादिका [illegible] की आभारी हूँ जिन्होंने मुझे अतीत की स्मृति गंगा में डुबकी लगाने का अवसर दिया। [illegible] मैं अपने विद्यालय जीवन को सम्पूर्णता से जिया। मैं अपने प्रिय महाविद्यालय [illegible] शुभकामना व्यक्त करती हूँ। [illegible] प्रकाश फैलाने का यह प्रयास [illegible]-

विद्या सागर उमड़ा ही करे, अँधेरा सब अपावन हो।
बुद्धि श्रेष्ठ हो, सद्विवेक हो, तन स्वस्थ और मन प्रसन्न हो।
नित जीवन बने, कर्म ही धर्म हो, श्रद्धा और समर्पण से अभिवृद्धि दिन रात हो।

यादों की पगडंडी पर

डॉ॰ कुसुम शर्मा
रीडर, राज॰ विज्ञान
(सेवा निवृत)

[illegible]

[illegible]

1967 में पहली बार स्टूडेंट यूनियन का गठन हुआ। [illegible] चुनाव द्वारा निर्वाचित हुए। [illegible] अध्यक्ष चुनी गई। [illegible] उपाध्यक्ष और दो अन्य अधिकारी चुने गए थे। इन लोगों ने [illegible] को संगठित रूप से कार्य करने के लिए तैयार किया। कॉलेज में अनुशासन बनाए रखने और [illegible] कार्यक्रमों को आयोजित करने की जिम्मेदारी भी इन्होंने अच्छी तरह संभाली। [illegible] हर काम के लिए [illegible]।

कॉलेज चलाने के लिए धन कहाँ से और कैसे आएगा यह सवाल लगातार बना हुआ था। उन दिनों महाविद्यालयों में सांस्कृतिक कार्यक्रम बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखते थे। [illegible] इकट्ठा करने के लिए एक नाटक के [illegible] का निर्णय किया। भगवतीचरण वर्मा का उपन्यास 'चित्रलेखा' [illegible] सांस्कृतिक और [illegible] पक्ष बहुत प्रभावशाली है। [illegible] यह पसन्द था। [illegible] चित्रलेखा का मंचन [illegible]। उपन्यास को नाटक का रूप देना पहली [illegible] थी। [illegible] यह कार्य पूरा किया।

... उस काल की कक्षा सज्जा, पात्रों की वेशभूषा, ... [illegible] ... बनवाए गए। लगभग दो महीने के कठिन परिश्रम ... [illegible] ... नाटक लोगों को बहुत पसंद आया और लगभग 3500-4000 ... [illegible] ... 1971 के बंगला देश युद्ध के समय राष्ट्रीय ... [illegible] ... गृहविज्ञान की अनेक सुन्दर वस्तुएं टीचर्स के निर्देशन में ... [illegible] ... भाग लेने के साथ चाय और बिस्कुट भी बिकते थे। ... [illegible] ... राष्ट्रीय रक्षानिधि कोष में हमने भेजे थे। ये सभी कार्य ... [illegible] ... में ही संभव और सफल हो पाए थे।

[illegible] ... 26 जनवरी तक सभी राष्ट्रीय पर्व, वार्षिक खेल प्रतियोगिताएं, ... [illegible] ... और वार्षिक उत्सव बड़ी धूमधाम और उत्साह से ... [illegible] ... भावाभिनय इतने पसंद किए गए थे कि ... [illegible] ... आयोजित किया गया था। कॉलेज के सामान्य क्रिया-कलापों ... [illegible] ... का महत्व भी हमारी बहिन जी अच्छी तरह समझती थीं। वह ... [illegible] ... थीं कि कॉलेज की चार दिवारी के भीतर शिक्षा का ... [illegible] ... के बिना वह अधूरा ही रहता है। पर्यटन व पिकनिक आदि ... [illegible] ... भाग भी लेती थी और सभी कामों में बराबर शामिल होती थी ... [illegible] ... या फिर गांव की महिलाओं और बच्चों से घर-घर जा कर ... [illegible]

[illegible] ... के लिए एक बार हम लोग दिल्ली, आगरा, मथुरा, वृंदावन गए। ... [illegible] ... की कार्यवाही वहाँ बैठ कर देखने का अवसर मिला और हम सब ... [illegible] ... राष्ट्रपति भवन, कुतुब मीनार, पुराना किला, लाल किला, राजघाट ... [illegible] ... पहुँचे और वहाँ के सभी ऐतिहासिक स्मारक देखें। ऐसा लग रहा है ... [illegible] ... सामने जीवंत हो उठा है। बहिन जी कॉलेज के अनुशासन के प्रति ... [illegible] ... कॉलेज का चक्कर लेती थीं, कभी-कभी पीछे से आकर कक्षाओं में बैठ भी जाती थीं ... [illegible] ... अपनी हिन्दी साहित्य की कक्षाएं लेना उन्होंने तब भी नहीं छोड़ा जब ... [illegible] ... को अपने पास बिठा लेती थीं और बाद में उस पाठ को विस्तार ... [illegible] ... की तरह मानती थीं। हम किसी भी समय अपनी समस्याएं लेकर उनके पास ... [illegible] ... और लगन के साथ हम सबको साथ लेकर उन्होंने इस महाविद्यालय को ... [illegible] ... प्रदान किया।

They were rainbows,
Harbingers of hope and progress,
Our founders, they passed the torch of learning
They were visionaries.

आज हमें बहुत खुशी और गर्व का अनुभव होता है कि इस विद्यालय ने स्नातकोत्तर स्तर प्राप्त कर लिया ... [illegible] ... और विभाग इसमें जुड़ रहे हैं। मेरी हार्दिक कामना है कि भविष्य में यह महाविद्यालय प्रदेश ... [illegible] ... महत्वपूर्ण शिक्षा केन्द्र के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करे। डॉ० अर्चना मिश्रा और उनके संपादक मंडल ... [illegible] ... स्वर्णजयन्ती अंक के सफल प्रकाशन के लिए विशेष बधाई और असीमित शुभकामनाएं।

सुधियों के झरोखे से

डॉ० [illegible] मिश्रा
रीडर, चित्रकला विभाग
(सेवा निवृत्त)

7 जुलाई 1970 का वह दिन जब मैं इस महाविद्यालय से जुड़ी, तब से लेकर आज तक विद्यालय के ... [illegible] ... एवं कलेवर परिवर्तित होते हुए देखे जिनकी स्मृतियाँ आज भी ... [illegible] ... हैं। लगता है ... [illegible] ... है। आरम्भ में मात्र ... [illegible] ... विषयों के साथ छोटा सा स्टाफ था और आज बी०ए०, बी०एस०सी०, कम्प्यूटर ... [illegible] ... एम०ए० की कक्षाएँ पूरे ज़ोर शोर से चल रही हैं। ... [illegible] ... छात्राओं ने बी०ए०, ... [illegible] ... एम०एस०सी० एवं एम०ए० में विश्वविद्यालय मेरिट लिस्ट में भी ऊँचे स्थान प्राप्त किये हैं। ... [illegible] ... श्रीमती दमयन्ती सिंघल जी, डॉ० मधुलता जी, डॉ० अंजु अग्रवाल जी एवं डॉ० शालिनी ... [illegible] ... जी ने अपने ... [illegible] ... दृष्टिकोण से विद्यालय एवं छात्राओं को गौरवान्वित किया।

शुरू के दिनों में बी०ए० दो वर्ष का था फिर तीन वर्षों का हो गया। ... [illegible] ... एवं संस्कृति, ... [illegible] ... सामान्य विषयों की तरह पढ़ाये जाते थे। प्रारम्भ से ही प्राचार्या श्रीमती दमयन्ती सिंघल सहित महाविद्यालय की ... [illegible] ... प्राध्यापिकायें डॉ० ... [illegible] ... (अर्थशास्त्र), डॉ० कुसुम गोस्वामी (राज० विज्ञान), श्रीमती कौशल्या ... [illegible] ... (मनोविज्ञान), डॉ० कुसुमलता वर्मा (हिन्दी विभाग), श्रीमती मंजु अग्रवाल (संस्कृत विभाग), डॉ० ... [illegible] ... (चित्रकला विभाग), श्रीमती सुशीला गुप्ता, श्रीमती मालती ... [illegible] ... (अंग्रेजी विभाग), ... [illegible] ... डॉ० ... [illegible] ... ग्रोवर का कार्य भार संभाला। ... [illegible] ... अध्यापन एवं छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिये कृतसंकल्प रहीं। ... [illegible] ... उत्साह एवं लगन ने महाविद्यालय को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया। ... [illegible] ... में छात्राओं का अध्ययन-मनन का उत्तम वातावरण मिला। स्व० श्रीमती ... [illegible] ... गुप्ता आज हमारे मध्य नहीं ... [illegible] ... किन्तु लाइब्रेरी के सुचारू संचालन में उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

महाविद्यालय एक परिवार सदृश था। इसका प्रारम्भ ... [illegible] ... कॉलेज के कुछ कमरों से किया गया था। प्रारंभिक ... [illegible] ... परिस्थितियों में इसका सुचारू संचालन श्रीमती सिंघल का ही ... [illegible] ... था, उनका एक पैर महाविद्यालय में तो दूसरा ... [illegible] ... प्रशासकीय कार्यों के लिये लखनऊ रहता था। उनके कार्यकाल में कई ... [illegible] ... स्थानों जैसे दिल्ली, आगरा, मथुरा, ... [illegible] ... की शैक्षणिक भ्रमणों का सफल आयोजन किया गया और कई स्थानों पर वह स्वयं भी साथ गईं। महाविद्यालय ... [illegible] ... की गतिविधियाँ चाहे वे शैक्षणिक टूर हो या स्पोर्ट्स टीम का प्रतियोगिता के लिये आना-जाना ... [illegible] ... की व्यवस्था, ... [illegible] ... का इंतजाम आदि कार्य वे स्वयं रुचि लेकर अत्यंत तत्परता से कर देती थीं।

उन दिनों एन०एस०एस० महाविद्यालय में पहली बार आरम्भ हुआ था और मैं पहली एन०एस०एस० अधिकारी थी। ... [illegible] ... में रा० से० यो० का प्रथम दस दिवसीय शिविर लगा। बारिश से ... [illegible] ... की सड़क का पता ही नहीं ... [illegible] ... था। हर ओर जल ही जल, छात्राओं ने कार्यक्रम अधिकारी के निर्देशन में अथक परिश्रम से सड़क के किनारे 6' ... [illegible] ... 6' लम्बाई चौड़ाई का 6' गहरा गड्ढा खोदा और पानी को उस गड्ढे की ओर मोड़ दिया कुछ ही घण्टों में गड्ढा पानी से भर गया और सड़क नज़र आने लगी। तब छात्राओं ने 71' लम्बी 10' चौड़ी सड़क का निर्माण श्रम दान द्वारा किया

[illegible] छात्राओं का मनोबल ही था कि वे बैलगाड़ी पर, [illegible] ग्रुप लीडर रेनु [illegible] ने बैलगाड़ी [illegible] और शिक्षक के संकेत मात्र पर वे [illegible]

[illegible] छात्राओं की संख्या में इजाफा हुआ, [illegible] भी नियुक्तियाँ हुई। 2007 का वर्ष मेरे लिये [illegible] राजनीति विज्ञान दो विषयों में स्नातकोत्तर [illegible] 2014 तक स्नातकोत्तर कक्षाएँ पढ़ाने का अवसर मिला।

[illegible] के साथ कक्षाओं का संचालन साधारण कार्य नहीं [illegible] शकुन सिंह तथा 2010 में भी हमारी छात्रा [illegible] महाविद्यालय का गौरव बढ़ाया। तब से लेकर आज तक [illegible] एम०ए० द्वितीय वर्ष में लघुशोध का [illegible] छात्राओं ने तीन चार वर्षों में ही पचास से अधिक [illegible] को भी अत्यंत सराहना प्राप्त हुई। समय-समय पर [illegible] में हमारी छात्राओं ने पुरस्कार प्राप्त किए। [illegible] में एक विशिष्ट स्थान था हो। लगातार तीन दिनों तक [illegible] और हरिद्वार, लक्सर, भगवानपुर, मंगलौर, [illegible] आते थे।

[illegible] किन्तु कोई भी कार्य रुका नहीं। प्रबंध [illegible] महाविद्यालय की प्रगति के चक्र को [illegible] श्री [illegible] जी, श्री रामकुमार जी, [illegible] श्री सुखपाल, चंदन, [illegible] महाविद्यालय की कोई गतिविधि निर्विघ्न संपन्न होने की कल्पना [illegible]

[illegible] से लेकर छात्राओं की निगरानी तक [illegible] अपने पास से सलाद, पापड़, अचार [illegible] अपने ही बच्चों है, [illegible] के लिए छात्राओं के साथ बाहर जाने पर चन्दन [illegible] गई चंदन भी [illegible] संतुलन न बना पाने से पानी में गिर गए। [illegible]

[illegible] यह धर्म संकट मेरे सामने है। स्थान सीमित होने से [illegible] कि महाविद्यालय नित नये कलेवर, योग्य शिक्षिकाओं [illegible] महाविद्यालय के स्वर्णजयंती वर्ष में यही मेरी शुभकामना।

यादों का सफर.....

जिम्मेदारियाँ मजबूर कर देती हैं अपना शहर छोड़ने को,
वरना कौन अपनी गली में जीना नहीं चाहता।

श्रीमती मंजू अग्रवाल
रीडर, संस्कृत विभाग
(सेवानिवृत्त)

मैंने कब सोचा था कि अपने छोटे से शहर की छोटी सी ममता भरी जिन्दगी से दूर मुझे यहाँ महानगर दिल्ली में [illegible] बनाना पड़ेगा। आज पीछे मुड़ कर देखने का मन होता है। महानगर की भागती जिन्दगी से कदम ताल [illegible] कठिन जान पड़ता है।

जन्म से लेकर शिक्षा प्राप्ति तक रुड़की ही मेरा निवास रहा है। सुखद संयोग कहिए या इस नगर से लगाव कि विवाह के बाद लगभग सैंतीस वर्षों का अध्यापन कार्य भी रुड़की के इसी महाविद्यालय में संस्कृत प्रवक्ता के रूप में सम्पन्न हुआ। इस लम्बे समय में असीम सुख के साथ मेरे [illegible] दुःख अनेक क्षणों का साक्षी भी रहा है यह महाविद्यालय।

साहित्यिक अभिरुचि के कारण भाषा और साहित्य के प्रति मेरा अनुराग प्रारम्भ से ही रहा है। इसी अनुराग के कारण संस्कृत साहित्य को मैंने अध्यापन हेतु चुना और सैंतीस वर्षों तक देवभाषा संस्कृत के गौरवग्रन्थों के साथ व्यतीत कर तृप्ति, आनन्द और परम सन्तोष के साथ अपने अध्यापक धर्म को सम्पूर्ण किया। शैक्षणिक आनन्द के साथ महाविद्यालय में चलने वाली विविध सांस्कृतिक गतिविधियों के संचालन का दायित्व भरपूर निभाया जिनकी मधुर स्मृतियाँ आज भी मुझे आह्लादित कर देती हैं। महाविद्यालय की प्राचार्या डा० श्रीमती [illegible] जी तथा [illegible] डा० मधुरिका जी का भरपूर आदर एवं प्यार तथा कर्मचारी वर्ग का सहयोग मेरे कार्यकाल की अविस्मरणीय स्मृतियाँ हैं जो मेरे शेष जीवन का पाथेय है। अपनी पुण्य कार्य स्थली श्री [illegible] कन्या [illegible] स्नातकोत्तर महाविद्यालय के इस स्वर्णिम वर्ष पर मैं सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। महाविद्यालय की प्रगति के लिये मंगलकामनाएं एवं शुभाशीष।

अब तो जीवन नौका तट से बहुत दूर निकल आई है। जीवन में बहुत कुछ परिवर्तित हो चुका है। अपने विषय में बस यही कह सकती हूँ-

मुझे तैरने दे या बहना सिखा दे
अपनी रजा में अब तू रहना सिखा दे
मुझे शिकवा ना हो कभी किसी से, हे ईश्वर!
मुझे सुख दुःख के पार जीना सिखा दे।

नई पीढ़ी को पुनः आशीर्वचनों के साथ

स्मृतियों के उपवन से

डा० [illegible]
रीडर, हिन्दी विभाग, [illegible]

[illegible] वर्षों तक कार्य किया इस साल अपने पचास वर्ष पूरे कर [illegible] कहाँ से शुरू करूँ? कलम है कि [illegible] [illegible] और छोर ही नहीं। मन कभी एलबम की [illegible] [illegible] हो उठती हैं।

[illegible] महाविद्यालय प्रांगण में प्रवेश किया और प्राचार्या [illegible] ने [illegible] उस कोठरीनुमा पुस्तकालय की [illegible] पुस्तकालय और कहाँ ये छोटा सा कमरा [illegible] उसी छोटे से महाविद्यालय में जहाँ एक ओर [illegible] जो प्यार व अपनापन पाया उसकी कोई सीमा नहीं [illegible] टीचिंग स्टाफ और फिर मैं जो नियुक्ति [illegible] [illegible] का एक अंग बन गई। 1974 से 2011 तक का सफर [illegible] महाविद्यालय का छोटा सा परिसर जहाँ छात्राएँ कभी-कभी [illegible] बी०ए० के अतिरिक्त बी०एस०सी०, एम०ए० [illegible] न केवल अपने महाविद्यालय वरन् विश्वविद्यालय जिला [illegible] करने में भी सफल रहीं।

[illegible] 2008 में मुझे महाविद्यालय की प्राचार्या बनने का सुअवसर मिला। इसका श्रेय मैं अपनी [illegible] डा० कुसुम लता वर्मा को देना चाहूँगी क्योंकि [illegible] इस कठिन दायित्व का निर्वहन कर सकी। [illegible] संबंधी पर हावी नहीं होने दिया। [illegible] मार्ग दर्शन भी करती रहीं। [illegible] स्नेहिल स्वभाव, जंगल में भी मंगल कर देने वाली [illegible] अपनी वरिष्ठ सहयोगी श्रीमति कौशल्या [illegible] जी की जिंदादिली [illegible] कभी भुलाया नहीं जा सकता।

महाविद्यालय में अपने कार्यकाल के दौरान सभी का [illegible] सहयोग प्राप्त होता रहा [illegible] महाविद्यालय को निरंतर विकास के स्वर्णिम पथ पर बढ़ते देखना एक [illegible] अनुभव है [illegible] मेरी ओर से अनेकों शुभकामनाएँ।

[illegible] के खजाने नहीं आते
फिर जीवन में [illegible] पुराने नहीं आते
[illegible] के [illegible] से मिलो
फिर लौट के [illegible] के जमाने नहीं आते।

माई बैस्ट पेन्टिंग - माई कालेज

डा० [illegible]
प्राचार्या
राजकीय महाविद्यालय, [illegible]

वर्ष 1976 [illegible] कालेज से [illegible] बी०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण करने का सौभाग्य [illegible] अध्ययन के दौरान कुछ ऐसे अनुभवों से [illegible] जीवन से [illegible] खट्टी-मिठी यादें आज आप सबके साथ बाँटना चाहूँगी-

स्नातक में मेरे विषय अंग्रेजी, संस्कृत व चित्रकला रहे। [illegible] [illegible] बाद में [illegible] [illegible] [illegible] संस्कृत की [illegible] मधुर [illegible]

चित्रकला की [illegible] पुस्तकालय में। पुस्तकालय प्रभारी [illegible] पुस्तकालय एक [illegible] [illegible] पुस्तकालय में जाकर [illegible] [illegible] चित्रकला की कक्षाएँ [illegible] में पुस्तकालय व चित्रकला [illegible] [illegible] विषय मेरे प्रिय थे। साहित्य [illegible] चित्रकला... [illegible] फिर [illegible] में प्रयोग करने में मेरी विशेष [illegible]

[illegible] शैली की [illegible] [illegible] [illegible] मेरी सर्वोत्तम अत्यधिक [illegible] [illegible] [illegible] (डा०स्वर्ण लता मिश्रा) दिखाने के लिए [illegible] [illegible] बोलीं कि तुम ही खुद [illegible] तो सबको कैसे प्रसन्न [illegible]

इसके बाद की कल्पना आप सभी कर सकते हैं। [illegible] आँसू [illegible] [illegible] [illegible] अनुभव मुझे हमेशा याद आता है। [illegible] चित्र [illegible] [illegible] कैनवास पर [illegible] अपने कालेज [illegible]

[illegible]

कामनें

[illegible]

स्मृतियाँ

[illegible]

यादों के झरोखे से

[illegible]

[illegible] Notice Board [illegible]

[illegible]

यादें.................

पुस्तकालय प्रभारी [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

महाविद्यालय : मेरी कर्मस्थली

[illegible] कुमार, कार्यालय अधीक्षक / [illegible]

23 मई 1974 को [illegible]

[illegible]

[illegible]

मेरा महाविद्यालय: मेरी प्रेरणा

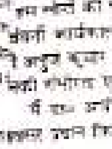

[illegible], पूर्व छात्रा
असि० प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग
महिला महावि०, [illegible]

[illegible]

मेरी प्रेरणा का स्रोत-मेरा विद्यालय

बी.एल.बी.ए.बी. [illegible]

[illegible] श्री धनानन्द धर्म प्रकाश चंद कन्या (पी.जी.) महाविद्यालय, रुड़की, में [illegible] वर्ष 2005 में प्राप्त हुआ। इस संस्थान में दो वर्ष स्नातकोत्तर तथा दो वर्ष [illegible] महाविद्यालय की अनुशासित कार्य शैली ने मुझे बहुत प्रभावित किया। मुझे अपनी शिक्षिका [illegible] 26 जनवरी की परेड देखने का अवसर मिला। यह [illegible] मार्गदर्शन के कारण ही प्राप्त हो सका। मैं इस महाविद्यालय [illegible] महाविद्यालय तथा विदुषी शिक्षिकाओं की आजीवन आभारी रहूँगी।

[illegible] वर्ष 2015 में [illegible] में स्नातकोत्तर परीक्षा विशिष्ट उपलब्धियों के साथ पूर्ण करने का [illegible] स्नातक स्तर पर डा० अलका आर्य तथा स्नातकोत्तर पर डा० [illegible] डा० शकुन सिंह जी को देना चाहूँगी। ये सभी प्राध्यापिकाएँ आजीवन [illegible] महाविद्यालय [illegible] के अथक प्रयास से यहाँ की छात्राएँ निरन्तर और [illegible] करें यही मेरी कामना है।

मेरा प्रिय कॉलेज

-श्रीमती मीना [illegible]

मैं 1975-1979 में हिन्दी, कला व राजनीति विज्ञान विषयों के साथ एस०डी० कॉलेज से [illegible] में लड़कियों की उच्च शिक्षा के लिये यही एक मात्र शिक्षण संस्थान था। [illegible] कॉलेज एवं अन्य कालेजों की छात्राओं का एक साथ पढ़ना एक अद्भुत अनुभव [illegible] में जिन्दा है। हमारी शिक्षिकाएँ गोस्वामी दीदी, स्वर्ण लता दीदी, अंजु दीदी, [illegible] डा० कुसुम [illegible] दीदी हम लड़कियों के लिये आदर्श हुआ करती थीं। उस समय इतनी ज्यादा सुविधाएँ [illegible] उपलब्ध हैं, लेकिन वातावरण इतना अच्छा था, कि कभी कोई कमी महसूस नहीं हुई। [illegible] का उत्तर पाने में हमें टीचर्स का भरपूर सहयोग मिलता। [illegible] अनेक स्थानों से कार्य करने के ऑफर भी मिले पर पारिवारिक दायित्वों में व्यस्त रहे, [illegible] परन्तु इस शिक्षा की बदौलत मैं अपनी संतानों को शिक्षित कर उनका [illegible] मेरा एक पुत्र आज एक प्रतिष्ठित M.N.C. में इंजीनियर तथा दूसरा [illegible] है। आज 35 वर्षों के बाद मात्र उत्सुकतावश इस कालेज में दाखिल होने पर आश्चर्य [illegible] वही पुरानी [illegible]... बस चेहरे नये हैं, लेकिन बाकी कुछ नहीं बदला। [illegible] अब पहले की अपेक्षा ज्यादा ऊँची तथा विस्तृत हो गई है। समय के साथ कदम मिलाकर [illegible] कॉलेज को देखकर बहुत खुशी हुई है। मेरी बहुत-बहुत शुभकामनायें। ईश्वर करे ये कॉलेज [illegible]।

क्या भूला जा सकता है उन्हें......

- अर्चना मिश्रा

इतने वर्ष बीत चुके हैं पर आज भी महाविद्यालय में चलते-फिरते, कार्य करते कुछ चेहरे [illegible] आँखों में कौंध जाते हैं। उनकी स्नेहिल कर्तव्यनिष्ठा के कितने ही प्रसंग हैं जिन्हें भुलाना संभव नहीं है। [illegible] भरी सुबह में अक्सर सामने रखे चाय के प्याले से उठती भाप के बीच कुछ [illegible] आकार लेने लगती है और [illegible] जी के सम्मुख स्पष्ट हो उठता है एक चेहरा 'चंदन' का। महाविद्यालय में मेरी नई-नई नियुक्ति हुई थी। [illegible] ओस वाली सर्दियों में तमाम पारिवारिक दायित्वों से निवृत्त हो भागते-दौड़ते कॉलेज पहुँच [illegible] ठीक समय में आकर बैठती 'चंदन' [illegible] आकर एक प्याला चाय सम्मुख रख देता। [illegible] के बाद अमृत सी लगती वह चाय। एकाध बार मैंने कहा भी "चंदन भैया", मैंने चाय के लिए कहा भी नहीं फिर [illegible] कैसे? सरल सा जवाब - इतनी सर्दी में सुबह-2 एक प्याला चाय से [illegible] हो जायें [illegible] चंदन को चाय का प्याला बनाने की जितनी तत्परता थी उसके पैसे लेने की [illegible] नहीं। [illegible], [illegible] के प्रति उसका यही सेवा भाव था। बिना कहे ही मन की बात समझकर कभी [illegible], कभी [illegible] में पानी लाकर देते रहना।

दूसरा अत्यंत आत्मीय चेहरा 'मुस्कान' का है। रा०से०यो० शिविरों पर छात्राओं को दूर पर लेकर अनेकों बार [illegible] गये। गंतव्य पर पहुँच कर बाकी लोग तो अभी थकान ही उतार रहे होते और दूसरी ओर [illegible] व्यवस्थित हो जाता और कुछ ही देर में गर्मा-गर्म भोजन भी सामने आ जाता। अत्यंत प्रेम से [illegible] मुस्कान को [illegible] स्वाद के साथ ही मितव्ययिता भी भरपूर। [illegible] तक का उपयोग होना था उनकी पाकशाला में।

इसी क्रम में एक और नाम है सोमप्रकाश का। सोमप्रकाश को तो हम सबसे दूर हुए अधिक समय नहीं हुआ है। [illegible] के साथ काम करने की भी ढेरों यादें हैं। कई क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में छात्राओं को लेकर जब-जब गई, [illegible] सोमप्रकाश ही मेरे साथ गये। साथ-साथ कार्य करने पर मितभाषी सोमप्रकाश के एक अत्यंत [illegible] रूप से भी [illegible] हुआ। हर कार्य बड़ी जिम्मेदारी से करने वाले और एक अभिभावक की तरह छात्राओं का पूरा ध्यान रखने वाले [illegible] के चेहरे पर एक निश्चिंत मुस्कान हमेशा झलकती रहती। कभी उन्हें चिंतित या तनाव में नहीं देखा। यहाँ तक [illegible] अपने जीवनकाल के अंतिम वर्षों में असाध्य बीमारी से जूझते हुए भी यह मुस्कान उनके व्यक्तित्व का हिस्सा रही।

आज ये आत्मीय स्वजन हमारे बीच नहीं हैं पर इन परम स्नेही, निःस्वार्थ सेवी, कर्तव्य निष्ठ बंधुओं को भुला पाना [illegible] संभव है?

जरा प्यार से सहेजना इन बुझे हुए दीयों को
घनी अमावस में इन्होंने रोशनी दी थी।
किसी को जलाकर खुश होना तो दस्तूर नहीं है
इन्होंने तो खुद को जला कर हमें खुशी दी थी।

विकास यात्रा के साथी...
दीर्घ आयुष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं सर्व सुख की शुभकामनाओं सहित

डॉ० [illegible] त्रिपाठी
[illegible]
[illegible]

डॉ० [illegible] गुप्ता
[illegible]
[illegible]

डॉ० [illegible]
रीडर, [illegible]
[illegible]

यह मीठी सी सुवास
आपकी यादों की है,
एक लक्ष्य, एक स्वप्न ले
साथ-साथ की बातों की है।
ज्यादा न सही कुछ कदम
हम साथ चलें
आभार भी और
अनंत शुभकामनायें,
आपके जीवन को
मनचाही दिशा मिले

श्री [illegible] कुमार गुप्ता
कार्यालय अधीक्षक
1-8-1972 से [illegible]

श्री राकेश कुमार शर्मा
कार्यालय अधीक्षक
23-5-1979 से 18-11-[illegible]

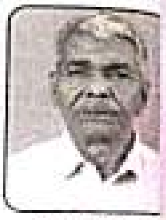

श्री बाबूराम गिरि
[illegible]
10.9.1979 - 9.6.20[illegible]

स्मृति शेष.......

स्व० श्री विनोद कुमार सिंघल
सदस्य कार्यकारिणी
मार्च 1977 - 11.6.2016

स्व० श्री विनोद कुमार सिंघल जी प्रबंध समिति कार्यकारिणी सदस्य के रूप में लगभग [illegible] उनका एक महाविद्यालय के उत्थान हेतु योगदान [illegible]। आपके जाने से हुई क्षति अपूरणीय है..... महाविद्यालय परिवार की भावभीनी श्रद्धांजलि।

काल के समक्ष भी हार नहीं मानी
अंतिम सांस तक रहे कर्मरत
एक संकल्प, एक उद्देश्य को आगे बढ़ाते।
यह वर्तमान.....
यह सुदृढ़ आधार,
हमारा गौरव, हमारी उपलब्धियाँ
दूर नहीं कर सकतीं आपकी कमी
आप सभी थे हृदय के बेहद करीब
.......अविस्मरणीय !

स्व० डॉ० [illegible] गुप्ता
27.8.1966 - 30.6.1990

स्व० श्रीमती कौशल्या [illegible]
27.8.1966 - 30.6.2003

स्व० श्रीमती [illegible] गुप्ता
17.9.1973 - 22.9.1995

स्नेही व्यक्तित्व, कर्मीनि...
साक्षी हैं रवि-चंद, आभा...
अतुलनीय,
अनुकरणी...
अविस्म...
स...

स्मृति शेष......

स्व० श्री ब्रजभूषण शर्मा
कार्यालय अधीक्षक
[illegible]

स्व० श्रीमती उर्मिला गुप्ता
पुस्तकालय लिपिक
21.5.1979 – 14.2.2008

स्व० श्री [illegible]
[illegible]
[illegible] – 1.7.1997

स्व० श्री [illegible] लाल
परिचर
1.10.1968 – 31.10.1999

स्व० श्री [illegible]
[illegible]
10.5.1984 – ...

स्व० श्रीमती [illegible] देवी
[illegible]
[illegible]

स्व० श्री वितेन्द्र कुमार सिंघल
परिचर
1-12-1974 से 12-2-1994

स्व० श्री [illegible]
परिचर
2-2-1987 से ...

संस्थापक प्राचार्या : कुछ स्मृतियाँ

सांस्कृतिक आयोजन विविध झलकियाँ

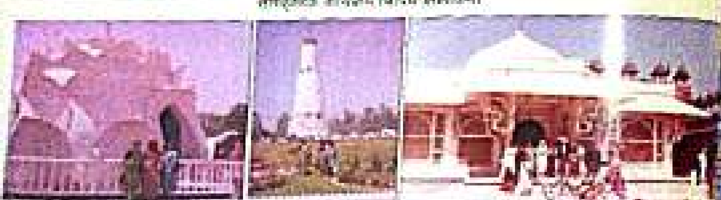

ऐतिहासिक भवन

अतीत की स्मृतियाँ : महाविद्यालय में विशिष्ट

शैक्षिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ

शैक्षिक एवं सांस्कृतिक प्रतियोगितायें

वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता

Golden
Jubilee
2016

महाविद्यालय में नैक टीम

महाविद्यालय में नैक टीम

प्रथम पंक्ति (बाएं से दाएं) – [illegible]

द्वितीय पंक्ति (बाएं से दाएं) – [illegible]

अनुशासन समिति

प्रथम पंक्ति (बाएं से दाएं) – [illegible]

द्वितीय पंक्ति (बाएं से दाएं) – [illegible]

तृतीय पंक्ति (बाएं से दाएं) – [illegible]

[illegible]

महाविद्यालय की गौरवपूर्ण उपलब्धियाँ

विश्वविद्यालय मेरिटलिस्ट में स्थान प्राप्त करने वाली छात्राएं

क्र. सं.	नाम	कक्षा	वर्ष	अंक प्रतिशत	विश्वविद्यालय मेरिट लिस्ट में स्थान
1	कु० मीनाक्षी त्यागी	एम०ए० राजनीतिविज्ञान	2014	73.07	चतुर्थ
2	कु० परवीन	एम०ए० राजनीतिविज्ञान	2013	73.67	द्वितीय
3	कु० मीनाक्षी	एम०ए० चित्रकला	2013	86.00	द्वितीय
4	कु० प्रिया	एम०ए० चित्रकला	2013	84.71	तृतीय
5	कु० शिवानी	एम०ए० चित्रकला	2013	85.13	चतुर्थ
6	कु० प्रिया प्रधान	एम०ए० चित्रकला	2012	86.80	द्वितीय
7	कु० अन्जुम आरा	एम०ए० चित्रकला	2012	79.20	चतुर्थ
8	कु० ललिता देवी	एम०ए० चित्रकला	2012	79.10	पंचम
9	कु० रूबी राणा	बी०एससी०	2012	77.72	नवम
10	कु० निशा रानी	एम०ए० राजनीतिविज्ञान	2011	68.76	पंचम
11	कु० प्रीति रानी	एम०ए० चित्रकला	2011	77.60	द्वितीय
12	कु० शिवानी सैनी	एम०ए० चित्रकला	2010	83.60	प्रथम (स्वर्ण पदक)
13	कु० मोनाक्षी सिन्धु	एम०ए० चित्रकला	2010	80.10	द्वितीय
14	कु० सपना	एम०ए० चित्रकला	2010	77.30	चतुर्थ
15	कु० सुशील	बी०एससी०	2010	76.67	तृतीय
16	कु० प्रीति शर्मा	बी०एससी०	2009	79.78	प्रथम (स्वर्ण पदक)
17	कु० मीनू त्यागी	एम०ए० चित्रकला	2009	79.10	द्वितीय
18	कु० शिखा जैन	एम०ए० चित्रकला	2009	77.50	पंचम
19	कु० शकुन सिंह	एम०ए० चित्रकला	2008	83.63	प्रथम (स्वर्ण पदक)
20	कु० नीतू	एम०ए० चित्रकला	2008	81.63	तृतीय
21	कु० मोनिका पवार	बी०एससी०	2007	79.89	द्वितीय
22	कु० मीनाक्षी	बी०एससी०	2007	78.22	चतुर्थ
23	कु० पूजा शर्मा	बी०एससी०	2007	77.94	पंचम
24	कु० सरिता गोस्वामी	बी०ए०	2007	71.48	सप्तम
25	कु० नेहा सिंघल	बी०एससी०	2007	76.83	अष्टम
26	कु० स्वाति अग्रवाल	बी०एससी०	2007	76.44	नवम
27	कु० नीतू	बी०ए०	2006	72.44	चतुर्थ
28	कु० पूजा गोयल	बी०ए०	2006	71.44	अष्टम
29	कु० रुचि गोयल	बी०एससी०	2005	79.22	चतुर्थ
30	कु० अनुराधा अग्रवाल	बी०एससी०	2005	79.50	पंचम

महाविद्यालय की प्रगति आख्या (2015-2016)

श्री [illegible] कन्या महाविद्यालय [illegible] छात्राओं के शैक्षणिक [illegible] हेतु [illegible] शिक्षा [illegible] है। [illegible] एवं व्यावसायिक [illegible] के विकास में योगदान [illegible] महाविद्यालय [illegible] है। [illegible] शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। विश्वविद्यालय [illegible] राष्ट्रीय [illegible] विकास के लिए [illegible] है।

[illegible] संकाय में 1966 से स्नातक [illegible] हिन्दी, [illegible] राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र व अर्थशास्त्र तथा [illegible] राजनीति विज्ञान विषय हैं। विज्ञान संकाय [illegible] वनस्पति विज्ञान तथा 2003 से [illegible] में स्नातक शिक्षा की व्यवस्था है।

[illegible] की भाँति गत सत्र 2014–2015 में भी महाविद्यालय का [illegible]

बी०ए० प्रथम वर्ष	–	96.12 %	एम०ए० चित्रकला प्रथम वर्ष	–	[illegible]
बी०ए० द्वितीय वर्ष	–	99.18 %	एम०ए० चित्रकला द्वितीय वर्ष	–	[illegible]
बी०ए० तृतीय वर्ष	–	90.90 %	*[illegible]		
(14 प्रथम श्रेणी)			एम०ए० [illegible] प्रथम वर्ष	–	[illegible]
बी०एससी० प्रथम वर्ष	–	89.94 %	एम०ए० [illegible] द्वितीय वर्ष	–	[illegible]
बी०एससी० द्वितीय वर्ष	–	99.31 %	*[illegible]		
बी०एससी० तृतीय वर्ष	–	97.81 %			
(36 प्रथम श्रेणी)					

कला संकाय :

विषय परिषद

छात्राओं के शैक्षणिक, बौद्धिक एवं [illegible] हेतु सत्र 2015–16 का [illegible] 22.09.2015 को विषय परिषद के गठन के साथ हुआ जिसमें महाविद्यालय के हिन्दी, [illegible] अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग के [illegible] सदस्य चुने गये। प्राध्यापिकाओं के निर्देशन में [illegible] विषय परिषद ने [illegible] गतिविधियों जैसे दिशा भित्ति पत्रिका, निबंध, साहित्यिक [illegible] इत्यादि का [illegible] कार्यक्रम तैयार किया।

- [illegible] की भाँति सभी विभागों के द्वारा [illegible] छात्राओं के [illegible] से 'दिशा' भित्तिपत्रिका का पुनः संचालन किया गया जिसमें [illegible]

[illegible] व्यक्तित्व, सामान्य ज्ञान, संस्कृति, पर्यावरण एवम् स्वास्थ्य, [illegible] रोजगार सम्बन्धी सूचना के प्रति छात्राओं का [illegible] स्थान [illegible] विभागीय भित्ति पत्रिका के अन्त में प्रदर्शित सामग्री के आधार पर एक [illegible] आयोजित की गई।

- विषय परिषद में राजनीति विज्ञान के अन्तर्गत डॉ० कामना जैन ने [illegible] के दिनांक 09.11.2015 को सामान्य ज्ञान पर आधारित **प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता** [illegible] जिसमें प्रमुख विषय थे – उत्तराखण्ड सामाजिक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय [illegible] इस प्रतियोगिता में विजेता टीम की [illegible] रश्मि एवं [illegible] विजयी रहीं।
- [illegible] द्वारा आयोजित **प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता** में [illegible] [illegible] एवं प्रवीन विजयी रहीं। [illegible] ग्रुप (बी.ए. द्वितीय वर्ष) [illegible] मनीषा राठौर विजयी रहीं।
- हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत विभाग विषय परिषदों के संयोजन से [illegible] **अन्त्याक्षरी** का आयोजन किया गया।

विभागीय गतिविधियाँ

- विभिन्न विभागों द्वारा विविध गतिविधियाँ यथा **विचार प्रस्तुति, सेमिनार** [illegible] **समूह परिचर्चा, प्रश्नोत्तरी डिक्शनरी प्रैक्टिस** इत्यादि सम्पन्न हुई [illegible] विकास में अभिवृद्धि हुई।
- विभिन्न विभागों द्वारा निबन्ध प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। जिनके विषय [illegible] **भारत में प्राचीन भारतीय मूल्यों की प्रासंगिकता** (हिन्दी विभाग), **Essence** [illegible] (अंग्रेजी विभाग), **परोपकाराय सतां विभूतयः** (संस्कृत विभाग), **भारतीय** [illegible] **का भविष्य** (अर्थशास्त्र विभाग), **भारतीय संस्कृति में पर्यावरण चेतना** [illegible] **राजनीति में नैतिक मूल्य** (राजनीति विज्ञान विभाग), **भारतीय कला** [illegible] विभाग)।

दिनांक 24.08.2015 को चित्रकला परिषद का गठन किया गया जिसके [illegible] आयोजित हुई

- दिनांक 30.09.2015 को '**स्वच्छ भारत सुन्दर भारत** विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता।
- दिनांक 07.11.2015 को दीपावली के अवसर पर, **रंगोली कट–आउट** प्रतियोगिता।
- दिनांक 07.11.2015 को **'Best Out of Waste'** प्रतियोगिता।

वार्षिक चित्र एवं हस्तकला प्रदर्शनी 'अभिव्यक्ति':– सत्र के अंत में दिनांक [illegible] 2016 तक बी०ए० तथा एम०ए० की छात्राओं द्वारा बनाई गई कलाकृतियों की प्रदर्शनी [illegible] शुभारम्भ माननीय मुख्य अतिथि श्री सी०पी० यादव, अधिशासी अभियंता सिंचाई विभाग [illegible]

[illegible] चित्रकार एवं [illegible] राजकीय महाविद्यालय [illegible] द्वारा किया गया। छात्राओं की [illegible] से परिपूर्ण इस प्रदर्शनी में [illegible] [illegible] पेंटिंग, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इत्यादि विभिन्न [illegible] एवं [illegible] का प्रदर्शन किया गया। [illegible] द्वारा प्रदर्शनी का [illegible] की [illegible] में अवलोकन करते हुए छात्राओं के [illegible] (बी०ए०) तथा [illegible] (एम०ए०) [illegible] के आधार पर [illegible] पुरस्कृत किया गया। [illegible] विजेता के रूप में पुरस्कृत [illegible] व अन्य सदस्यों की सतत उपस्थिति एवं सराहना ने [illegible] छात्राओं का [illegible] बढ़ाया।

Faculty of Science

- An Orientation Meeting for the students of B.Sc. Ist year was conducted to make them aware about the teaching plan, co-curricular activities, rules and regulations of the college.
- An essay writing competetion was organised by Zoology & Microbiology Department on the following topics.
  (a) Advancement in Science in last fifty years for B.Sc. Ist Year and IInd Year on 6th Nov. 2015
  (b) Indian Achievement in space for B.Sc. IIIrd Year on Ist Dec. 2015.
  (c) Application of Microbiology on Dec. 23, 2015.
- Seminars were conducted on syllabus related topics by Chemistry, Maths, Physics, Botany and Computer.
- Project writing on different topics was organised by Botany, Chemistry, Microbiology and Zoology Department.
- An Educational trip was organised by Microbiology Department for B.Sc. IInd Year to Sewage Treatment Plant, Kankhal, Haridwar on 29.09.2015.
- Botanical garden was maintained by the Botany Department for the effective teaching learning process.
- Students of Biology stream visited IIT Roorkee for ecology related studies.

महाविद्यालय स्तरीय प्रतियोगिताएं

छात्रा संघ चुनाव (2015–16)

दिनांक 22.08.2015 को निर्धारित प्रक्रियानुसार, निर्वाचन अधिकारी डॉ० [illegible] शर्मा, डॉ० कामना जैन, [illegible] प्रसाद, श्रीमति शैली [illegible] व समस्त प्राध्यापक वृन्द के सहयोग से छात्रासंघ चुनाव प्रक्रिया सम्पन्न हुई। सर्वसम्मति से कु. [illegible] बी.ए. तृतीय वर्ष अध्यक्ष, कु. [illegible] सचिव, कु. [illegible] बी.एससी.

तृतीय वर्ष उपाध्यक्ष कु० अपर्णा परवीन महासचिव, कु० प्रियंका रमन कोषाध्यक्ष एवं ... कार्यकारिणी सदस्यों में कु० किरन, कु० नाजिया, कु० सोनम, कु० दिपिका शर्मा, कु० शिवानी ... रहीं। दिनांक 22.09.2015 को शपथ ग्रहण समारोह में महाविद्यालय प्रबन्धसमिति के अध्यक्ष ... गुप्ता जी की अध्यक्षता में प्राचार्या डा० शालिनी पंत द्वारा सभी पदाधिकारियों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई।

वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए आयोजित होने वाली इन प्रतियोगिताओं में छात्राएँ बड़े उत्साह से भाग लेती हैं। ... प्रतियोगिताओं की झलकियां निम्नवत हैं

- दिनांक 24.11.2015 को आयोजित इन्डोर गेम्स: कैरम एवं शतरंज प्रतियोगिता सम्पन्न ...
- दिनांक 09.10.2015 तथा 10.10.2015 को एम.जी.पी. महाविद्यालय देहरादून में ... विश्वविद्यालय की अन्तर्महाविद्यालयी बास्केटबाल प्रतियोगिता में बी.ए. तृतीय वर्ष से कु० ... गुलनाज, कु० अंजली, कु० सोनिया बी.ए./बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष, कु० रीना, कु० ... चौधरी (कैप्टन), एवं बी.एससी. प्रथम वर्ष से कु० मुदिता वर्मा, कु० भारती ... इनके अलावा से कु० इशप्रीत और चौधरी द्वितीय वर्ष का चयन ऑल इण्डिया ... जोन महिला बास्केटबाल के लिए हुआ।
- दिनांक 06.10.2015 से 05.01.2016 तक त्रैमासिक ताइक्वान्डो प्रशिक्षण, प्रशिक्षक ... के निर्देशन में सम्पन्न हुआ जिसमें महाविद्यालय की 113 छात्राओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- दिनांक 07.11.2015 से 08.11.2015 तक नजीबाबाद जिला बिजनौर में आयोजित ... ताइक्वान्डो/कूनफाई लाईक्वान्डो चैम्पियनशिप 2015 में महाविद्यालय की टीम छात्राओं ने ... कु० शिवानी एवं कु० सोनिया बी.ए. तृतीय वर्ष ने रजत पदक तथा कु० मीनाक्षी ने कांस्य पदक प्राप्त किया।
- दिनांक 01.02.2016 से 02.02.2016 तक वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता, संयोजक डा० ... डा० अनुपमा गर्ग, सहसंयोजक डा० किरन बाला, डा० उमा रानी के निर्देशन में सम्पन्न हुई। शुभारम्भ स्थानीय नेहरू स्टेडियम में प्राचार्या डा० शालिनी पंत के करकमलों द्वारा किया गया। ... अवसर में 100, 200, 400 मीटर दौड़, रिले रेस, स्लो साइकिलिंग, शॉट पुट, रस्साकशी ... प्रतियोगिताएं सम्पन्न हुईं। दिनांक 02.02.2016 को सम्पन्न समापन समारोह के अवसर पर ... गुप्ता जी सदस्य, महाविद्यालय कार्यकारिणी समिति के द्वारा छात्राओं को पुरस्कार प्रदान किये। महाविद्यालय की चैम्पियन ट्रॉफी लगातार चौथी बार कु० रूबी गुज्जर (एम.ए. प्रथम वर्ष) ... रहीं।

क्रीड़ा प्रतियोगिता: विजयी छात्राएं

1. 100 मी. रेस	कु. रूबी गुज्जर	एम०ए० प्रथम वर्ष	प्रथम
	कु. सोनिया	बी०ए० द्वितीय वर्ष	द्वितीय
	कु. रूबी रानी	बी०ए० तृतीय वर्ष	तृतीय
2. 200 मी. रेस	कु. रूबी गुज्जर	एम.ए. प्रथम वर्ष	प्रथम
	कु. सोनिया	बी०ए० द्वितीय वर्ष	द्वितीय
	कु. शालिनी यादव	बी०ए० तृतीय वर्ष	तृतीय
3. 400 मी. रेस	कु. रूबी गुज्जर	एम०ए० प्रथम वर्ष	प्रथम
	कु. सोनिया	बी०ए० द्वितीय वर्ष	द्वितीय
	कु. इशप्रीत कौर	बी०एस०सी० द्वितीय वर्ष	तृतीय
	कु. सोनिया	बी०ए० तृतीय वर्ष	तृतीय
4. स्लो साइकिल रेस	कु. शालू	बी०ए० द्वितीय वर्ष	प्रथम
	कु. प्रियंका चौहान	बी०एस०सी० तृतीय वर्ष	द्वितीय
	कु. गुलशाना	बी०ए० द्वितीय वर्ष	तृतीय
5. शॉटपुट	कु. रूबी गुज्जर	एम०ए० प्रथम वर्ष	प्रथम
	कु. खुशनुमा	एम०ए० प्रथम वर्ष	द्वितीय
	कु. रूबी फातिमा	बी०एस०सी० प्रथम वर्ष	तृतीय
6. रिले रेस	कु. सोनिया	बी०ए० द्वितीय वर्ष	विजेता
	कु. इशप्रीत कौर	बी०एससी० द्वितीय वर्ष	"
	कु. मीनाक्षी	बी०ए० द्वितीय वर्ष	"
	कु. गुलअफ्शा	बी०ए० द्वितीय वर्ष	"

7. रस्साकशी प्रतियोगिता में एम.ए. प्रथम वर्ष एवं बी.ए. तृतीय वर्ष की सम्मिलित टीम विजेता रही–

कु. अंजलि	कु. मोनिका	कु. प्रतिमा कौर	कु. सपना
कु. शाहनुमा	कु. निवेदिता	कु. खुशनुमा	कु. प्रियंका
कु. दिव्या गर्ग	कु. सरिता देवी	कु. शीतल	कु. आरती
कु. सोनिका	कु. जगमोहिनी	कु. चन्दा	

8. कबड्डी प्रतियोगिता में एम.ए. प्रथम वर्ष एवं बी.ए. तृतीय वर्ष की सम्मिलित टीम विजेता रही–

कु. शिवानी	कु. प्रीति निम्हाल	कु. शाहनाज अली	कु. रूबी
कु. खुशनुमा	कु. गुलअफ्शा	कु. रूखसी	कु. इन्दु
कु. प्रियंका रमन	कु. पूजा यादव	कु. सोनिया	कु. रूबी सैनी
कु. तरन्नुम मलिक	कु. शालिनी यादव	कु. नगमा	

9. खो–खो प्रतियोगिता में बी.ए. एवं बी.एससी. प्रथम वर्ष की छात्राओं [illegible]

कु. मीनाक्षी [illegible]	कु. मुदिता	कु. शाहिस्ता	कु. [illegible]
कु. दिव्या गुप्ता	कु. निशा	कु. [illegible]	कु. [illegible]
कु. सृष्टि सैनी	कु. [illegible]	कु. पूजा	कु. [illegible]
कु. प्रतिक्षा	कु. अनुराधा	कु. करिश्मा	

10. इंडोर गेम्स : कैरम	कु. [illegible] अहूजा	बी०ए० प्रथम वर्ष
	कु. आकृति अग्रवाल	बी०ए० तृतीय वर्ष
11. शतरंज–	कु. आकृति अग्रवाल	बी०ए० तृतीय वर्ष
	कु. दिव्या गुप्ता	बी०एससी० प्रथम वर्ष

सांस्कृतिक गतिविधियाँ

महाविद्यालय की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष में सांस्कृतिक समिति के सौजन्य से [illegible] शैक्षिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ दो चरणों में सम्पन्न हुई। दिनांक 16.11.2015 को [illegible] चरण की मुख्य गतिविधियों का विवरण निम्नवत है:–

साहित्यिक अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता :– संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य के सूत्र [illegible] अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता डा० भारती शर्मा, डा० प्रतिमा शुक्ला तथा डा० सीमा राय के [illegible] आयोजित हुई। इसमें कालिदास और शेक्सपीयर दो टीमों की 30 छात्राओं ने प्रतिभागिता [illegible] प्रखर बुद्धि तथा विषय विशेष पर गहन अध्ययन का परिचय दिया।

सामूहिक नृत्य प्रस्तुति :– देश भक्ति और अनेकता में एकता पैदा करने वाली सामूहिक [illegible] लगभग 50 छात्राओं ने अपनी नृत्य प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कालबेलिया, लावणी, गढ़वाली, [illegible] जैसे लोक नृत्यों की मनमोहक प्रस्तुति के दिशा निर्देशन में डा० उमा रानी, श्रीमती [illegible] राठा और डा० सीमा राय का मुख्य योगदान रहा।

नाट्य प्रस्तुति :– जार्ज बर्नार्ड शॉ के आर्म्स एंड द मैन पर आधारित अंग्रेजी नाटक [illegible] शर्मा तथा गंगा स्वच्छता अभियान विषय पर लघुनाटिका की प्रस्तुति सुश्री अंजलि प्रसाद [illegible] में हुई।

संस्कृत समूह गान :– डा० प्रतिमा शुक्ला के निर्देशन में छात्राओं ने संस्कृत भाषा में एक [illegible] प्रस्तुत किया।

इसी श्रृंखला के दूसरे चरण में दिनांक 30.01.2016 को कुछ अन्य रोचक प्रतियोगिताओं [illegible] हुआ इसमें शास्त्रीय संगीत पर आधारित एकल गायन प्रस्तुति, विभिन्न सम–सामयिक विषयों [illegible] विचार प्रस्तुति हेतु आशु भाषण प्रतियोगिता तथा पाक कला में अपनी कला प्रतिभा और [illegible] नवीन आयाम देने हेतु सलाद सज्जा प्रतियोगिता आयोजित की गई। इन समस्त प्रतियोगिताओं [illegible] बी०एससी० तथा एम०ए० की छात्राओं ने उत्साह पूर्वक प्रतिभागिता की। कार्यक्रम के संयोजन [illegible]

[illegible] भारती शर्मा, डा० प्रतिमा शुक्ला, सुश्री अंजलि प्रसाद, डा० सीमा राय [illegible] का योगदान रहा। इन विभिन्न प्रतियोगिताओं में [illegible] डा० [illegible], डा० [illegible] शर्मा तथा डा० [illegible] सिंह ने निर्णायक की भूमिका का निर्वाह किया।

1. सलाद सज्जा प्रतियोगिता	कु० [illegible]	एम०ए० चतुर्थ सेमेस्टर	
	कु० [illegible]	एम०ए० चतुर्थ सेमेस्टर	प्रथम
	कु० [illegible]	एम०ए० द्वितीय सेमेस्टर	द्वितीय
	कु० [illegible]	एम०ए० चतुर्थ सेमेस्टर	द्वितीय
	कु० [illegible] परवीन	बी०ए० तृतीय वर्ष	तृतीय
	कु० [illegible]	एम०ए० द्वितीय सेमेस्टर	तृतीय
2. आशु भाषण प्रतियोगिता	कु० मुदिता [illegible]	बी०एससी० प्रथम वर्ष	प्रथम
	कु० [illegible]	बी०ए० तृतीय वर्ष	द्वितीय
	कु० शाहिस्ता	बी०ए० तृतीय वर्ष	तृतीय
3. एकल गायन प्रतियोगिता	कु० शिवानी	बी०एससी० तृतीय वर्ष	प्रथम
	कु० [illegible]	बी०ए० प्रथम वर्ष	द्वितीय
	कु० [illegible]	बी०ए० तृतीय वर्ष	तृतीय

विशेष पुरस्कार

1. सर्वश्रेष्ठ छात्रा		
कला संकाय	कु० [illegible] पाण्डे	बी०ए० तृतीय वर्ष
विज्ञान संकाय [illegible]	कु० [illegible]	बी०एससी० तृतीय वर्ष
[illegible] विज्ञान वर्ग	कु० [illegible]	बी०एससी० तृतीय वर्ष
2. ऑल राउण्डर	कु० [illegible]	बी०ए० तृतीय वर्ष
3. सर्वश्रेष्ठ कलाकार		
स्नातक	कु. रितु अग्रवाल	बी०ए० तृतीय वर्ष
स्नातकोत्तर	कु. अर्चना	एम०ए० चतुर्थ सेमेस्टर वर्ष(चित्रकला)

4. सर्वाधिक उपस्थिति

बी०ए०	कु. [illegible] धीमान, कु. रितु रानी, कु. [illegible], कु. [illegible], कु. [illegible], कु. [illegible], कु. [illegible]
बी०एससी०	कु. [illegible] शेखर, कु. वैशाली कौशिक, कु. प्रियंका राणा, कु. मुदिता [illegible], कु. [illegible], कु. [illegible] धीमान
एम०ए० चित्रकला	कु. [illegible]
एम०ए० राजनीति	कु. आरती

जागरूकता करने के लिए कला, निबंध, कविता लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजित किया गया। कु० रूपाली, कु० अजलि, कु० शिवानी बिष्ट, कु० किरन, कु० तरन्नुम ने क्रम से प्रथम ... प्रतिभाग कर आयोजन किया।

3- दिनांक 26.02.2016 को कु० खुशबू द्वारा तीन विशेष स्वयंसेविकाओं द्वारा ... किया गया द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया। इनके अतिरिक्त 30 छात्राओं की ... छात्राएं ग्रुप 1 व शोभिता जालान बी०ए० द्वितीय वर्ष ग्रुप 2 सभी प्रजापति ... के आगामी सत्र (2016-17) में पर्यावरण जागरूकता कार्यों को संचालित करेंगे।

वाद विवाद प्रतियोगिता

दिनांक 16.10.2015 को समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान के संयुक्त तत्वावधान में **महिलाएं: सामाजिक मूल्यों का ह्रास** विषय पर महाविद्यालय स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई।

सेमिनार/कार्यशाला/अतिथि व्याख्यान/पाठ्येत्तर कोर्सेज/शैक्षिक भ्रमण

- दिनांक 01.04.2015 को कैरियर गाइडेन्स सेल के तत्वावधान में भारतीय प्रतिभूति ... (SEBI) द्वारा अधिकृत श्री नरेन्द्र शर्मा (श्रीराम कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, ...) द्वारा ... के लिए वित्तीय योजना विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।
- बी०ए० की छात्राओं के कम्प्यूटर ज्ञान संवर्द्धन हेतु एडआन कोर्स आयोजित किया गया ... अंशु भाटिया एवं श्री प्रदीप कुमार द्वारा छात्राओं को कम्प्यूटर प्रशिक्षण दिया गया।
- जनवरी 2016 से जून 2016 तक प्राचार्या डा० शालिनी पंत एवं डा० प्रतिभा कुमार ... **संस्कृत-प्रवेशः** की कक्षा संस्कृत भारती उत्तराखण्ड द्वारा संचालित की गई।
- बी०ए० तृतीय वर्ष की तीन छात्राओं को डा० किरन बाला के निर्देशन में लघु शोध ... सम्पादन कराया गया।
- आर्ट एंड क्राफ्ट्स कार्यशाला- कला एवं शिल्प के क्षेत्र में निहित रोजगार की सम्भावनाओं ... में रखते हुए चित्रकला विभाग द्वारा आई०आई०टी०, रुड़की स्थित अनुभूति ... ... छात्रों को दिनांक 05.11.2015 को **आर्ट एंड क्राफ्ट्स वर्कशाप** के अन्तर्गत ... एक्रलिक पेंटिंग, मिटि निर्माण तथा वेस्ट मैटेरियल द्वारा उपयोगी वस्तुएं बनाने का प्रशिक्षण ... हुए एक दिवसीय कार्यशाला के आयोजन में डा० अलका आर्य, डा० अर्चना चौहान, ... प्रीति और शिवानी का विशेष योगदान रहा।
- दिनांक 28.11.2015 को डा० अलका आर्य के दिशा निर्देशन में **आर्ट द स्पोर्ट टैकर्स** ... बी०ए० प्रथम द्वितीय तथा तृतीय की 60 छात्राओं को हरिद्वार तथा ऋषिकेश ले जाया गया ... छात्राओं ने भी ... स्केचिंग करने के साथ-साथ गीता भवन, परमार्थ निकेतन ... मन्दिर तथा पतंजलि योगपीठ का भी भ्रमण किया।
- राजनीति विज्ञान, जन्तु विज्ञान एवं वनस्पति विज्ञान विभाग द्वारा 43 छात्राओं को शैक्षिक ... जयपुर (दिनांक 08.12.2015 से 11.12.2015) ले जाया गया जहाँ उन्होंने आमेर का किला, ...

... महल, जंतर-मंतर, संग्रहालय आदि का अवलोकन कर अत्यन्त जानकारी प्राप्त की।

दिनांक 10.10.2015 को डा० भारती शर्मा के निर्देशन में बी०ए० प्रथम सेमेस्टर के छात्राओं हेतु 'Stand ... What is the Moral of John Milton' विषय पर ... सेमिनार का आयोजन किया गया।

... द्वारा दिनांक 04.11.2015 को एक अतिथि व्याख्यान Society, Civilisation Crisis and ... Education विषय पर प्रोफेसर श्रवण कुमार शर्मा, मानविकी विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार द्वारा दिया गया। उन्होंने भारत की दार्शनिकता, पाश्चात्य संस्कृति में विद्यमान ... और आनन्द पर प्रकाश डाला।

दिनांक ... 10.2015 एवं 16.11.2015 को Alumni Association की दो बैठक आयोजित की गई।

दिनांक 12.10.2015 को ... फाउन्डेशन की ओर से श्री दीपक ... द्वारा कम्प्यूटर पर आधारित ...

दिनांक 03.11.2015 को ... कैरियर सेल के निर्देशन में किया गया जिसमें कम्प्यूटर बेसिक, इन्टरनेट ... इत्यादि की जानकारी दी।

अन्य विशिष्ट उपलब्धियाँ

दिनांक 5-6 दिसम्बर 2015 को निर्धन निकेतन, हरिद्वार में संस्कृत भारती, उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रान्तीय संस्कृत सम्मेलन में महाविद्यालय की 38 छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

महाविद्यालय की प्राध्यापिका कु० प्रीति (हिन्दी विभाग), कु० शिवानी (चित्रकला विभाग) एवं पूर्व छात्रा कु० प्रीति (राजनीति विज्ञान) एवं पूर्व छात्राएं ने यू०जी०सी० नेट परीक्षा 2015 उत्तीर्ण की।

दिनांक 10.02.2016 को देव संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित ... का युवाओं पर ... विषय पर अन्तर्महाविद्यालयी भाषण व निबन्ध प्रतियोगिता में क्रमशः कु० ... बी०ए० द्वितीय वर्ष ने तृतीय स्थान व कु० मुस्कान वर्मा बी०एससी० द्वितीय वर्ष ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

... आई०आई०टी०, रुड़की द्वारा आयोजित मेले में दिनांक 04.11.2015 को चित्रकला विभाग की बी०ए० तथा एम०ए० की छात्राओं ने विभिन्न हस्तशिल्प, ... और ... की ... का एक स्टॉल लगाया जिसमें दर्शकों ने विशेष रुचि दिखाते हुए छात्राओं की कलाकृतियों का ... किया। छात्राओं को स्वरोजगार एवं आत्मनिर्भर बनाने हेतु यह एक महत्वपूर्ण कदम था।

दिनांक 31.10.2015 को राजनीति विज्ञान एवं समाजशास्त्र विभाग के संयुक्त तत्वावधान में पाश्चात्य संस्कृति - भारतीय जनजीवन पर सकारात्मक अथवा नकारात्मक प्रभाव विषय पर अन्तर्महाविद्यालय वाद विवाद प्रतियोगिता रुड़की शहर के सभी महाविद्यालयों की छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

दिनांक 08 मार्च 2016 महिला दिवस पर एम०के०पी० (पी०जी०) कालेज, देहरादून में आयोजित राज्य स्तरीय पोस्टर प्रतियोगिता में एम०ए० द्वितीय सेमेस्टर की कु० दीपमाला ने 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' विषय पर बनाये गये पोस्टर में प्रथम स्थान अर्जित किया।

कु० ... और ... (बी०एससी० द्वितीय वर्ष) ने ... सीनियर ... की टीम में चयनित होकर 6 जनवरी 2016 को मैसूर कर्नाटक में सीनियर नेशनल टूर्नामेंट में प्रदेश की ओर से प्रतिभाग किया।

कु० मुस्कान वर्मा (बी०एससी० प्रथम वर्ष) ने सी०एस०आई०आर० रुड़की में ... दिवस के उपलक्ष्य

में दिनांक 28.02.2016 को आयोजित अन्तर्महाविद्यालयी वाद-विवाद प्रतियोगिता में [illegible]
किया।

- श्रीमती [illegible], प्रवक्ता, रसायन विभाग (महाविद्यालय पूर्व छात्रा [illegible]) [illegible] Fate of Endocrine Disrupting Chemicals (EDC) and Persona[illegible] ucts (PC Ps) in waste Water Treatment Plants WWTPs गढ़वाल विश्वविद्यालय [illegible] 30.5.2016 को उपाधि पूर्ण हुआ।

अन्य गतिविधियाँ

- **कैरियर गाइडेन्स एवं प्लेसमेन्ट सेल :** [illegible] कु० अंजली प्रसाद, श्रीमति शैली सिंघल द्वारा [illegible] के [illegible] आयोजित की गई जिसमें सत्रपर्यन्त संचालित होने वाली [illegible] प्लेसमेंट सेल की बैठक आयोजित की गई तथा छात्राओं के लिए Mentor's प्राध्यापिकाओं की सूची गठित [illegible] रूपरेखा बनायी गई तथा छात्राओं हेतु समय-समय पर कक्षाएं आयोजित की गई। [illegible] गई। [illegible] हेतु समय-समय पर कक्षाएं आयोजित की गई।
- **SVEEP :** निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार Systematic Voters' Education And Electoral Participation सम्बन्धी कार्यों हेतु नियुक्त दो नोडल अधिकारी डा० अनुपमा गर्ग [illegible] के निर्देशन में सत्रपर्यन्त कार्य किया। प्राचार्या डा० शालिनी पंत द्वारा मतदाता दिवस [illegible] को छात्राओं, शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर वर्ग को शपथ दिलाई गई। महाविद्यालय [illegible] में कुछ [illegible] एवं कुछ शिक्षकों की नियुक्ति की गई इन छात्राओं ने निर्वाचन [illegible] के सुधार हेतु [illegible] निर्वाचक नामावली शुद्धिकरण एवं प्रमाणीकरण कार्यक्रम के [illegible] वार्ड संख्या में प्रस्तावित तिथियों पर जाकर निर्दिष्ट कार्यों में सहयोग किया।
- **IQAC :** वर्ष 2015-16 के लिए गठित आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन समिति (IQAC) [illegible] डा० अलका आर्या, डा० कामना जैन एवं डा० किरन [illegible] [illegible] कार्य किया। समिति द्वारा शैक्षणिक उन्नयन हेतु विभिन्न विषयों में सेमिनार एवं कार्यशाला [illegible] की गई। इसके अतिरिक्त CBCS पाठ्यक्रम के अनुसार पठन-पाठन हेतु अतिरिक्त LCD [illegible] संस्तुति की। साथ ही [illegible] कोर्स हेतु अतिरिक्त कक्षा की अपेक्षा व्यक्त की गई। [illegible] [illegible] जैसी गतिविधियों की निरन्तरता बनाये रखने हेतु सुझाव भी दिये गये।
- **NAAC:** श्री डी० एस० पोन्नुविराजा असिस्टेन्ट एडवाइजर (नैक बंगलौर) द्वारा गठित [illegible] प्रोफेसर [illegible] (कुलपति, बंगलौर विश्वविद्यालय) की अध्यक्षता में महाविद्यालय [illegible] 16-18 नवम्बर 2015 को किया व तदुपरान्त B ग्रेड, 2.53 सी०जी०पी०ए० के साथ [illegible] डा० अशोक [illegible] (प्राचार्य, जयहिन्द कॉलेज, मुंबई) व प्रोफेसर विनीता सिंह ([illegible] वि. वाराणसी) टीम के सदस्य थे। यह पांच वर्षों के लिए मान्य होगा।
- **A.G. AUDIT :** महालेखाकार उत्तराखण्ड के द्वारा गठित टीम ने वर्ष 2009 से 2015 तक के [illegible] सम्बन्धी कार्यों का सफलतापूर्वक निरीक्षण किया व महाविद्यालय के लेखा सम्बन्धी कार्य [illegible] पर सही पाया। एक सप्ताह की अवधि (19-08-2015 से 26-08-2015) तक चले इस [illegible] को कार्यालय अधीक्षक श्री राकेश शर्मा की देख-रेख में संपादित किया गया।

प्राध्यापिका वर्ग की उपलब्धियाँ

Dr. Shalini Pant (Principal)

- Supervised one Ph.D. (Chemistry) from HNB Garhwal University. (Viva held on 30th May 2016)-Mrs Gita Saini
- Published three research papers in International Journals with impact factors.
- Author of Book " Ise ek naam de dena' - Collection of poems; Released on 4th September 2015.
- Worked as Review expert for e-content development project (NME-ICT) of MHRD with EMRC - Roorkee.
- Subject Expert Chemistry for Massive Open Online Courses (MOOC) in Swayam Portal for MHRD, New Delhi.
- Awarded as 'Nation Builder' by Rotary International on 5th Sept. 2015.

डा० अर्चना सिंघ –

- Published Research Paper **'Empowerment of Women by Gender Just Laws'** in Edited Book Women Empowerment and sustainable Development Ed. by Sukanta Sarkar, Dr. Suman kalyan chau. Avon Pub. New Delhi (2015) ISBN. 978-93-8183-967-6
- Published Research Paper महात्मा गांधी और हमारा समय in Aparajita Research Journal Issue 1, 2014-2015, ISSN 2452-4310

डा० अनुपमा गर्ग –

- Published Research Paper **Empowerment of Women by Gender Just Laws**, co-authorship in Edited Book Women Empowerment and sustainable Development Ed. by Sukanta Sarkar, Dr. Suman kalyan chau. Avon Pub. New Delhi (2015) ISBN. 978-93-8183-967-6
- Published Research Paper **Education for National Integration and World Peace** in Aparajita Research Journal Issue 1, July 2014-2015 ISSN 2452-4310

डा० अलका आर्या –

- Participated in **'ART MOTION'** painting exhibition of lord Shiva at [illegible] celebration, Moradabad on 24 August 2015.
- Participated in National Art Exhibition organized by Drawing & Painting Department, Digamber Jain College Baraut (U.P.) 15-17 September 2015.
- Published Research Paper कला की शक्ति: विश्वशान्ति और समृद्धि in Aparajita Research Journal 2014-15 ISSN No. 2454-4310

डा० प्रतिमा शुक्ला –

- Published Research Book वेद वीथिका Naman Publication, Daryaganj, Delhi
- Published Research Paper 'संस्कृत वाङ्मये महिलानां स्थितिः' in Shodh Pragya, Quarterly Journal Uttrakhand Sanskrit Univ.

- Published Research Paper वेद में मन की अवधारणा in 'पवमानी' Quarterly ... Prabhat Ashram Bholajhal Tikri Meerut.
- Published Research Paper ... का विवेचन, वैदिक दृष्टि in Aparajita No. 1 2014-15 ISSN No. 2454-4310
- Presented 6 Papers in national Conference and 1 Paper in International conference
- Resource Person in nation seminar Topic - वेद में राष्ट्र की अवधारणा Bareilly College, Bareilly U.P.
- Chaired two sessions in National seminar and Moderated two sessions in international conference

डॉ॰ ... शर्मा –

- Published Research Paper **Vedic Symbolism** in वैदिक वाग्ज्योति 'An international refereed research journal on vedic studies & Gurukul Kangri, Haridwar Joint edition Jan-June 2015 and July-Dec 2015 ISSN 2277-4351 P No. 319-323.
- Published Research Paper **Imprints of Vedic Education on East and West.** in Aparajita No 1 2014-15 ISSN No. 2454-4310
- ... द्वारा शिक्षण सम्मान 2015 से सम्मानित किया गया।
- Presented 3 Paper in National and in International Conferences.

डॉ॰ ... जैन –

- Published Research Paper वर्तमान शिक्षा पद्धति में संशोधन के व्यवहारिक प्रयास in ... Uttarakhand Sanskrit University [A Halfyearly Journal Jan to June 2015 ... ISSN No. 2347-9892
- Published Research Paper वैदिक शान्ति हेतु पंचशील का मार्ग in Aparajita Research Journal No. 1 2014-15 ISSN No. 2454-4310
- Published Research Paper धर्म राजनीति और हिंसा in लोकतन्त्र समीक्षा Vol 46 No. 3 July-Dec. 2014 P. No. 192-198, ISSN No. 0024-595.
- Delivered Lecture as a Keynote speaker on the occasion of the one day college sponsored seminar on the topic - "Challenges and its Remedies before Democracy in Present Era" M.M. (PG) College Satikunj, Kankhal, Haridwar
- Presented 4 Papers in national and international conferences.

डॉ॰ किरन ... –

- Published Research Paper 'घरेलू हिंसा के प्रति महिलाओं में जागरूकता: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन' in A Peer Reviewed Research Journal "Samaj Vigyan Shodh Patrika" Vol. ... No. xxxiii, April-September 2015.
- Published Research Paper ग्रामीण पुनर्निर्माण एवं गांधी दर्शन in Aparajita Research Journal No. 1 2014-15 ISSN No. 2454-4310

- Published a Research Paper "... महिलाओं में ... : एक ... अध्ययन" in a National Refereed Journal Radhakamal Mukerjee: Chintan Parampara Jan-June 2015
- Published a paper entitled, "Perspectives on Violence Against Women" at "International Journal Third Concept", May 2015, ISSN 0970-7247
- Published a paper entitled "... के प्रति दृष्टिकोण का एक अध्ययन" in the National Referred Journal "Recent Researches in Social Sciences & Humanities" Apr-June 2015, ISSN number 2348-3318.
- Published a paper entitled "सर्वोदय : गांधी जी का सामाजिक आर्थिक दर्शन" in edited book "World crisis and the Gandhian vision", Anu Books Publications, Meerut 2015, ISBN no. 978-93-82166-35-
- Published a paper entitled "विश्वविद्यालय की राजनीति के प्रति छात्रों के ... का एक अध्ययन" in the National Referred Journal "Recent Researches in Social Sciences & Humanities" July-Sept, 2015, ISSN number 2348-3318.

डॉ॰ सीमा ... –

- Published Research Paper शान्ति चेतना के माध्यम से मानव एकता–एक ... in Aparajita Research Journal No. 1 2014-15 ISSN No. 2454-4310
- Presented two research paper in national seminars

कु॰ अंजलि प्रसाद –

- Published Research Paper शैक्षिक ... में प्रशिक्षण की आवश्यकता एवं ... in IJEAR Vol. 6 Issue 1 SPL - 1 Jan-June 2016 2348-0033 (online) ISSN 2249-4944
- Published Research Paper ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालयों की स्थिति : एक सर्वेक्षण in Aparajita Research Journal No. 1 2014-15 ISSN No. 2454-4310
- Presented one Paper in National Seminar

श्रीमती प्रीति शर्मा (पुस्तकालय प्रभारी)–

- **Published research paper-User Education in Libraries** in International Journal of Education & Applied Research, **ISSN-2249.4944 Vol.16 Issue 1 (Online) ijear.org .**

राष्ट्रीय सेवा योजना (वर्ष 2015–2016)

महाविद्यालय में रा॰से॰यो॰ की एक इकाई कार्यक्रम अधिकारी सुश्री अंजलि प्रसाद के निर्देशन में संचालित है। वर्ष 2015–16 में रा॰से॰यो॰ का मुख्य लक्ष्य कौशल विकास रहा।

एक दिवसीय शिविर

1. 19.09.2015 (वृक्षारोपण) रा॰से॰यो॰ के अन्तर्गत स्वयंसेवियों द्वारा ... के ... सड़क के किनारे वृक्षारोपण किया गया।

मेधावी छात्राएं (सत्र 2014-15)

कला संकाय

बी०ए० (तृतीय वर्ष) में सर्वाधिक अंक

कु० [illegible]

बी०ए० तृतीय वर्ष में प्रथम श्रेणी

कु० [illegible]

कु० [illegible]

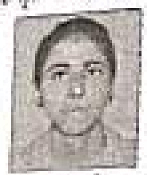

कु० [illegible]

कु० [illegible]

कु० [illegible]

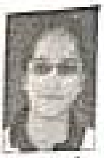

कु० [illegible]

कु० [illegible]

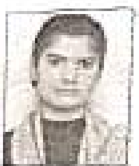

कु० पूजा शर्मा

कु० आरती

कु० [illegible]

कु० [illegible]

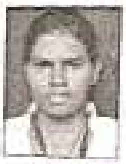

कु० [illegible]

कु० [illegible]

कु० [illegible]

कु० [illegible]

कु० [illegible]

विज्ञान संकाय (सत्र 2014-15)

बी०एससी० तृतीय वर्ष में सर्वाधिक अंक (जीव-विज्ञान संवर्ग)

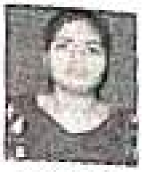

कु० [illegible]

जीव विज्ञान संवर्ग में प्रथम श्रेणी

कु० [illegible]

कु० [illegible]

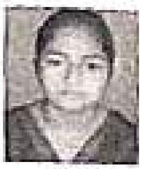

कु० [illegible]

कु० [illegible]

कु० [illegible]

कु० [illegible]

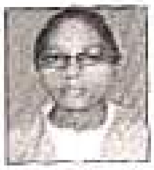

कु० [illegible]

कु० [illegible]

कु० [illegible]

कु० [illegible]

कु० [illegible]

कु० [illegible]

कु० [illegible]

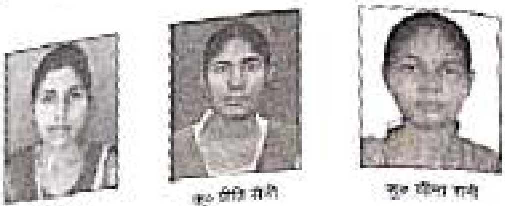

एम०ए० द्वितीय वर्ष राजनीति विज्ञान में प्रथम श्रेणी

विज्ञान संकाय (सत्र 2014-15)

बी०एस०सी० तृतीय वर्ष में सर्वाधिक अंक (गणित संवर्ग)

गणित संवर्ग में प्रथम श्रेणी

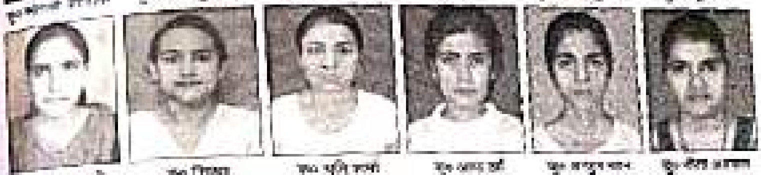

मेधावी छात्राएं (सत्र-2014-15)

एम०ए० द्वितीय वर्ष में सर्वाधिक अंक

कु० [illegible] (चित्रकला)

कु० [illegible] (समाजशास्त्र विभाग)

एम०ए० द्वितीय वर्ष चित्रकला में प्रथम श्रेणी

कु० [illegible] · कु० [illegible] · कु० आरती · कु० [illegible] सैनी · कु० [illegible] · कु० [illegible] · कु० [illegible] · कु० [illegible] · कु० अनुष्का सैनी · कु० [illegible] · कु० [illegible] · कु० [illegible] · कु० [illegible] · कु० आरती · कु० [illegible] सैनी · कु० [illegible] सैनी · कु० [illegible] सैनी · कु० [illegible] सैनी · कु० [illegible] कुमारी · कु० [illegible] कुमारी

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः

[illegible]
बी०ए० तृतीय वर्ष

भारतीय संस्कृति मूलतः आरण्यक संस्कृति रही है, अर्थात् [illegible]। [illegible] मनुष्य का [illegible] प्रकृति से [illegible] रहा है। इसी कारण प्रकृति की आराधना तथा पर्यावरण का [illegible] पुरातन [illegible] है। अथर्ववेद के [illegible] के द्वारा वैदिक ऋषि ने [illegible] पूर्व उद्घोषित किया था, 'माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः' [illegible] माता है, हम [illegible] उसके पुत्र हैं। [illegible] का [illegible] स्पष्ट है। [illegible] प्रकृति का [illegible] के प्रति [illegible] सम्पदा [illegible] है। मनुष्य [illegible] अलग [illegible] कठिन है। एक प्रकार से मनुष्य प्राकृतिक पर्यावरण का महत्वपूर्ण [illegible] है। [illegible] में सबसे प्राचीन है जिसमें सबसे अधिक मनुष्य तथा उसके पर्यावरण का महत्व [illegible] है। [illegible] को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है- जल, वायु और भूमि [illegible]। [illegible] पहाड़, [illegible], पर्वत, [illegible], झीलें, नदियाँ, वृक्ष, चट्टानें, [illegible], जलवायु, मौसम और [illegible] आदि। [illegible] सर्वजयी मातृभूमि या माँ कहते हैं। यह मनुष्य के [illegible] के लिए [illegible] जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष माना जाता है। पौधे और वन मनुष्य के जीवन के लिए अनेक उपयोगी हैं। [illegible] उपयोग वह आदिकाल से करता आ रहा है। [illegible] ऋषियों [illegible] ने वृक्षों और वनों के महत्व की अनुभूति की, [illegible] उन्होंने उन्हें धर्म में सम्मिलित करके मनुष्य द्वारा उनके संरक्षण [illegible]। [illegible] वृक्ष, पौधे [illegible] और मनुष्य जीवन के लिए कितने उपयोगी एवं महत्वपूर्ण हैं, इसे 'आयुर्वेद' के ऋषियों ने [illegible] के रूप में [illegible] है। [illegible] प्राकृतिक [illegible] का मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए [illegible] है। यदि इनमें कोई हानि पहुँचती है तो अन्ततः मानव समाज का ही अहित होगा। [illegible] कारण है कि [illegible] जीवन के [illegible] के रूप में स्वीकार किया गया जिसके अंतर्गत अनेक वृक्षों की पूजा के साथ-2 उनके वृक्षों की [illegible] भी प्रयुक्त किया गया। कुछ पौधों का औषधि [illegible] 'तुलसी' के पौधों को लगाना एक नियमित कार्य [illegible] गया है, जिससे [illegible] पर [illegible] है। पौधों [illegible] से भी संबोधित किया गया जिससे उपयोगी पौधों तथा वृक्षों का संरक्षण हो सके।

प्राचीन काल में हरे वृक्षों को काटना वर्जित था। उस समय का [illegible] यह भली भाँति जानता था कि पौधों को [illegible] और वनों को नष्ट करना मनुष्य के जीवन के लिए अत्यंत हानिकारक है, क्योंकि इनके अभाव में [illegible] होती है और पर्यावरण प्रदूषित होता है। पर्यावरण संरक्षित रह सके, इसीलिए विश्व पृथ्वी दिवस (22 अप्रैल), विश्व ओजोन दिवस (16 सितंबर), वन महोत्सव दिवस (24 जुलाई) और विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) आदि जैसे महत्वपूर्ण आयोजन निर्धारित कर उनके उद्देश्यों को आम जनता तक पहुँचा कर विश्व स्तर पर पर्यावरण संतुलन एवं [illegible] के प्रति चेतना पैदा करना और विभिन्न उपायों की खोज करना है। विश्व में पर्यावरणीय समस्याओं और प्रदूषण से संबंधित समस्याओं के निराकरण के लिए 5 जून, 1972 को स्वीडन के स्टॉकहोम नगर में एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन [illegible] एक [illegible] मॉडल तैयार किया गया, जिसके अन्तर्गत निम्न बिंदुओं पर ध्यान केन्द्रित किया गया-

1. [illegible] ओजोन परत संरक्षण के उपायों पर विचार करना।
2. '[illegible]' स्तर पर [illegible], विशेष प्रकार के [illegible] के [illegible] पर विचार करना।

[illegible] पर विचार करना।

3. [illegible] जलवायु परिवर्तन, [illegible] प्रदूषण, जनसंख्या वृद्धि तथा अन्य प्रदूषकों पर [illegible]
4. [illegible] स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं पर विचार करना।
5. [illegible]

[illegible] प्राकृतिक [illegible] पर्यावरण को निरंतर खतरा बढ़ता जा रहा है। [illegible] मानव के लिए बेहद उपयोगी तथा प्रकृति द्वारा प्रदत्त [illegible] उपयोग के उपरांत पुनः उत्पादित किया जा सके [illegible] जैसे वन, कृषि क्षेत्र, मृदा, जीव-जंतु, [illegible] दोहन करने पर उनकी पुनः पूर्ति या पुनः निर्माण [illegible] करोड़ों वर्षों में होता है [illegible] प्राकृतिक संसाधनों का वितरण असमान एवं अनिश्चित है, [illegible] जनसंख्या के कारण [illegible] पर्यावरण न केवल [illegible] अपनी धरती तथा मानव जाति के अस्तित्व [illegible] प्राचीन संस्कृति में निहित प्रकृति संबंधी ज्ञान तथा मूल्यों की ओर [illegible]

❖❖❖

"राही"

[illegible]

हर पल, हर डगर,
मुश्किल हर [illegible]।
[illegible]
[illegible]
मुश्किलों से लड़ना सीख लिया,
राही चलना सीख लिया।

मुश्किलें जीवन में चाहे कितनी भी
[illegible]
जरूरत है जो कर्म की,
दृढ़ इच्छाशक्ति की,
[illegible]
शक्ति जाग्रत करना सीख लिया,
राही चलना सीख लिया।

सफल राही वही, जो निर्भय हो,
नायक हो, हर घड़ी में -
फिर चाहे इम्तिहां की
इम्तिहां चाहे कर्मों का,
संकल्प हो जो बदल दे किस्मत,
वही योग्य है कहने के
मुश्किलों से जिसने लड़ना सीख लिया।
राही चलना सीख लिया।

भारतीय संस्कृति में प्रकृति

[illegible]

भारतीय संस्कृति मूलतः प्रकृति पूजक रही है। [illegible] फूलों और फलों का [illegible] ऋषि-मुनि [illegible] देवताओं [illegible] पुस्तकों के अनुसार [illegible] साधना का क्षेत्र [illegible] संरक्षण के लिए [illegible] देवी-देवताओं के प्रति श्रद्धा [illegible]

[illegible] पृथ्वी [illegible] भौतिक सुखों की चाह में निरन्तर पर्यावरण को दूषित करने में लगा है। [illegible] अहिंसा, [illegible] दया, ईमानदारी, प्रेम, सहनशीलता, [illegible] उदाहरण के लिए यदि हम अपने [illegible] भोजन, [illegible] आदि [illegible] नैतिक मूल्यों के [illegible] प्रकृति के साथ [illegible] स्थापित कर सकता है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति प्रकृति से जुड़ी हुई थी। इसके अनेकों उदाहरण हमें प्राचीन ग्रन्थों में देखने को मिलते हैं। ऋषियों की पूजा पद्धति भी पूर्ण रूप से प्रकृति पर आधारित थी। [illegible] प्राचीन समय में आर्य सूर्य, वायु, जल आदि देवताओं की पूजा करते थे, वे प्रकृति से जुड़े रहते थे। भारतीय प्राचीन ग्रन्थों में प्रकृति के संरक्षण की अनेक बातें मिलती हैं। भारतीय संस्कृति पूर्ण तरह पर्यावरण पर आधारित थी।

❖❖❖

बदलते परिवेश में शिक्षक की भूमिका

[illegible]

शिक्षक के [illegible] युग की समाप्ति के बाद शिष्य और शिक्षक के बीच संबंध और शिक्षक की [illegible] के सामाजिक स्तर के आधार पर बदलती रही है। आज तकनीकी [illegible] आधुनिक युग में शिक्षक की भूमिका पहले जैसी नहीं रह सकती, बदलते परिवेश में समय और [illegible] अनुसार उसमें बदलाव आना स्वाभाविक भी है और आवश्यक भी।

एक बच्चे के जीवन में शिक्षक का आचार-व्यवहार तथा उसके प्रति शिक्षक का रवैया अत्यंत महत्वपूर्ण [illegible] और बच्चे की सीखने की क्षमता को बढ़ाने वाला वातावरण [illegible] हाथ होता है। [illegible] माता-पिता व शिक्षक का व्यवहार बच्चों की मानसिकता [illegible]। उनके लिए, सब कुछ सबसे अच्छा देते रहने की चिंता में बच्चे के [illegible]। जो शिक्षक बच्चे की असफलता पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं [illegible]। दूसरे शिक्षक जो सकारात्मक ढंग से समस्या का समाधान कर [illegible] जो केवल सफलता व असफलता से ऊपर बच्चों की मानसिकता [illegible]। बच्चों को उसकी असफलता को याद दिलाते रहने के बजाए, उसमें यह अहसास पैदा [illegible] जिम्मेदारी शिक्षक की है कि वह महत्वपूर्ण है और सब काम करने की क्षमता रखता है।

गोविन्द तक पहुँचने की राह दिखाने वाला गुरु गोविन्द से भी ऊँचा स्थान रखता है। [illegible] शिष्य के जीवन निर्माण में [illegible] एक अभिभावक की भूमिका [illegible] असफलताओं की याद दिलाते रहना [illegible] अपने कार्य का लक्ष्य बना लेना न केवल शिक्षक के सम्मान को [illegible] शिक्षक के अपने जीवन को भी गलत दिशा में मोड़ देता है।

आने वाले समय में शिक्षक को एक अलग तथा अत्यंत जटिल व चुनौतियों से भरी भूमिका निभानी पड़ेगी। [illegible] अध्यापक पर छात्र की निर्भरता धीरे-धीरे कम होती चली जाए। आज टेलीविजन, कम्प्यूटर, [illegible] और आधुनिक उपकरणों और विधियों के द्वारा शिक्षण-क्रिया में ज्यादा से ज्यादा [illegible]। आज पढ़ने-पढ़ाने के तरीकों से पता चलता है कि अब अध्ययन का [illegible] दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था (distance education) के विकास से भी कक्षा में समय बिताने की [illegible] परीक्षा का पारंपरिक महत्व कम होने [illegible] निश्चय ही बदली परिस्थितियों में शिक्षक की भूमिका भी बदलेगी। शिक्षक को [illegible] विकास की आवश्यकताओं को पूरा करने व भूमंडलीकरण [illegible] नई भूमिका में उतरना होगा।

[illegible] द्वारा नियुक्त [illegible] की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। [illegible]

[illegible] शिक्षक की भूमिका [illegible]

शिक्षक, शिक्षण और विषय वस्तु तीनों के बीच [illegible] होने चाहिए। [illegible] व्यक्ति है जो सोई हुई आत्मा को जगाता है, गुण को [illegible] और संतुलित करता है। साथ ही जो सीखने के [illegible] प्रज्वलित करने का कार्य करता है।'

बच्चों के भावनात्मक विकास में शिक्षक का [illegible] खुशी व आनन्द की अभिव्यक्ति हो अथवा क्रोध, ईर्ष्या व [illegible] जरूरी है कि भावनाएं जीवन की प्रेरक शक्तियाँ हैं [illegible] के लिए आवश्यक है। शिक्षक की उन भावनाओं और [illegible] की ओर मोड़ सके।

❖❖❖

शिला-वक्ष

[illegible] नदी के किनारे, [illegible] पर खड़ा हुआ एक प्रस्तर शिलाखंड है। [illegible] काल का साक्षी है। कहते हैं कि [illegible] जन-श्रुति है कि यह शिलावक्ष सिर्फ एक बार ही बोला था। उस समय उसने कहा था- '' [illegible] ''।

शिलावक्ष के ये शब्द मैंने सुने, [illegible] जीवन के मूल्य [illegible] 'शुद्ध' विचार बन गया।

– [illegible]

भारतीय समाज में संयुक्त परिवार का भविष्य

[illegible]

परिवार मानव जीवन की आधारभूत इकाई है। परिवार ही एक ऐसी संस्था है जो बच्चों का [illegible] करती है व उनमें मानवीय गुणों का विकास करती है तथा एक जैविक प्राणी को सामाजिक प्राणी में परिवर्तित करती है। प्राचीन काल से ही संयुक्त परिवार व्यवस्था भारतीय समाज की प्रमुख विशेषता रही है [illegible] वर्तमान में एकाकी परिवारों का प्रचलन [illegible] हुआ है। संयुक्त परिवार [illegible] हमारे नैतिक मूल्यों को भी प्रभावित कर रही है। संयुक्त परिवार में तीन-चार [illegible] पीढ़ियों के लोग साथ [illegible], उनकी पत्नियाँ, विवाहित और अविवाहित बच्चे किसी [illegible] व्यक्ति के नियंत्रण में [illegible] है। संयुक्त परिवार की एक प्रमुख विशेषता इसकी समाजवादी प्रवृत्ति है। संयुक्त परिवार में व्यक्ति का [illegible] बहुत अच्छे रूप से होता है क्योंकि वह अपनी संस्कृति एवं लोकाचारों के अनुसार व्यवहार करना सीखता है। [illegible] संयुक्त परिवारों में वृद्ध और बड़ों के निर्देशन में व्यक्ति अपनी संस्कृति व आधिकारिक नैतिकता के प्रति [illegible] रखता है [illegible] एक सामान्य नागरिक के रूप में विकसित होता है। संयुक्त परिवार में बच्चों को [illegible] सभी सदस्य उनके निर्देशन में रहते हैं और व्यक्ति को संस्कृति का प्रशिक्षण, [illegible] अनुशासन की सीख दी जाती है। परन्तु बीसवीं शताब्दी में औद्योगीकरण व नगरीकरण के फलस्वरूप संयुक्त परिवारों का स्थान एकाकी परिवारों ने ले लिया। अतः समय अभाव के कारण बच्चों को अपने माता-पिता से [illegible] समुचित शिक्षा नहीं मिल पाती। अब प्रश्न उठता है कि क्या भविष्य में संयुक्त परिवार को पुनः [illegible] से देखा जा सकता है? इस सम्बन्ध में हमारे सामने तीन प्रश्न आते हैं।

पहला यह कि भारत में संयुक्त परिवार व्यवस्था को क्यों विकसित किया गया? - इस सम्बन्ध में यह [illegible] सकता है कि परम्परागत भारतीय समाज में ग्रामीण अर्थव्यवस्था की प्रमुखता थी, उस समय [illegible] विशेषीकरण का कोई महत्व नहीं था। उस समय कृषि भूमि पर मिल जुल कर काम करना, संयुक्त परिवार [illegible] थी। परन्तु वर्तमान में भारत की अर्थव्यवस्था पूर्णतया ग्रामीण नहीं है। बल्कि प्रत्येक व्यक्ति का जीवन औद्योगिक [illegible] से प्रभावित है। संयुक्त परिवारों की स्थापना धर्म तथा जाति व्यवस्था से जुड़े जिन नियमों का पालन करने के लिए [illegible] गई थी उस धर्म प्रधान संस्कृति का प्रभाव तेजी से कम हो रहा है। वर्तमान में व्यक्ति का जीवन [illegible] प्रभावित है। आज धर्म, प्रथाओं, परम्पराओं के द्वारा व्यक्ति को सामाजिक नियन्त्रण में नहीं रखा जा सकता है। [illegible] स्थान अब कानून ने ले लिया है। अतः यह आशा करना बहुत कठिन है कि भविष्य में केन्द्रीय परिवारों को [illegible] परिवारों में पुनः स्वीकार किया जाने लगेगा।

दूसरा प्रश्न है कि जिन दशाओं ने संयुक्त परिवारों को विघटित किया वे दशाएँ भविष्य में कितनी [illegible] होंगी? इस सम्बन्ध में भी यह आशा करना बहुत कठिन है कि भविष्य में इनके प्रभाव में कोई कमी हो सकेगी। संयुक्त परिवारों के विघटन के लिए अनेक कारक उत्तरदायी हैं। इनमें औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा में वृद्धि [illegible] नवीन सामाजिक मूल्यों का सबसे अधिक योगदान है। आज जैसे-जैसे नगरीकरण और औद्योगीकरण की प्रक्रिया [illegible] में बढ़ रही है शिक्षा में वृद्धि हो रही है व्यक्ति उन परम्परागत व्यवहारों और विश्वासों को अपने लिए अनुपयोगी [illegible] रहे हैं जिन पर संयुक्त परिवारों का ढाँचा निर्भर था। नए सामाजिक मूल्यों के रूप में धर्म की [illegible]

[illegible] का प्रभाव कम होता जा रहा है। जीवन का [illegible] के लिए [illegible] अतः भारत में संयुक्त परिवार का भविष्य अधिक सुरक्षित नहीं है।

तीसरा प्रश्न है [illegible] दशाएँ हैं जो भविष्य में संयुक्त परिवारों को पुनः [illegible] और हम इस पक्ष पर विचार करें, तो यहाँ की ग्रामीण अर्थव्यवस्था [illegible] आज भी [illegible] जीवन में [illegible] पुनः प्रबल होने लगी है कि [illegible] इस परिवार के सदस्य मिल-जुलकर [illegible]। यदि इस [illegible] पुनः स्वीकार किया जाने लगेगा। इसके बाद भी यह [illegible] कि संयुक्त परिवारों को [illegible] अनुशासन की जरूरत है वहीं युवा वर्ग की बढ़ती हुई [illegible] और [illegible]।

अतः आज भारतीय परिस्थिति में इन सब प्रश्नों के आधार पर [illegible] कि [illegible] संभव नहीं है किन्तु संयुक्त परिवारों [illegible] तथा संयुक्त परिवार की मूल भावना बनी रह सकती है।

परन्तु इसके बाद यह भी सच है कि भारतीय समाज आज भी परिवार को [illegible] व्यक्ति चाहे किसी भी धर्म अथवा जाति का हो उसे अपने माता-पिता, भाई-बहिनों, [illegible] लगाव रहता है।

❖❖❖

लघुकथा

ईसप ग्रीस के [illegible] में एक गुलाम था। [illegible] एक [illegible] गुलामों को [illegible] और अत्यंत [illegible] व्यक्ति था जिसे देखकर लोगों के [illegible] दार्शनिक [illegible] ईसप को खरीदकर घर ले आया। [illegible] उसकी बात मानने और यह सोचने पर मजबूर हो जाता कि उसने एक गुलाम नहीं एक [illegible] है।

उस समय ग्रीस में सार्वजनिक हम्माम होते थे। एक बार [illegible] ने ईसप को [illegible] हम्माम में यह देखने भेजा कि वहाँ भीड़ तो नहीं है। ईसप वहाँ गया और उसने देखा हम्माम के दरवाजे के पास एक बड़ा पत्थर पड़ा था। [illegible] उससे टकराते और गालियाँ देते हुए आगे बढ़ जाते। [illegible] एक व्यक्ति [illegible] उसने झुक कर पत्थर को मार्ग से हटा दिया और [illegible] आगे बढ़। लौटकर ईसप ने [illegible] बताया वहाँ तो बस एक ही आदमी है। [illegible] हम्माम पहुँचे तो देखा वहाँ तो बहुत भीड़ है। [illegible] ईसप से पूछा [illegible] वहाँ एक ही आदमी है। ईसप ने पूरी बात बताई तो [illegible] भी विस्मित रह गए।

तब से इतने युग आये और बीत गए। आज ईसप नहीं है पर आज भी उसकी कहानियाँ [illegible] हमारी आत्मा में बसी हैं।

— संकलित

आधुनिक युग में प्राचीन भारतीय मूल्यों की प्रासंगिकता

[illegible]

संस्कृति से तात्पर्य है [illegible] और चेतना, जिसमें विचारों, प्रयोजनों और भावनाओं की [illegible] हुई है। [illegible] संस्कृति है। विचार और भावना, [illegible] विभिन्न [illegible] से संस्कृति की सिद्धि होती है। आध्यात्मिक आदर्शों व परम्पराओं के रूप में भी संस्कृति [illegible] होती है। कला, साहित्य और विभिन्न संस्थाएँ संस्कृति के कार्य हैं। संस्कृति के भौतिक, बौद्धिक [illegible] आध्यात्मिक [illegible] होते हैं और तीनों के विकास और समन्वय से ही संस्कृति का भी विकास होता है। कोई भी [illegible] तक जीवित रह सकती है जब तक वह स्वतन्त्रता पूर्वक सृजनात्मक वृत्ति से निर्माण करती हुई [illegible] विकसित होती रहे।

भारतीय समाज [illegible] और उसमें आज भी सृजनात्मक प्रवृत्ति विद्यमान है। प्राचीन [illegible] भारतीय समाज के विविध तत्वों, उनके अंगों, भौतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक [illegible] और विकास आदि का ऐतिहासिक और तात्विक विवेचन किया गया है। यह माना जाता है कि [illegible] प्राचीन संस्कृति शिक्षा और प्रेरणा प्रदान करती है। मनुष्य उन वस्तुओं से भी [illegible] जीवन होगा परन्तु सचेत और कल्पनाशील प्राणी होने के [illegible] अनुभवों [illegible] से भी अपना सम्बंध स्थापित करता है।

[illegible] और उससे सम्बन्ध स्थापित कर [illegible] बौद्धिक [illegible] और इन्हीं कारणों से वह सांस्कृतिक जीवन का निर्माण करता है। आज संस्कृति के [illegible] केवल नृत्य संगीत को सांस्कृतिक कार्यक्रम की संज्ञा दी जाती है। [illegible] मूल्यों को पहचान है और यम-नियम द्वारा जीवन जीने की विशिष्ट शैली है। [illegible] सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि तो सहिष्णुता, त्याग, संतोष, स्वावलम्बन आदि [illegible] के प्रति श्रद्धा, [illegible] के प्रति विश्वास और [illegible] आचरण के कारण ही भारतीय संस्कृति जीवित है।

भारतीय संस्कृति आध्यात्म-प्रधान है, जबकि आधुनिक संस्कृति को भौतिक-प्रधान संस्कृति के रूप में देखते हैं। अध्यात्म-प्रधान संस्कृति से तात्पर्य अलौकिकवादी दृष्टिकोण को अत्यधिक महत्व देने से है। प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति ने [illegible] धर्म, रीति-रिवाजों, परम्पराओं आदि का अत्यधिक महत्व रहा है। धर्म प्रधान संस्कृति [illegible] के कारण ही [illegible] प्रधान संस्कृति माना है। परम्परागत दृष्टिकोण के तहत हम अपने धार्मिक [illegible] अतीत के प्रति महिमामण्डन का भाव रखते हैं, लेकिन आज आवश्यकता [illegible] है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर हम इस तथ्य का मूल्यांकन करें कि 21वीं सदी में भी क्या [illegible] को मान्यताओं को जारी रखा जा सकता है। आज जब दुनिया विज्ञान की निरन्तर तीव्र प्रगति के दम पर चाँद [illegible] को भी [illegible] की कोशिश कर रही है, मानव का क्लोन बनाकर ईश्वर की सत्ता को चुनौती देने की कोशिश कर रही है, तो क्या इन परिस्थितियों में धर्म या आध्यात्मिकता को आवश्यकता से अधिक महत्व देना [illegible] बुद्धिमत्तापूर्ण है?

आधुनिक संस्कृति भौतिकता-प्रधान है अर्थात् वैज्ञानिक संस्कृति है। [illegible] वैज्ञानिक दृष्टिकोण को [illegible] भौतिक का [illegible] विज्ञान की मूल्यांकनात्मक पद्धति अपनाकर [illegible] आधार पर [illegible] और व्यक्ति एवं समाज के [illegible]

आजकल इस बिन्दु पर सभी समझदार लोग भारतीय [illegible] आधुनिक संस्कृति से अत्यधिक प्रभावित होने का [illegible] परिवार प्रणाली का विघटन हो रहा है। पारिवारिक जीवन [illegible] के कारण लोग स्वतन्त्र रूप से जीवन-यापन पसन्द करते हैं [illegible] का अभाव हो गया है। संयुक्त परिवार में [illegible] होती है, वर्तमान के एकल या नाभिक परिवारों में [illegible] आधुनिक प्रभाव के कारण व्यक्तित्व के विकास में [illegible] शिक्षा के प्रसार ने उन्हें अधिक [illegible] एवं आत्मनिर्भर महिलाएँ, जो पहले परिवार की [illegible] के समान अधिकार प्राप्त करने लगी हैं।

आजकल सबसे बड़ी समस्या पाश्चात्यीकरण को आधुनिकीकरण का [illegible] दृष्टिकोण से प्राचीन एवं आधुनिकीकरण की प्रक्रिया [illegible] होने के बावजूद उनमें काफी समानता है। [illegible] आधुनिकीकरण की [illegible] की प्रक्रिया द्वारा ही आरम्भ होती है। पश्चिमीकरण की प्रक्रिया में [illegible] जिसमें आधुनिक मूल्यों के साथ-साथ कुछ [illegible] आधुनिकीकरण की प्रक्रिया एक मूल्यात्मक [illegible] आधुनिक मूल्यों का [illegible] उत्पन्न करना आधुनिकीकरण है।

इस तरह पश्चिमीकरण की प्रक्रिया के अन्तर्गत [illegible] अन्य देशों की संस्कृति का अनुकरण [illegible] आधुनिकीकरण नहीं है यही कारण है कि पश्चिमीकरण के अन्तर्गत [illegible] आधुनिक मूल्यों का अनुकरण [illegible] एवं उपयुक्त लगता है, लेकिन आधुनिक संस्कृति का अनुकरण करने की होड़ में [illegible] रहन-सहन, साहित्य आदि सभी को भूल जाना [illegible] आर्थिक के साथ-साथ सांस्कृतिक क्षेत्र में भी [illegible] भौतिकवादी संस्कृति का प्रचार आदि कारकों ने [illegible] रूढ़िग्रस्त, आडम्बरपूर्ण एवं अलौकिक [illegible] अब भाग्य की अपेक्षा कर्म पर विश्वास करने लगे हैं। [illegible] भौतिकवादी दृष्टिकोण ने लोगों को [illegible] सम्बन्धों ने ले लिया है। मनुष्य अब अधिक एकाकी एवं [illegible] जीवन नीरस एवं अर्थहीन होता जा रहा है।

प्राचीनकाल से भारतीय समाज एक विविधतापूर्ण समाज रहा है। यहाँ का समाज, संस्कृति और [illegible] विशेषताएँ दुनिया के सभी विद्वानों के लिए जिज्ञासा का विषय रही हैं, [illegible]

के कारण इसे बहुलवादी समाज (Plural Society) का नाम दिया है। भारतीय समाज और संस्कृति का [illegible] है सबसे अधिक प्राचीन है। आज हम एक आधुनिक संस्कृति में जीवन व्यतीत कर रहे हैं जिसमें मनुष्य [illegible] [illegible] आधार पर और लाभ-हानि की कसौटी पर ही सभी प्रकार के व्यवहार करता है लेकिन [illegible] [illegible] की कमी नहीं है जब व्यक्ति ने उन सिद्धान्तों और विचारों को बनाये रखने के लिए अपने [illegible] [illegible] किसे समाज में महत्त्वपूर्ण समझा जाता है। राम ने पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए [illegible] [illegible] का त्याग कर दिया। गौतम बुद्ध ने केवल सत्य की खोज के लिए सम्पूर्ण राज्य का [illegible] [illegible] स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान सैकड़ों क्रान्तिकारियों ने देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने [illegible] [illegible] इनके अतिरिक्त सामान्य जीवन में भी ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो कुछ विशेष मूल्यों के लिए [illegible] [illegible] मूल्यों को बनाये रखने के लिए बड़ी से बड़ी हानि को भी सहन करने के लिए तैयार रहते हैं। [illegible] [illegible] के अपने कुछ लक्ष्य, आदर्श तथा मापदण्ड होते हैं जिनके आधार पर व्यक्ति विभिन्न घटनाओं और [illegible] का मूल्यांकन करता है।

भारतीय संस्कृति की विशिष्ट परम्पराएँ भी हमें अपने भारतीय होने का अहसास कराती हैं और हमें [illegible] [illegible] आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। भारतीय संस्कृति की अनेक परम्पराएँ [illegible] [illegible] जीवन को अधिक [illegible] एवं [illegible] बनाए रखने में योगदान करती हैं जिनसे मनुष्य को [illegible] [illegible] साथ ही आधुनिक संस्कृति की अनेक विशेषताएँ हमारे विचारों को [illegible] [illegible] जिन्हें हम अपने व्यवहार में क्रियान्वित कर मानव जीवन को अधिक सार्थक बना सकते हैं। [illegible] [illegible] विरोध नहीं बल्कि अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है और पारम्परिक भारतीय मूल्यों तथा आधुनिक [illegible] के मध्य एक संतुलन ही एक समग्र एवं सार्थक जीवन जीने का मूलमंत्र है।

❖❖❖

जीवन सूत्र

संकलित:
शुचि जयन, बी०ए० [illegible]

1. [illegible] सफलता के बीज बोने के लिए सर्वश्रेष्ठ समय होता है।
   -परमहंस योगानन्द
2. दुनिया में [illegible] बनाए रखने का एक अच्छा तरीका यह भी है कि दूसरों की फिक्र की जाए।
   -दलाई लामा
3. रोशनी फैलाने के दो तरीके हैं- या तो दीपक बन जाएं या उसे प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण।
   -एडिथ व्हार्टन
4. शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है, इसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं।
   -नेल्सन मंडेला
5. सफलता अंतिम नहीं है, विफलता घातक नहीं है। अपने लक्ष्य को हासिल करने का प्रयास जारी रखने का साहस ही असल में मायने रखता है।
   -विंस्टन चर्चिल

प्राचीन भारतीय कला - एक अनमोल धरोहर

[illegible]
बी०ए० [illegible]

[illegible] की जननी है इस धरती पर मनुष्य [illegible] का इतिहास [illegible] [illegible] सर्जना [illegible] होने के कारण [illegible] विभिन्न दृष्टिकोणों से की गई है। [illegible] [illegible] जाती है, जिसका अर्थ सुन्दर, मधुर, कोमल [illegible] [illegible] प्राचीन सर्वप्रथम [illegible] के [illegible] हुआ है।

[illegible]

[illegible] कोई [illegible] नहीं, ऐसा कोई शिल्प नहीं, कोई विद्या नहीं, जो कला नहीं है।

भारतीय कला का विकास [illegible] मौर्य काल में हो गया था। मौर्यकाल के [illegible] शासक अशोक ने अपने [illegible] [illegible] निर्माण कार्य करवाये। [illegible] स्तूप, सिंह [illegible] [illegible] स्तम्भ, [illegible] इलाहाबाद स्तम्भ आदि निर्मित करवाये। [illegible] [illegible] भारत में अपनी कला स्थापित की [illegible] इतिहास में गुप्त [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भाव प्रदर्शन में [illegible] [illegible] भारतीय इतिहास में इस काल को "स्वर्णयुग" की [illegible] प्रदान की गई। [illegible] मूर्तिकला, वास्तुकला, [illegible] और संगीतकला का अभूतपूर्व विकास हुआ। गुप्त काल में [illegible] की मूर्तियाँ [illegible] [illegible] के लिए विश्व के इतिहास में अद्वितीय हैं। [illegible] बुद्ध तथा बोधिसत्वों की मूर्तियाँ [illegible] [illegible] गईं। इन मूर्तियों में मथुरा तथा सारनाथ से प्राप्त की गई [illegible] बुद्ध की मूर्ति विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

[illegible] की मूर्तियों में यद्यपि एक सार्वभौमिकता है, फिर भी प्रादेशिक [illegible] [illegible] अनेक पौराणिक देवी देवताओं से संबंधित मूर्तियां निर्मित हुईं- [illegible] मूर्ति, राम और कृष्ण की [illegible], विष्णु की मूर्तियां, शिव तथा उनके परिवार की मूर्तियां आदि।

[illegible] शैली भी भारतीय कला की अनमोल धरोहर है। विभिन्न स्थानों से प्राप्त बुद्ध और बोधिसत्वों, [illegible] [illegible] की विभिन्न मूर्तियाँ इस कला के [illegible] हैं। मथुरा शैली को [illegible] शैली [illegible] [illegible] मूर्तियों का निर्माण लाल बलुआ पत्थर, चिकनी मिट्टी तथा [illegible] से हुआ है। [illegible] [illegible] निःसंदेह प्राचीन भारतीय कला एक अनमोल धरोहर है, [illegible] [illegible] को देखकर आज भी हम अवाक् रह जाते हैं। उनमें भारतीय कलाकारों की [illegible] एवं [illegible] [illegible] है।

❖❖❖

दोषपूर्ण अपराध-नियन्त्रण एवं सुधारात्मक व्यवस्था

(भारत के परिप्रेक्ष्य में)

सुश्री [illegible]
असि. प्रोफेसर, [illegible]

वर्तमान समय में बढ़ते अपराध सामाजिक व्यवस्था के लिए एक गम्भीर समस्या बनते जा रहे हैं। [illegible], भ्रष्टाचार, हिंसात्मक व्यवहार, बलात्कार आदि अपराध आज हमें सोचने पर मजबूर [illegible] अपराध-नियन्त्रण व्यवस्था के दोषों पर चर्चा की जाए। भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य में देखा [illegible] के लिए विभिन्न तरह की दण्ड व्यवस्थाओं के प्रावधान किए गए हैं जिनमें दण्ड देने का उद्देश्य [illegible] निवारण है।

[illegible] ने इसी उद्देश्य पर बल दिया, कि 'दण्ड का प्रमुख लक्ष्य निवारण या क्षतिपूर्ति है'। [illegible]

[illegible] उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है।

दण्ड अपराधी को समाज का शत्रु बना देता है और अपराध करने के लिए सतर्क बनाता है तथा निपुण व [illegible] के लिए बाध्य करता है। वर्तमान में दण्ड सम्बन्धी नीति में परिवर्तन अति आवश्यक है। [illegible] अपराधी को जेल में रखने से कोई लाभ नहीं होता बल्कि हानि ही अधिक है। [illegible] 75 प्रतिशत से अधिक परिवीक्षा पर छोड़े जाने के योग्य होते हैं तब न्यायालय [illegible] दृष्टिकोण बदलती? क्या अपराध को केवल कानूनी दृष्टि से ही देखना चाहिए? जब हम अपराधी का [illegible] दण्ड का प्रमुख उद्देश्य मानते हैं और हम समाज के हितों के साथ-साथ अपराधियों के हितों की भी रक्षा करना [illegible]

[illegible]

[illegible] आधार पर [illegible] अपराधियों को [illegible] महसूस नहीं होते हैं।

[illegible] ने मृत्युदण्ड के विषय में यह तर्क दिया कि [illegible] 10-15 वर्ष के कारावास के बाद [illegible]

[illegible] दृष्टि से आगे बढ़कर संभव है।

❖❖❖

* ईश्वर सदैव खोजता है और प्रेम के अधिकार का दावा करता है
  शैतान दान खोजता है और शासन के अधिकार का दावा करता है।
* विश्वास वह पक्षी है जो प्रकाश का अनुभव करता है और गाता है, [illegible]

संकलित

शिक्षित बालिका, सशक्त समाज

डॉ० [illegible]
असि० प्रोफेसर, [illegible]

किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए बालिका-शिक्षा महत्वपूर्ण सामाजिक घटक है, एक शिक्षित बालिका [illegible] राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। [illegible]

[illegible] भारत में 0 से 6 वर्ष की [illegible] बालिकाओं का [illegible] 2001 में 927 था, [illegible] (NFHS) की तीसरी रिपोर्ट के अनुसार 47 प्रतिशत बालिका [illegible] मौलिक अधिकारों को [illegible]

आज ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकाओं का [illegible] रहा है, जो सकारात्मक संकेत है, [illegible] अशिक्षा अधिकांश समस्याओं की जड़ है, [illegible] सशक्तीकरण के तीन प्रमुख आधारों में [illegible] ये तीनों आधार शिक्षा के माध्यम से [illegible] इन समस्याओं को दूर किया जा सकता है। बालिका शिक्षा [illegible] एक शिक्षित महिला ही अपने बच्चों को विशेषतः बेटियों की शिक्षा, [illegible] जनसंख्या वृद्धि की समस्या [illegible] एक शिक्षित महिला परिवार नियोजन तथा छोटे परिवार के लाभों को समझ सकती है। [illegible] शिशु मृत्युदर, प्रसव [illegible] मृत्यु दर में कमी आयेगी, [illegible] लोगों की सोच में बदलाव आया है, किन्तु [illegible] निःसंदेह बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, सुकन्या समृद्धि, [illegible] बालिकाओं की प्रगति में सहायक सिद्ध हो सकती है। मात्र योजनायें और कानूनी [illegible] हैं। [illegible] महिला शिक्षा आवश्यक है। शिक्षित बालिका ही शिक्षित महिला बनकर परिवार [illegible] के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है और सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकती हैं।

❖❖❖

प्रकृति एवं मनुष्य

[illegible]
[illegible] तृतीय वर्ष

[illegible] सृष्टि के मूल [illegible] पुरुष और प्रकृति के [illegible] प्रकृति [illegible]

[illegible] सभी प्राचीन सभ्यताओं का आधार मनुष्य का प्रकृति के प्रति प्रेम और [illegible] के रूप में पूजा की परम्परा का प्रचलन हुआ। [illegible] आवश्यकता है। [illegible] ईंधन, पशु आहार, इमारती लकड़ी, वर्षा, [illegible]

[illegible] भारतीय संस्कृति [illegible] संस्कृति है। [illegible] उनकी पूजा कर सुख और समृद्धि की कामना की जाती है। [illegible]

वैदिक काल में प्रकृति के [illegible] प्रकृति की महिमा का सर्वाधिक गुणगान है। [illegible] पुराण, [illegible] रामायण, भगवद्गीता और [illegible] आगम, पंचतंत्र, [illegible] वर्णन है।

दुनिया में सभी प्राचीन सभ्यताओं का आधार मनुष्य का प्रकृति के प्रति प्रेम और आदर का रिश्ता है। [illegible] के अवतार के रूप में मनुष्यों, [illegible] की पूजा की परम्परा का प्रचलन हुआ। [illegible] से मिले अवशेषों से पता चलता है कि उस समाज में मूर्ति पूजा के साथ ही पेड़ पौधों एवं जीव जन्तुओं की [illegible] की परम्परा भी विद्यमान थी।

'[illegible]' में पौधों का [illegible] एक निर्धारित कार्य [illegible] गया है जिससे पृथ्वी पर [illegible] [illegible] उपयोगी पौधों तथा वृक्षों का संरक्षण हो सके। [illegible] 'अशोक वृक्ष' [illegible] विष्णु, [illegible] 'पीपल' को विष्णु, लक्ष्मी, सूर्य आदि के रूप में [illegible] इसी तरह 'आम' को [illegible] लक्ष्मी तथा बुध के [illegible] औषधि के रूप में [illegible] रूप में इसका प्रयोग किया गया। [illegible] दुर्गा, सूर्य और लक्ष्मी से जोड़ा गया। इसे औषधि के रूप में भी [illegible] उपयोगिता को देखकर उनके संरक्षण [illegible] पौधों और वृक्षों की [illegible] प्रकृति की सुरक्षा से ही संस्कृति की सुरक्षा हो सकती है। [illegible] वृक्ष पूजा और वृक्ष रक्षा से जीवन में सुख-समृद्धि की कामना की है। [illegible] अपने भविष्य को सुरक्षित रख सकते हैं।

◆◆◆

पुस्तकों के साथ

[illegible]

[illegible] 'किताब' में भाग ले रही हूँ। इस गतिविधि का [illegible] 'अपनी [illegible]'। किताब के माध्यम से हमें अपने [illegible] के अतिरिक्त पुस्तकें भी निर्गत करवाने की सुविधा [illegible] पुस्तकों की संसार से परिचय हुआ। मुझे अच्छी तरह याद है कि [illegible] 2015 को [illegible] में हमारी [illegible] और विदुषी [illegible] द्वारा किताब [illegible] 2015 को [illegible] द्वारा 14 [illegible] 2015 से पूरे देश में 'रीड इन इंडिया' अभियान का [illegible] इसका उद्देश्य भी लोगों में पुस्तकें पढ़ने की आदत विकसित करना था। [illegible] सार्वजनिक पुस्तकालयों [illegible] ग्रामीण क्षेत्रों में नये पुस्तकालय खोले [illegible] हर क्षेत्र में समय के साथ कदम [illegible] है। [illegible] गर्व की अनुभूति हुई।

पुस्तकों का [illegible] 'किताब' ने ही परिचित कराया। किताब द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं [illegible] पुस्तकें दी जिन्हें हमने उन्हें भी आपस में बाँटकर पढ़ा और [illegible] भाषा की समझ तथा अभिव्यक्ति की क्षमता [illegible] आयोजित रचनात्मक [illegible] "एक अच्छी पुस्तक [illegible] आपने एक मित्र को खो दिया।" [illegible] 'पुस्तक' [illegible] और डॉ०ए०पी०जे०अब्दुल कलाम की पुस्तक [illegible] पुस्तकों का स्थान कोई नहीं [illegible] पुस्तकों से इसी प्रकार जुड़ी रहूँगी।

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण चेतना

सुरक्षा
[illegible] तृतीय वर्ष

[illegible] संस्कृति के [illegible] भारतीय संस्कृति [illegible] संदर्भ में नहीं। भारतीय [illegible] प्रकृति के [illegible] पशु-पक्षी आदि को [illegible] तथा [illegible] आदि को भी [illegible] का प्रयत्न किया गया। प्रकृति [illegible] भारतीय जीवन का आदर्श रहा, [illegible] प्राचीन भारत के [illegible] हैं।

[illegible] प्राचीन [illegible]। विष्णु के अवतारों में मत्स्य, कूर्म, वराह आदि [illegible] पौधे हमारे लिए पूज्य हैं। भारतीय संस्कृति [illegible] अर्थात यदि हम वृक्षों की रक्षा करेंगे, तो वृक्ष भी हमारी रक्षा करेंगे।

भारतीय संस्कृति में व्रत त्योहार तथा आध्यात्मिक विधि विधान -

भारतीय संस्कृति में लगभग सभी व्रतों का संबंध वृक्षों तथा जीव-जन्तुओं के संरक्षण से है। [illegible] भारतीय संस्कृति की मूलभूत विशेषता है। [illegible] त्योहारों में वृक्षों, पशु-पक्षियों, नदियों, जलाशयों आदि के पूजन का विधान है। [illegible] आदि को [illegible] खिलाया जाता है। सभी हिन्दू [illegible] अनिवार्य रूप से पीपल, [illegible] आदि के वृक्ष होते हैं। दशहरे के दिन [illegible] देखना शुभ माना जाता है।

[illegible] का पर्यावरण, पौधे तथा भारतीय संस्कृति-

पशु-पक्षियों, तितलियों, [illegible] आदि के [illegible] जीवन [illegible] है जहाँ पेड़-पौधे, फूल [illegible] [illegible] 'शिल्प-संहिता' में पेड़ पौधों के हमारे स्वास्थ्य [illegible] प्रेम, [illegible] आदि पर पड़ने वाले प्रभावों की चर्चा की गई है। [illegible] प्रेम-भाव, [illegible] का संबंध भी पेड़-पौधों से जोड़ा गया है।

भारतीय संस्कृति में वृक्ष :-

भारतीय संस्कृति में वृक्षों को सदैव पूज्य माना गया है [illegible] वृक्ष हमारे पितरों के [illegible] है, [illegible] है। [illegible] जल और जल से ही जीवन है। पर्यावरण के [illegible] पेड़-पौधों, वृक्षों को

[illegible] है इस बात से हमारे पूर्वज बहुत [illegible] पूजा में [illegible] प्रकार के [illegible] स्थानों में [illegible] करना अनिवार्य माना गया है।

वृक्ष	संबंधित देवी देवता
तुलसी	[illegible]
बिल्व	लक्ष्मी, [illegible]
[illegible]	शिव
कदम्ब	[illegible]
आम	[illegible]
[illegible]	लक्ष्मी
पीपल	[illegible]
पलाश	विष्णु, [illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

भारत के पवित्र वृक्ष-

प्राचीन काल से भारतीय जन मानस [illegible] वृक्षों को पवित्र मानकर उनकी [illegible] करता रहा है। [illegible] ऐसे वृक्षों में - पीपल, बड़, [illegible], आंवला आदि प्रमुख हैं। [illegible] पर्व में पीपल व वटवृक्ष का बड़ा महत्व है। [illegible] इन सारे वृक्षों में भी पीपल का महत्व हमारी संस्कृति में अधिक है। [illegible] ऑक्सीजन देते हैं और कार्बन-डाई-ऑक्साइड जैसी दूषित गैस को स्वयं लेते हैं इससे मनुष्य [illegible] प्राप्त करते हैं।

[illegible]- संस्कृति-

भारत जैसे देश में [illegible] जल [illegible] का हम [illegible] नहीं कर सकते हैं। [illegible] 20 प्रतिशत [illegible] कर पाते हैं।

भारतीय [illegible]/नदी रूप तीर्थ

क्र. सं.	नदी	संबंध
1.	गंगा	[illegible]
2.	यमुना	श्री कृष्ण की [illegible]
3.	सरस्वती	[illegible]
4.	[illegible]	[illegible]
5.	[illegible]	[illegible]
6.	[illegible]	[illegible] अग्नि की उत्पत्ति का स्थान है।
7.	[illegible]	[illegible]
8.	[illegible]	[illegible]
9.	[illegible]	[illegible]

भारतीय संस्कृति में पर्वत-

भारतीय संस्कृति में नदियों के [illegible] पर्वतों को भी देवी-देवताओं से सम्बन्धित कर पूजनीय स्थान दिया है। पर्यावरण संतुलन की दृष्टि से भी पर्वतों के [illegible] करना अनुचित होता है। [illegible] इनकी पूजा की परम्परा [illegible] चली आ रही है। विभिन्न पर्वतों से देवी-देवताओं एवं ऋषियों की [illegible] की गई है।

पर्वतों से देवी देवताओं की संबद्धता

पर्वत	देवी देवताओं से सम्बन्ध
[illegible]	शिव
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	विष्णु
[illegible]	[illegible]
[illegible]	राम
[illegible]	शिव
[illegible]	[illegible] देवी
[illegible]	[illegible]
[illegible]	श्री कृष्ण

"[illegible]"

❖❖❖

कमल की व्यथा

[illegible] कुमारी
[illegible]

[illegible] मैं हूँ कमल। [illegible] [illegible] अपने आप को असहाय महसूस करता हूँ। [illegible] मैं क्या करूँ?

हे मानवजाति! मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ। [illegible] फिर महसूस करो। [illegible] आनंद, सिर्फ आनंद, बस आनंद ही आनंद.........।

तकनीकी हिन्दी का प्रयोग एवं विकास

[illegible]

[illegible]

[illegible]

❖ ❖ ❖

Society, Civilisational Crisis and Education

[Essence of lecture delivered by Prof. Shrawan K. Sharma-Posticised by Dr. Bharat Sharma]

[illegible]

आज खुद को कहाने य [illegible]

आनन्द और प्राथमिकताओं का करें संगम

[illegible]

पर्यावरण

[illegible]

[illegible]

हमारा महाविद्यालय

[illegible]

हमारा महाविद्यालय है [illegible]

[illegible]

हमारी अध्यापिकाएँ-

[illegible]

महाविद्यालय की पढ़ाई,

[illegible]

हमारा महाविद्यालय है सबसे अच्छा

हमारा महाविद्यालय है सचमुच महान।

मेरा महाविद्यालय

[illegible]

[illegible]

[illegible]...

महाविद्यालय के [illegible] महान वैज्ञानिक तथा भारत के स्वप्नदर्शी राष्ट्रपति डा० कलाम के [illegible] पर [illegible] तथा [illegible] के [illegible] अंश...

भारतरत्न डा० कलाम

कु० [illegible], बी.ए. तृतीय वर्ष

डा० कलाम [illegible] राष्ट्रपति [illegible] विज्ञान और [illegible] के क्षेत्र में [illegible] योगदान के कारण हुआ। डा० कलाम की दृष्टि में कोई कार्य छोटा नहीं था। [illegible] विज्ञान और [illegible] के क्षेत्र में [illegible] है। [illegible]

'[illegible]' [illegible] भारत रत्न [illegible] पुरस्कार प्राप्त किये। [illegible] 40 से अधिक विश्वविद्यालयों से [illegible] उपाधि भी प्राप्त थी। [illegible] वैज्ञानिकों की सर्वोच्च श्रेणी में आता है।

[illegible] अनुकूल है और [illegible] है।

डा० कलाम: एक संगीतप्रेमी

कु० [illegible] आलम, बी.ए. द्वितीय वर्ष

राष्ट्रपति भवन में यदि डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने गैर-राजनीतिक राष्ट्रपतियों की नई परम्परा आरम्भ की थी तो डॉ० कलाम इस परम्परा के [illegible] है। [illegible] कलाम की वैज्ञानिक तथा [illegible] प्रौद्योगिकी के क्षेत्र की उपलब्धियों की [illegible] है।

डा० कलाम की [illegible] किया, वह है ज्ञान के लिए उनकी [illegible]। [illegible] और किसी भी देश को महान बना सकता है। [illegible] राष्ट्रपति [illegible] संगीत का आनंद भी [illegible]। [illegible] पुस्तक [illegible] में [illegible] वर्णित किया है। [illegible] जीवन [illegible] अधिक उपयुक्त होगा।

संघर्षों का प्रयास अभय, भावी इतिहास तुम्हारा है
नखत अंगों के बुझते हैं, सारा आकाश तुम्हारा है

हम सबके प्रिय डा० कलाम

कु० [illegible], बी.ए. तृतीय वर्ष

डा० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम देश के [illegible] राष्ट्रपतियों [illegible] लोग उन्हें 'मिसाइल मैन' कहते थे। [illegible] परिवार में हुआ था [illegible] सफलताओं में ही नहीं [illegible] अब्दुल कलाम [illegible] तीन प्रमुख [illegible] इच्छा, आस्था और अपेक्षा।

असफलता की [illegible] से नहीं, [illegible]
वही सफल होता है जग में, जिसे [illegible] में सच्ची प्रीत।

डा० कलाम आप अमर हो। आपके [illegible] अमर है [illegible]।

डा० कलाम: सरल, सहज, सादगीपसंद व्यक्तित्व

कु० [illegible], बी.ए. तृतीय वर्ष

[illegible] देश के प्रति निष्ठा, भारत को [illegible] डा० अब्दुल कलाम [illegible] है। [illegible] अत्यधिक प्रभावित हैं। [illegible] इच्छा, विश्वास और [illegible] उत्पन्न हुई। [illegible]

डा० अब्दुल कलाम की विशेषता यह है कि वे बहुत ही [illegible] व्यक्ति थे। [illegible] सहज और उच्च [illegible] के कारण [illegible] है।

असफलताओं के बीच से बनाई राह

कु० [illegible], बी.ए. द्वितीय वर्ष

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डा० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम [illegible] और [illegible] के प्रतीक थे। [illegible] सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह हमेशा [illegible] कि यदि [illegible] तो क्या हुआ? [illegible] और आगे चलकर वे मिसाइल मैन के नाम से विख्यात हुए। [illegible] अपनी [illegible] जीवन से यह प्रेरणा मिलती है कि हमें अपनी मंजिल पाने के लिये [illegible] निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए।

आधुनिक राजनीति में नैतिक मूल्य

[illegible] प्रवीण [illegible]

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। लोकतंत्रात्मक व्यवस्था व्यक्तिवाद से [illegible] की ओर [illegible] होती है इसलिए लोकतंत्र में व्यक्ति का महत्व सर्वोपरि है लोकतंत्र जनता द्वारा जनता का शासन है। [illegible] में जनता अपनी पसंद के प्रतिनिधि को चुनती है और एक निश्चित अवधि के लिए उसे शासक बना देती है। [illegible] चुने हुए नेता या शासक के नैतिक मूल्य हैं।

नेता के नैतिक मूल्य

- ईमानदारी से अपना कार्य करना
- जनता की सेवा करना
- राष्ट्रीय हित यानि देश का विकास

परन्तु क्या नेता इन नैतिक मूल्यों का पालन कर रहे है?

यदि हम आजादी के समय की बात करें तो हमें जन जन में देश भक्ति प्रेम की भावना, राष्ट्र हित सर्वोपरि [illegible] इत्यादि भाव देखने को मिलते हैं। आजादी के संघर्ष से जुड़े नेताओं के नैतिक मूल्य अत्यंत ऊँचे थे। उनके जीवन का मूलमंत्र ही देश की सेवा करना था। इसका एक बहुत बड़ा उदाहरण महात्मा गाँधी हैं जिन्हें [illegible] राष्ट्रपिता की उपाधि से सम्मानित किया गया। हमारे देश के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, श्रीमति इन्दिरा गाँधी [illegible] नेता के रूप में सामने आये जिनमें देश भक्ति की भावना, देश का विकास करने की भावना कूट कूट कर भरी थी। लेकिन अब सवाल यह है कि क्या आज भी ऐसी राजनीति होती है जिसमें नैतिक मूल्यों [illegible] व देश का विकास इत्यादि भावनाओं को प्राथमिकता दी जाती है। इससे पहले कि हम आधुनिक राजनीति की बात करें सबसे पहले हम मानव के नैतिक मूल्यों की बात करेंगे।

मानव के नैतिक मूल्य

- मानवता
- ईमानदारी
- देश भक्ति
- राष्ट्र हित

लेकिन आज की राजनीति में मानव के ये नैतिक मूल्य काम नहीं आते क्योंकि आज की राजनीति स्वार्थ आधारित होती है। आज का राजनैतिक व्यक्ति अपने स्वार्थ व इच्छाओं की पूर्ति करने के लिए [illegible] करता है। यदि यहाँ यह मुहावरा कहा जाये तो गलत नहीं है कि 'हाथी के दांत खाने के कुछ और दिखाने के कुछ और' अर्थात् जनता के सामने नेता का कुछ और रूप होता है और पीठ पीछे कुछ और ही रूप होता है। आज की राजनीति को देखें तो यह कहना कठिन नहीं है कि इस राजनीति ने मानव की आत्मा को [illegible] है। मानव में मानवता ही नहीं बची तो नैतिक मूल्यों की बात करना ही व्यर्थ है।

आज की राजनीति में मानव के नैतिक मूल्य क्या हैं आइये जानने का प्रयास करें।

आधुनिक राजनीति में नैतिक मूल्य

- व्यक्तिगत स्वार्थ
- भ्रष्टाचार
- [illegible]
- जाति धर्म प्रदेश भाषा [illegible]

आधुनिक युग के नेताओं का पहला नैतिक मूल्य है- कुर्सी पाने के लिए [illegible] सत्ता में आने के बाद [illegible] देश के विकास के लिए नहीं अपितु देश के [illegible] के लिए [illegible] जाति के नाम पर बाँट रहे हैं।

आज राजनीतिज्ञों को नैतिक मूल्य की बात [illegible] है। [illegible] भ्रष्टाचार [illegible] है कि जिन्हें हम गिन नहीं सकते और [illegible] भ्रष्टाचार [illegible]

किसी कवि के शब्दों में-

> आज प्रगति का युग देखो, सब भूल गये हैं शिष्टाचार
> नया सूर्य अब उदित हुआ है, नाम जिसका है भ्रष्टाचार
> अफसर व्यापारी या नेता, सब इसके ही पूजक हैं।
> व्याकुल है जन मानस सारा, [illegible] है।

आज का विद्यार्थी भी राजनीति के [illegible] है। [illegible] में शिक्षा छात्रजीवन से ही प्रारम्भ हो जाता है। [illegible] "[illegible] की [illegible]" सिखाते हैं। और यही इनकी नैतिकता है। [illegible] राजनीति ने मानव के [illegible] नैतिक मूल्य है और [illegible] है। [illegible] धर्म, भाषा, रंग, रूप आदि से कहीं ऊपर है ईमानदारी और [illegible]।

❖❖❖

ज़िंदगी

ज़िंदगी को मैं छोटी सी टिमटिमाती मोमबत्ती नहीं मानता। मेरी दृष्टि में यह एक बड़ी मशाल है, जिसे मैं एक निश्चित काल के लिए अपने हाथों में लिए हुए हूँ। आने वाली पीढ़ी को यह मशाल सौंपने के पहले मैं चाहता हूँ कि यह अच्छी तरह जले और खूब तेज प्रकाश फैलाये।

जार्ज बर्नार्ड शा

स्वास्थ्य और भोजन-ऋतुओं के अनुसार

प्रो० [illegible]
असि० प्रोफेसर, [illegible]

जीवन के [illegible] को पोषित करने के लिए भोजन की जितनी आवश्यकता है मानव के लिए ही नहीं [illegible] एवं अन्य जंतुओं तथा [illegible] वनस्पति वर्ग आदि के संरक्षण-संवर्धन हेतु भी आहार अपेक्षित है।

धर्म या विहित कर्म के सम्पादन-हेतु मानव को शरीर-रक्षा आवश्यक है।

''शरीर माद्यं खलु धर्मसाधनम्'' आदि आप्त वाक्य इस बात का प्रमाण हैं 'पुरुषार्थचतुष्टय की प्राप्ति के लिए [illegible] की अपेक्षा कहीं अधिक आवश्यक आहार पर तथा [illegible] साधनों पर बल दिया गया।

छान्दोग्य उपनिषद के अनुसार प्राचीनकाल में शुद्ध आहार की कामना की गई थी, क्योंकि इससे मनुष्य का मन और स्मृति दोनों शुद्ध रहती है। प्राणियों के लिए अन्न अमृत के समान है परन्तु यदि वही आहार अयुक्तिपूर्वक सेवन किया [illegible] तो विष हो जाता है। [illegible] नागरिकों का भोजन प्रतिदिन दिन में तीन बार होता था प्रातः काल का प्रातराश लघु भोजन होता था, दोपहर के समय पूरा भोजन किया जाता था, फिर रात्रि के समय पहले पहर में तीसरा भोजन होता था। [illegible] में वर्णित है कि दिन में तीन बार भोजन करने का विधान उस समय समाज में प्रचलित था। महाभारत में केवल दो बार भोजन करने का विधान था। एक बार दिन में भोजन किया जाता था और एक बार रात में किया जाता था।

हेमन्त ऋतु में आहार पान: [illegible] के अनुसार हेमन्त ऋतु में अग्नि की प्रबलता रहती है हेमन्त ऋतु में गन्ने का रस तथा मधु पीना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है। दूध, घी और तेल की अधिक मात्रा में प्रयोग करना चाहिए, [illegible] भोजन करना इस ऋतु में अधिक लाभदायक होता है जो भी खाने योग्य वस्तु शक्तिदायक हो उसमें [illegible] इस ऋतु के अनुसार भोजन करने से मनुष्य की आयु क्षीण नहीं होती है।

हेमन्त ऋतु के त्याज्य आहार विहार: इस ऋतु में लघु वातवर्द्धक अन्नपान, थोड़ा खाना तथा जल में घोले सत्तू का [illegible] वर्जित बताया गया है।

शरद ऋतु में खान पान: इस ऋतु में मधुर हल्का शीतल, कड़वा एवं पित्त को शान्त करने वाले अन्नपान को मात्रापूर्वक भूख लगने पर खाना चाहिए अष्टांग संग्रह के अनुसार इस ऋतु में स्निग्ध मधुर-लवण अम्ल चाहिए [illegible] एवं मिश्री से बनाई वस्तुएँ, नवीन उड़द गन्ने के रस या दूध से बनाई चीजें तेल और नये चावलों को खाना चाहिए शरीर को शुद्ध रखने के लिए [illegible] पीना चाहिए।

शरद ऋतु में वर्जित खान पान: [illegible] शरद ऋतु में धूप का सेवन, वसा, दही दिन में सोना हानिकारक होता है।

वर्षा ऋतु में खान पान: इस ऋतु में खाने पीने की सभी चीजें बनाते समय मधु अवश्य मिला दिना चाहिए। इस ऋतु में अम्ल, लवण और घृत अधिक मात्रा में खाना चाहिए भोजन इस ऋतु में कम करना चाहिए, [illegible] किया हुआ जल मधु मिलाकर पीना चाहिए।

वर्षा ऋतु में वर्जित खान पान: इस ऋतु में जल में घुला हुआ सत्तू दिन में सोना, घूमना, नदी का जल, व्यायाम आदि त्याग कर देना चाहिए चरक सूत्र में उल्लिखित वर्षा ऋतु में व्यायाम का त्याग महत्व रखता है।

[illegible] ऋतु में खान पान: इस ऋतु में पुराने जौ, पुराने गेहूं, मधु आदि खाना चाहिए। [illegible] किया हुआ पानी या मधु मिश्रित पानी पीना चाहिए।

वसन्त ऋतु में वर्जित खान पान: वसन्त ऋतु में गुरु भोजन, [illegible] एवं स्निग्ध मधुर [illegible] नहीं [illegible] चाहिए।

ग्रीष्म ऋतु में खान पान: इस ऋतु में शक्कर, [illegible] स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है इस ऋतु में [illegible] और गरम किये हुए दूध में शक्कर मिलाकर पीना चाहिए। [illegible]

शिशिर ऋतु में खान पान: इस ऋतु में हेमन्त के अनुसार ही खान-पान करना चाहिए। [illegible] वातवर्द्धक हल्के और शीतल अन्न पान का त्याग कर देना चाहिए।

[illegible] के अनुसार इस विधि से जो मनुष्य प्रत्येक ऋतु में आहार-पान करता है [illegible] नहीं होता है।

◆◆◆

उन्नति पथ पर अग्रसर महाविद्यालय पुस्तकालय

श्रीमती [illegible] शर्मा, पुस्तकालय प्रभारी

''पुस्तकें प्रकाश गृह हैं जो समय के विशाल समुद्र में खड़े किए गए हैं।''

[illegible] 1966 में स्थापित सनातन धर्म प्रकाश चंद गर्ल्स डिग्री कॉलेज में [illegible] शर्मा ने पुस्तकालयाध्यक्ष का पद [illegible] संभाला। उनके साथ सहयोग करने के लिए श्रीमती उर्मिला गुप्ता (पुस्तकालय लिपिक) तथा श्री [illegible] (बुक लिफ्टर) एवं रामराज (परिचर) थे।

[illegible] जुलाई 2015 तक कार्यरत रहीं, श्रीमती उर्मिला जी अब हमारे मध्य नहीं हैं। [illegible] एवं रामराज वर्तमान में लाइब्रेरी के सुचारू संचालन में सहयोग कर रहे हैं। [illegible] पुस्तकों की संख्या 1600 थी जिसमें प्रतिवर्ष वृद्धि होती रही और आज यह लगभग 25000 पुस्तकों से सुसज्जित है। इसके साथ ही विभिन्न विषयों के जर्नल, पत्रिकाएँ, समाचार पत्र आदि छात्राओं को पढ़ने के लिए उपलब्ध हैं। [illegible] लाइब्रेरी में कम्प्यूटर लैब का निर्माण किया गया। छात्राओं को प्रोजेक्ट आदि पर कार्य करने के लिए इंटरनेट सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है। सन् 2014 में पद संभालने के बाद मैंने कैटलॉगिंग के काम को आगे बढ़ाया। [illegible] विषयों की कम्प्यूटर में एन्ट्री करके कैटलॉग तैयार किए गए। [illegible] छात्राओं की अध्ययन रुचि बढ़ाने के लिए भी निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं। इसी संदर्भ में [illegible] छात्राओं को विषयेतर पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से "किताब" [illegible] संचालित की जा रही है जिसके सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए हैं। पठन-पाठन की उपयोगिता के संदर्भ में [illegible] सत्य है -

''अपना तेज बनाए रखने के लिए जिस प्रकार तलवार को पत्थर की जरूरत होती है
उसी प्रकार मस्तिष्क को किताबों की..''
- जॉर्ज आर मार्टिन

पर्यावरण संरक्षण में सांस्कृतिक मूल्यों का महत्व

डा० [illegible]
एसो. प्रोफेसर, [illegible]

"जिंदगी जितनी आपा-धापी में उलझती जा रही है कि हमारे पास एक क्षण
भी नहीं कि हम रुककर प्रकृति को देख सकें......"

आज आधुनिक तकनीकी एवं विज्ञान के युग में मानव द्वारा अर्जित अभूतपूर्व सफलता ने हमें दिग्भ्रमित कर दिया है। भारत की विचार धारा जो प्रकृति को माँ मानकर हजारों साल तक जन-मानस पर छायी रही है, आधुनिकता की दौड़ में आज हमारे मन-मस्तिष्क से ओझल होती जा रही है। सम्पूर्ण मानव सभ्यता एक चौराहे पर आ खड़ा हुआ है और अब निश्चित करना है कि प्रकृति और मानव-सम्बन्धों को कैसे संतुलित किया जाये? अपनी अनुक्रियाओं का विस्तार जिस रूप में मानव समाज कर रहा है उससे प्रकृति के विधान पंगु हो रहे हैं, जिससे भविष्य की सम्भावनाएँ संकट पूर्ण होती नजर आ रही हैं। भारतीय संस्कृति में पर्यावरण को आधार बनाकर सामाजिक नियमों को बनाया गया है। इसीलिये प्रकृति को माँ के रूप में स्वीकार कर उससे मधुर सम्बन्ध बनाये गये जैसे वृक्ष, पशु, नदियां और यहाँ तक कि पत्थरों में भी ईश्वर का वास माना गया है। इसी प्रकार धर्म के माध्यम से मानव प्रकृति के सम्बन्धों को पर्यावरण विशेषताओं के आधार पर परिभाषित किया जाता है। भारत में विभिन्न धर्मों के प्रकृति के प्रति स्नेह और सम्मान आधारी रहा है। यही कारण है कि हजारों साल तक मनुष्य और प्रकृति के सम्बन्ध मधुर बने रहे और प्रकृति को उत्पीड़ित नहीं किया गया। लेकिन पश्चिम की औद्योगिक संस्कृति में घटता धार्मिक प्रभाव प्रकृति के उत्पीड़न का प्रमुख कारण बन गया है। वहाँ प्रकृति को लूटने और खसोटने की प्रवृत्ति इतनी प्रबल हुई कि धर्म की परिभाषा को ही बदल दिया गया। ज्ञान-विज्ञान मनुष्य को विस्तृत और गहन चिन्तन का आधार प्रदान करने के साथ-साथ पर्यावरण संतुलन का मार्ग प्रशस्त करता है जिससे जीवन चक्र अबाध गति से चलता रहे। प्राचीन काल में हमारे मनीषी सबसे बड़े चिंतक थे, जो प्रकृति के रहस्यों को उद्घाटित कर बेहतर सम्बंधों के लिये वैचारिक आधार प्रदान करते थे। जन-मानस में [illegible] स्वतः प्रकृति का आचरण का अंग बन जाता था। आयुर्वेद का मूल आधार मानव-प्रकृति अंतर्सम्बंध है जो काल और स्थान से आबद्ध है। पश्चिमी देशों में जो विज्ञान विकसित हुआ है, उससे आर्थिक-सामाजिक उन्नति तो हुई लेकिन नैसर्गिक-नियमों पर आधारित जीवन-दर्शन के गूढ़ रहस्य अछूते रह गये। अपने को विज्ञानी कहने वाला पश्चिमी समाज पर्यावरणीय समस्याओं से सबसे अधिक आक्रांत है। मानव समाज की मानसिकता, राजनीति और विज्ञान का संतुलन इतना बिगड़ता जा रहा है कि उसे रोकने के लिये कोई आधार नहीं दिखाई दे रहा है। प्राचीन काल में यह कार्य धर्म किया करता था, जो आज प्रभावहीन हो गया है। आज बार-बार दोहराया जा रहा है कि भगवान बुद्ध द्वारा प्रतिपादित मार्ग सम्पूर्ण मानवता के लिये मार्ग दर्शक है लेकिन जब स्वयं भारत उसका आचरण नहीं कर पा रहा है तो पश्चिमी देशों से कैसे अपेक्षा की जाये?

निःसंदेह आज का मानव भौतिक उपलब्धियों की चकाचौंध में अपने सांस्कृतिक मूल्यों को भूल चुका है, जिससे सौन्दर्यबोध के स्थान पर [illegible]-बोध बढ़ता जा रहा है। अतः मानव और प्रकृति के अंतर्सम्बंधों को मधुर बनाने के लिये हमें पुनः अपनी संस्कृति और सभ्यता को जड़ों को सींचना ही होगा।

❖❖❖

* तितली को अमरत्व से प्यार करने की फुरसत है उस मक्खी को नहीं जो मधुसंचय करने में व्यस्त है।

जल संरक्षण के संकल्प के साथ होली

[illegible], विजन, [illegible]
बी.ए. [illegible]

इस तीन वर्षों से हम महाविद्यालय में प्रारम्भ "ग्रीन-ब्रिगेड" से जुड़े हैं। इसका [illegible] पर्यावरण का प्रचार करना है। ग्रीन-ब्रिगेड के सभी सदस्य महाविद्यालय के अन्दर तथा बाहर [illegible] पर्यावरण संबंधी जागरूकता का प्रसार करते हैं। कैंपस के अंदर यह कार्य हम ग्रीन-बोर्ड पर जानकारियाँ [illegible] के आरम्भ में होने वाली ओरिएंटेशन मीटिंग तथा बाद में समय-समय पर [illegible] रिपोर्ट [illegible] इसके अतिरिक्त पत्र-पत्रिकाओं से भी बहुत सी जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। [illegible] जागरूक करने का प्रयास करते हैं परन्तु [illegible] विशेष ध्यान देते हैं क्योंकि यही इस जानकारी को भविष्य तक लेकर जायेंगे।

हम सभी जानते हैं स्वच्छता अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है इस संबंध में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भी कहा है कि स्वच्छता आजादी से भी महत्वपूर्ण है। स्वच्छ भारत के सपने को पूरा करने की कोशिश प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 2 अक्टूबर 2014 को प्रारम्भ किया गया स्वच्छ भारत अभियान है। इस प्रयास में हम ग्रीन ब्रिगेडियर्स भी अपना पूरा सहयोग दे रहे हैं। हर माह में ग्रीन ब्रिगेड द्वारा स्वच्छता टोलियाँ बनाकर महाविद्यालय के [illegible] सफाई की जाती है। इसके साथ हम अपने आस-पड़ोस में भी गन्दगी न फैलाने के लिए लोगों को जागरूक करने की कोशिश करते हैं। यद्यपि इस प्रयास में हमें कभी-2 कटु अनुभवों से भी गुजरना पड़ा, पर [illegible] लोग आगे आते हैं जिससे हमारा उत्साह बढ़ता है।

इस वर्ष पर्यावरण संबंधी बातें सीखते-सिखाते एक मन से नये ढंग से [illegible] हुआ। एक तरफ [illegible] महाराष्ट्र, म०प्र०, आंध्र, कर्नाटक आदि राज्यों में सूखे के कारण [illegible] पर [illegible] अखबार में एक समाचार पर निगाह पड़ी कि हम [illegible] होली के अवसर पर एक ही दिन में करीब 1.5 करोड़ लीटर पानी बहा देते हैं। उसी क्षण अहसास हुआ कि आज से, इसी समय से एक ठोस पहल करनी है और इसने यह पहल की होली के अवसर पर जलसंरक्षण का संकल्प लेकर। पूरे [illegible] हम सभी मित्रों ने अपने आस पास सभी से सूखी होली मनाने की अपील की और हमें सफलता भी मिली।

इस अनुभव ने हमारा उत्साह कई गुना बढ़ाया। कॉलेज में तो यह हमारा अंतिम वर्ष है पर हम संकल्पबद्ध हैं कि ग्रीन ब्रिगेडियर की अपनी भूमिका का जीवनपर्यन्त निर्वाह करते रहेंगे क्योंकि यह धरती हम सबकी माता [illegible] है।

❖❖❖

* "कौन है जो मेरा कार्यभार सँभालेगा", अस्त होते हुये सूर्य ने पूछा
"सामर्थ्य भर मैं संभालूँगा, मेरे स्वामी", मिट्टी के दिये ने कहा।

* जिस समय कांच के लैम्प ने मिट्टी के दिये को बन्धु कहकर पुकारने पर [illegible]
उसी समय चांद उगा कांच के लैम्प ने एक मृदु मुस्कान के साथ उसे पुकारा मेरे [illegible]! [illegible]।

अंतिम युद्ध

डॉ० अर्चना मिश्रा
एसो.प्रोफेसर, अर्थशास्त्र

कलिंग प्राचीन देश था। किसी समय यहाँ [illegible] रहा करती थीं। [illegible] सुदूर अफ्रीका, अरब, सुमात्रा, [illegible] आदि देशों के [illegible] महाभारत काल से भी पहले [illegible] महाभारत युद्ध के बाद [illegible] शासन व्यवस्था का [illegible] धीरे-धीरे समाप्त हो रही थी। तत्कालीन कलिंग [illegible] संस्कृति और आर्य संस्कृति का [illegible] था।

कलिंग मूलतः एक शक्तिशाली और समृद्ध देश था। [illegible] पूर्वी सीमा पर [illegible] पश्चिम में [illegible] और दक्षिण सीमा पर [illegible] गिरि [illegible] किन्तु अब यह छोटा सा शान्त देश [illegible] सम्राट अशोक की आँख की किरकिरी बन चुका था। अशोक द्वारा [illegible] कलिंग नरेश द्वारा सविनय अस्वीकार कर दिया गया था। साम्राज्य की सेना [illegible] कलिंग की सीमा पर डेरा डाल चुकी थी। अब युद्ध के अतिरिक्त अन्य विकल्प नहीं था।

○○○

[illegible] अचानक [illegible] साम्राज्य की सेना ने कलिंग पर आक्रमण कर दिया। [illegible] इधर-उधर भाग रहे थे। [illegible] शत्रु और मित्र का भेद करना कठिन था। [illegible] युद्ध का निर्णायक क्षण निकट है। [illegible] कलिंग राजकुमारी [illegible] और नागरिक और [illegible] साम्राज्य के सैनिकों को [illegible] भयानक युद्ध होने लगा। [illegible] सेना के सम्मुख कलिंग के नागरिक, बालक और [illegible] कलिंग का [illegible] साम्राज्य की सेना [illegible] स्वयं सम्राट को युद्ध [illegible] कलिंग की सेना और राजवंश समाप्त हो जाने के बाद भी कलिंग [illegible] युद्ध-भूमि में प्राणों की आहुति दे दी। सेना के सम्मुख [illegible] पशुओं की भाँति काट डाला गया। [illegible] प्रशिक्षित और संगठित साम्राज्य की सेना के सम्मुख [illegible] हो चुका था।

[illegible] सारा आकाश ढक गया था। [illegible] नगर को लूटती, विध्वंस करती सेना

[illegible] देवानांप्रिय अशोक की आँखों के [illegible] किन्तु [illegible] और [illegible] सम्राट अपने हाथी से [illegible] दृष्टि नहीं [illegible] प्रिय पुत्र कुमार [illegible] युद्ध भूमि में उसके [illegible] किन्तु [illegible] अब वह [illegible] था।

○○○

[illegible] मानव तो क्या कोई पशु-पक्षी तक नहीं दिख रहे थे। [illegible] हार और मृत्यु की छाया [illegible] कोई शब्द नहीं था। अचानक [illegible] एक शिशु का कोमल, [illegible]

[illegible] अशोक की आँखों में [illegible] प्रतीक का स्वर था....., यह जीवन का स्वर था। [illegible] एक बालक [illegible] जैसे मुझे अकेला छोड़कर तुम सब कहाँ चले गये थे।

[illegible] बालक [illegible] शत्रु और मित्र की पहचान नहीं थी। [illegible] एक सैनिक ने [illegible] कि कलिंग के इस [illegible] को भी समाप्त कर दे।

[illegible]' अशोक का [illegible] स्वर गूँज उठा। 'इस महाविनाश के बीच भी यह जीवित रह गया।'

[illegible]' सम्राट [illegible] 'प्रलय का विजेता'।

[illegible] यह फिर [illegible] 'अपराजित! [illegible] ने मुझे कलिंग के लिए छोड़ दिया। मैं ही [illegible] कलिंग की भूमि [illegible] है।'

सैनिक बोल उठे 'यह शत्रु है महाराज'।

[illegible] बालक दोनों हाथ फैलाकर [illegible] सम्राट ने बालक को गोद में उठा लिया। [illegible] सम्राट पुचकार कर उसे चुप कराने लगे। सम्राट के आदेश पर सैनिक बालक के लिए दूध ले आये। [illegible] बालक को दूध पिलाने की चेष्टा की। [illegible] सम्राट ने बालक को गोदी में [illegible] बालक [illegible] दूध पीने लगा। दूध पीकर बालक [illegible] अशोक के [illegible] सभी शिविर की ओर लौट चले।

[illegible] इति। अर्थात् [illegible] [illegible]

1. यमः- [illegible] "अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः।"

2. नियमः- [illegible] "शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः।"

3. आसनम्- [illegible]

4. प्राणायामः- [illegible]

5. प्रत्याहारः- [illegible]

6. धारणा- [illegible]

7. ध्यानम्- [illegible]

8. समाधिः- [illegible]

[illegible]

❖❖❖

परोपकाराय सतां विभूतयः

[illegible] शर्मा
[illegible]

[illegible] परोपकाराय [illegible] [illegible]

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णास्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरमाणून्पर्वतीकृत्य नित्यं, निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः॥

[illegible] भर्तृहरिराह-

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः, नवाम्बुभिर्भूमिविलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः, स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्॥

[illegible]

वहति च किल मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णं। शमयति परितापं छायया संश्रितानाम्॥

[illegible]

एते सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थान्परित्यज्य ये, सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये।
ते अपि मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये, ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे॥

"उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्" [illegible]

[illegible] परोपकारमयी प्रवृत्तिः [illegible] "परोपकारः पुण्याय"।

[illegible]

❖❖❖

INDIAN ACHEIVEMENT IN SPACE

Priyanka Rana
B.Sc III Yr

India is making remarkable progress in the field of space research. At the time of independence, the country was far behind the developed countries of the world in terms of scientific and technological research and development, particularly in the field of space research. We had neither infrastructure nor requisite skill and experience and had to depend upon other countries for various technological activities. After independence, the country had made great efforts in order to minimise its dependence on other countries and to become technologically independent. Today India stands at length with most advanced science faring nations of the world like U.S.A, Russia, China etc. It is a matter of pride for our country that today international market and companies are lining up to avail us satellite launch facility. Besides developing best and largest no. of satellite viz Remote Sensing Satellite in orbit, country has done wonders in the field of communication, weather and navigational satellite.

The space research activities which are mainly conducted by sending rocket in the space gained momentum in India by the formation of Indian Space Research Organisation (ISRO) in 1969. The year 1970 marks the beginning of experimentation in the history of Indian Space Research Programmes. During this period, India carried on *Several Satellite* programmes like Arya bhatta, Bhaskara, Rohini and Apple.

Arya bhatta was the first Satellite launched to conduct experiment in space and to gain experience in the fabrics, design and the operation of the entire system.

Apple which stands for Arian passenger pay load experiment was launced to conduct several activities in the field of communication, T.V. networking and radio networks.

Rohini was the first satellite to be placed in an orbit. These satellite and so many of others show India's satisfactory progress in the field of space research.

The success of these programmes led to an operationalisation in the year 1983, during which following satellite programmes were carried on by ISRO.

INSAT- Indian first multipurpose satellite and its series

INSAT - 1A , 1C INSAT - 1B , 1D INSAT - 2A , 2C INSAT - 2B , 2D

IRS - satellite and its series in the field of remote Sensing

IRS - 1A IRS - 1B IRS - 1C IRS - 1D

ASLV - Placed successfully in the Orbit.

PSLV - D2 - Remote Sensing Satellite placed in polar sun synchronous orbit.

Till Now, India has launched 18 satellite since its first in 1975. The recently launched satellite was ASTROSAT - Launched on Sept 11, 2015. It is India's first dedicated wavelength observatory.

India INSAT and IRS are the major programmes of the ISRO.

INSAT (Indian Satellite Technology) system is one of the largest domestic communication satellite in Asia Pacific Region. INSAT system occupies prominent role in the space programme. It serves many sectors in indian economy. It is due to INSAT that more than 900 million people have accessibility to T.V. through 1400 terrestrial broadcast transmitters. It serves for various communicational and T.V. programmes in India.

IRS also have equally important services. The picture of high resolution state of camera of IRS are useful in several ways in planning and development of the country. These pictures clearly in monitoring the water harvesting zone, mineral prospects and fishing zone etc.

India has made tremendous stride in launching vehicle technology to achieve self reliance in this area so that it can launch air craft indigenously. These vehicle technology for satellite launch are-

- Polar Satellite launch Vehicle (PSLV)
- Geosynchronous Satellite launch Vehicle (GSLV)

These vehicles have launched numerous satellite programmes and earth observatory satellite programmes. These programmes are mature enough to offer satellite launch facility to the other countries of the world-ANTRIX, is the commercial arm of the space department, concerned with various space related activities of India globally. The successful launch of GSLV during the year 2004 - 05 is the most significant milestone in the history of Indian space programmes. All these activities of ISRO endearingly speak of India's mounting progress in the field of space research.

India has made remarkable progress in planetary exploration and the study of solar system with the help of its moon- mars satellite. Chandrayaan. The activity of Chandrayaan on moon in finding H_2O on it is the most significant milestone in the history of Indian space programmes. On Nov. 11, 2015 chairman of ISRO, Dr. K. Radhakrishnan said that today India stands fourth or fifth in the list of nations making rapid advancement in the area of space research.

❖❖❖

ESSENCE OF EDUCATION

- Kalpna Pandey
B.A. IIIrd Yr

Knowledge itself is a neutral tool that can be used for good or evil. Wisdom in contrast, always directs us towards happiness. The task of education must be to stimulate and unleash the wisdom that lies dormant in the minds of all young people. This is not a forced process like pressing something into a prepared mould, but rather drawing out the potential which exists within.

Education is generally understood as a form of learning where by knowledge, skills and habits are etched out in the minds of an individual through instruction, training, sharing and communicating. **'There are two kinds of education one teaches us how to make a living and the other how to live.'** In this quote John Adams has beautifully brought out the true essence of education. While on one hand it highlights the necessity of educating one self to earn a living, on the other hand it throws light on the ethical dimension of human life. Today's schools must encourage teachers to be committed and [illegible] about their role and responsibility.

The essence of education in the words of William James is , '**to teach a person what deserves to be valued, to impart ideals as well as knowledge, to cultivate in students the ability to distinguish the true and good from their counterfeits and the wisdom to prefer the former to the latter.**' According to W.B yeats "**Education is not the filling of a pail, but the lighting of a fire**"

What is the Significance of education in our lives? Education as defined by many is our ability to read and write along with the moral values we inculcate in our student hood but its definition has kept changing with time in modern day society it has been given an altogether different meaning. It has changed into a rat race followed by getting admission in school, college by hook or by crook and then focusing on getting good grades only. The Essence of real education is altogether missing.

Education has two forms-formal and informal. Formal education is "what we receive a degree for what we learn". And, informal education is not "receiving a degree for what we learn" and, that is the real education where we understand the very fact that what we know is ours. No one can take that away from us. We don't need a degree for the things we know, that is our real essence of education and that is our power.

In the modern age, the whole concept of education has changed. Now, the western culture and ways of life have forced us to give importance to material & study courses which can give us lucrative jobs aiming at a luxurious way of life. However, the concept of education based on ancient culture that was highlighted by Dr. Radha Krishanan & J. Krishnamurti is different. According to them, education should not aim at just getting a better job or having wider domination over others. The main aim of education should be deep integration of thought & feeling. It should remove fear from our mind. The function of education is to create integrated, intelligent human beings. All the same the spiritual aspect of education which imparts deeper peace & satisfaction, should not be ignored. A quote from Aristotle sums up all. "**Educating the mind without educating the heart is no education at all.**"

Nevertheless it is important for us to understand that education should be made available to both boys and girls. Ours is a country and society that still perceives women as less adequate than men. The [illegible] exist only with men. Education should generate the overall growth and development of all individuals.

The true essence of education in life is to be a problem solver and a shining light that chase darkness into obscurity. To me, the essence of education is simply it's power to transform individuals by providing them an insight and understanding of real meaning of life. only this kind of education can help discover individuals their uniqueness and develop it. Only this kind of education can keep the soul of the society intact and pass it on from one generation to another.

❖❖❖

50 YEARS OF SCIENTIFIC ADVANCEMENT

Km. Himanshi Thakur
Km. Mudrika Verma
B.Sc. I

Modern age is the age of science. Today science is not what it was before 50 Years ago. There is no sphere of life where science has not influenced us. It has done much for us. It has a rapid progress in modern age of science. So in the sky above, on the earth below, down to the ocean has gone a triumphant car of the science.

Time flies on wings. We started from the ice age. We travelled from stone age to computer era. The modern age is the age of science, industry, wireless communication, biotechnology & information technology. Today information technology acts as a marvel to the science. There was a time when news travelled from the post of horse. Then came telephone. Now we have fax machines, through E-mail we can transmit or receive the message from thousand of miles within seconds. Pigeons were used to send messages, then came the distribution system. When the great scientist Alexander Graham Bell invented telephones they were wired, signals passed through cables and were heard from one point to another. Later on wires changed to wireless and then ultimately wire system was introduced. Then science invented GSM (Global System Of Mobiles) and SIM cards technology invented GPS (Global Positioning System) which made easier to locate objects all over the world. What a rapid achievement !!! A flying pigeon from one point to other transformed into the flying signals. It is science.

Computers have replaced the human brain & gone beyond the human brains. The memory of computerised machine can receive and store information or knowledge through internet. Through computer we can copy or paste, within few minutes. We can play videos, games, download, screen share, facebook connects one another over thousands of miles. The disc of computerised machines can store the information and knowledge of our libraries, in hospital patient files, in court criminal cases, in aeroplanes, passenger enquiry about their flights, in Research Institute, in space search etc. Machines are our extra limbs. They weave clothes for us. We can fly like birds. We can cross the sea like fishes.

Scientific progress during last five decades has made human life comfortable, luxurious and enjoyable in all walks of life. It is still evolving and adding new dimensions of life on planet earth & beyond. Scientific progress is surely need of the hour, however, it depends on men whether it is used blissfully or made an abuse for the mankind by bringing about hazardous consequences.

SOCIAL IMPACT OF GENETIC- ENGINEERING

Mrs Jyoti Sharma &
Dr. Neelam R. Dachale

Genetic Engineering is a hotly debated topic in the media.

Genetic Engineering also called genetic- modification is the direct manipulation of an organism's genome using biotechnology.

It is a set of technology used to change the genetic makeup of cells, including the transfer of gene within and across species boundaries to produce improved or novel organism.

An organism that is generated through genetic engineering is considered to be a genetically modified organism (GMOs). The first GMOs bacteria generated in 1973 and GM Mice in 1974.

Genetically modified food has been sold since 1994; GlO Fish, the first GMO designed as a pet, was first sold in the United States in December 2003.

Genetic Engineering have been applied in numerous fields including research, agriculture industrial biotechnology and medicine.

Genetically modified crops have been commercialized.

Genetic Engineering is used to create animal models of human disease.

Genetically modified Mice are the most common genetically engineered animal model. They have been used to study cancer, obesity, heart disease, diabetes, arthritis, aging, etc. Potential cures can be tested against these mouse model.

Gene therapy is the genetic engineering of humans, generally by replacing defective genes with effective ones.

Genetic Engineering has been used to produce a type of insulin from yeast and bacteria like E.coli. This genetically modified insulin 'Humulin' was licensed for human use in 1982.

Genetic Engineering has had huge impacts in society in positive and negative aspects.

On the positive end of the spectrum, genetically modified organism can have beneficial effects on the food we eat.

Although some people fear the unforeseen health risk, the risk are just, no trust on GM foods.

Source- 1 www. [illegible] > pet_108_c_28428
2 www. [illegible].com

◆◆◆

EDUCATION

Fatma Parveen
B.A. IIIrd Yr

Education can simply be defined as the act of acquiring and imparting knowledge through teaching and learning. Education is an embodiment of literacy and competence. Schools and institutions serve as restaurants where individuals feast on the tasty meals of knowledge given by teachers. Literacy is the ability to read and write and this shows the thick line between illiterates and literates. In Africa, it is believed that once the person possesses the capacity to read and write, then he is literate and he is better off than the meager farmers in the village who could hardly write their own names. Is that the essence of education? Competence is the ability to do something well; a doing which is a result of knowledge gained through learning and training. When seeds of literacy and competence are planted in the deepest soils of the mind of an individual, the mind becomes an educated one. Competence is what keeps an individual to thrive in a world ruled by the law of competition.

Wisdom is the correct application of knowledge. What is the use of amassing knowledge without applying it? Why shall we burn night candles to get a distinction in Biology and yet we don't have a good personal hygiene? Why study Chemistry and yet we don't know dangers petrol could be? It is pathetic to see youths who are proud to be first class graduates but yet cannot do anything with that they claim to have learnt. It is frustrating to see fellow students extol literacy and denigrate competency. Some technicians who have never been to the four walls of an institution are miles ahead of some so-called engineers in providing viable solutions to various problems. Good enough if we can read or write English language a five year old in Manchester also should be able to do that brilliantly. There is more to education than wearing a three- piece suit and sitting in an air- conditioned office.

Nelson Mandela described education as the most powerful weapon which can be used to change the world. Positive changes have been experienced over the years in different sectors of life because of the involvement of educated individuals. Education has no doubt aided inventions which resulted into modern day civilization and technology. The competence inscribed by education on the hearts of young minds gave birth to an unquenchable curiosity which made them unparalleled inventors of all times. American prolific inventor Thomas Edison invented the light bulb, scottish Scientist Alexander Graham Bell made communication easy with telephones, the Wright Brother made a mockery of the law of gravity with their high- flying planes and Karl Benz of Germany solved the challenge of transportation with automobiles. These inventions solved problems bedevilling the world hence they changed the world with flaming torches of education which they held firm in their hands on the podium of excellence.

Education creates a good atmosphere which enhances a civic- minded followership. American presidential Debate in America has more glamour than Nigeria's presidential Debate because of the sharp contrast in the literacy level of both countries. Leaders will be on their toes if their followers are well educated about politics, civil rights and core issues of governance. Education is powerful! It is capable of pulling down nebulous empires built by tyrants. To conclude, the true essence of education is to change the world for the best, to set the minds free from the shackles of ignorance. Only this kind of education can take the humanity towards the path of ultimate progress.

THE YOUTH AND REAL MAKE IN INDIA

Dr. Bharati Sharma
Asst. Prof. English

कोशिश कर हल निकलेगा, आज नहीं तो कल निकलेगा।

Keeping this ideology in mind let us concentrate upon the role, responsibility, interferences and challenges before youth. Moreover, this is the high time when the most positive energies as well as opportunities, possible for real make in India need to be revived. We should remind ourselves the *dharma* of each Indian is to help in blossoming of values and ethics. Let us have a moral view:

भूख लगना प्रकृति है,
छीनकर खाना विकृति है?
बांटकर खाना संस्कृति है।

This future progress of India will completely depend upon harnessing the youth energy to bring about significant productivity. India has declared 2010-20 as the 'decade of innovation' and the quality of human resource is the core of development of the country. Both the private and public sectors are highlighted to invest prudently in empowering and skilling and equipping them to compete with the best at world level. Educational institutes are also responsible to inspire, energize and strengthen the youth to accept global challenges. Thus factors to be focused are right platform, suitable environment to acquire Critical, Creative and Innovative Thinking, Collaborating, Communicating, Media Literacy, Technology, Literacy, Social Skills and Leadership, Team work, responsibility and practical applications, Skills for real life solutions for societal benefits. These, actually are in concise way, the means of empowered youth.

Higher education is playing significant role today. Some vital issues like status of higher education, growth and expansion, effects of value crisis are the questions. The solutions to increase its status are self evaluation, self exploration, research, leadership, awareness, disaster management, women empowerment, value education and in all, awareness, from and for all directions.

The youth today is deficient of rituals having a wrong perception in society that great grand ethics are [illegible] for aged class. For example, *Shreemad Bhagwat Geeta*, appear misinterpreted. *Karmayoga* actually is meant for youth which energize their transparency in communication, decision making, live vision. Thus, society expect, out of our youths and they have to fulfill this expectation. Now it is upon them whether they make their role model Rama, Swami Vivekananda, Gautam Buddha etc. There is also an option open to them that they maintain the expected energy body and become their own role model. Now the question is how to get emergence of energy body. We were genius at the moment of birth but with the due passage of age we got downfall in our spirituality. Thus in our childhood, when we are still fresh from heaven, we have recollection of the divine. This vision of blessed divine world, makes the child see on earth the light of heaven. Hence nature appears to him:

Apparelled in Celestial light.

Almost all formal education today addresses the visible physical layer of human beings, and so do [illegible] to each other. With less and less awareness of our higher levels of consciousness, we [illegible] things like self content and mutually helpful behavior are becoming oblivious in preference [illegible] profit. With the help of spirituality, we are all capable of reaching higher levels of [illegible] to access the divine powers of Universal Energy to empower our actions of our physical [illegible].

For this purpose youth has to go upward or inward i.e. his energy body getting rid of 'Vikaar' [illegible] physical body and once we get stretch in our physical body, there starts search as energy body. [illegible] has been celebrated in various forms in the ethics of our ancient books.

बढ़ें ओर नित्य चेतना की उपलब्धि।
[illegible]
[illegible]
सुखमयी अनुभूति अंतस दीप्ति भव।
भारती इति धर्म ही संस्कृति का मर्म।
[illegible]

A cosmic and personalized experience of oneness that allows us to live in wisdom and knowledge [illegible] universal energy is spirituality. Our Spiritual Body actually forgot its oneness with reality in connection to physical body. As we go upward, oneness grows. Let us have comparison in between above [illegible]. While going upward, we grasp automatically certainty, co-operation which means no if, no [illegible] no dilemma but a sure vision developed by oneness i.e. spirituality. We learn the art of Co-operation. Thus comes knowledge and wisdom. Now reawakening of 'sadbuddhi' occurs and constant [illegible] Chetna.

सब जिय व्यापि एक मैत्री।

Thus the youth today, has to achieve '*dharma priya*' Indian life-view like *Ramayana's* Ram and [illegible] which are still vibrant in Indian community. This attitude will bring excellence among youths and will be a greater most contribution in the path of real make in India.

❖❖❖

- 'It is in love that religion exists... external worship is only a symbol of internal worship but internal worship and purity are two real things.....This is the gist of all worship to be pure and to do good to others...He who sees Shiva in the poor in the weak, really worships Shiva. Unselfishness is the test of religion'.
- धर्म केवल प्रेम में प्रतिष्ठित है......बाह्यपूजा आंतरिक पूजा का प्रतीक मात्र है..... आंतरिक पूजा और पवित्रता ही वास्तविक है.... सब धर्मों का सार है- पवित्र रहना और परहित करना.......... जो दीन-दुखियों में शिव को देखता है वही शिव की सच्ची पूजा करता है.....निःस्वार्थता धर्म की कसौटी है।

रामेश्वरम में स्वामी विवेकानंद के भाषण का अंश

ENVIRONMENTAL POLLUTION

Dr. Anupama Garg
Associate Professor, English

During the last three decades a wave of environmental consciousness has developed through out the world. An effective control of environmental pollution has become a dire need of the day, as without its control the living species of nature, particularly human beings can not survive.

Today environmental pollution is a burning problem for all conscious men of all the countries. Environmental pollution disturbs the natural environment. It results directly or indirectly from human activities often involving substances being in the wrong place, at the wrong time, in the wrong quantities and in the wrong physical or chemical form.

There are many causes and sources of pollution. The first are source of atmospheric emissions which are associated with the burning of fossil fuels to application of fertilizers and pesticides. The second ones are the discharge of domestic and industrial effluent into rivers and other water bodies.

Unfortunately different types of environment pollution are rapidly spreading out- we are facing air pollution, water pollution, noise pollution, radiation pollution, land pollution, solid waste pollution etc. All these pollutions have adverse effects on man and environment. The problems are multiplying fast due to increasing urbanisation which is responsible for decreasing the greenery.

Air pollution arises from the combustion of coal, reduction in numbers morbidity and mortality from respiratory ailments, dust fall etc. In the present century pollution growth, expansion in industry and technology and urbanisation are the major factors that increase this problem.

We get water from so many sources. These sources are of ground water, springs, running water, standing waters (lakes, lagoons, ponds etc.) waters of unusual temperature and chemical composition thermal waters, snow and ice, sewage and brackish waters. Centuries back there was purity in every type of natural water. But unfortunately with the rapid increase of population and industries all type of waters has not only become polluted but also unavailable. This results in I. P. L. cricket matches are transferred from one state to another farmers committing suicide and bloody quarrels for a pail of water.

Noise pollution is a great curse of modern civilization. Noise has been defined as an unwanted sound what is music to one person's ear may be noise to another's. The various sources of environmental noise may be classified as aircraft, road traffic, road repair, maintenance work, industry and commerce, domestic and residential construction and demolition work, entertainment activities such as musical concerts, advertising and sports activities and exhaustive industries.

The next is land pollution. The land pollution has been mainly solid wastes and chemicals. One of the major pollution problems of large cities has been in the disposal of solid waste including farm and animal manure, crop residues, industrial wastes like chemical, fly ash and smelters, garbage, paper, cardboard, plastic, rubber, cloth, leather, construction rubbish, dead animals, discarded manufactured products like and washing machines and autos and e garbage.

Environment pollution is an incurable disease. It can only be prevented so it is the duty of every individual living on the planet to share his responsibility not thinking that Government or NGO's are responsible for making the world pollution free. In the end, our society will be defined not only by what we create but by what we refuse to destroy.

❖❖❖

अपराजिता - स्वर्ण जयन्ती अंक (2016-17)

कला एवं संस्कृति विशेषांक

महाविद्यालय की समस्त छात्राओं व शिक्षण एवं शिक्षणेतर स्टाफ से अपराजिता सत्र 2016 हेतु शोधपत्र/रचनायें आमंत्रित हैं। इस संबंध में छात्राओं हेतु निर्देश निम्नवत हैं-

1. रचनायें मौलिक/स्वरचित होनी चाहिए। प्रत्येक रचना के अंत में मौलिकता संबंधी प्रमाण-पत्र निम्न प्रारूप में लिखा होना चाहिए- "मैं .... कक्षा .... की छात्रा, पुत्री .... प्रमाणित करती हूँ कि .... शीर्षक की रचना मेरी मौलिक/स्वरचित रचना है, अन्यथा सिद्ध होने पर परिणाम के लिए मैं स्वयं उत्तरदायी रहूँगी।

छात्रा के हस्ताक्षर

2. शोध पत्र/रचना स्पष्ट रूप से हस्तलिखित या टंकित होनी चाहिए।
   टंकित रचनायें निम्नानुसार प्रेषित की जा सकती हैं:-
   हिन्दी - AA Sena, Font Size - 14 अंग्रेजी - Times New Roman, Font Size - 11
   E-mail ID - ssd.degree@gmail.com
3. रचनायें हिन्दी, अंग्रेजी व संस्कृत किसी भी भाषा में लिखी जा सकती हैं।
4. प्रत्येक रचना के साथ अपना पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ भी संलग्न करें।
5. प्रकाशन योग्य रचनाओं के चयन में सम्पादक मंडल का निर्णय अंतिम होगा।
6. शोधपत्र/रचनायें अधिकतम 30-09-2016 तक पत्रिका के संपादक मंडल के सदस्यों में से किसी के भी पास जमा करवाई जा सकती हैं।

सम्पादक

हस्तकला प्रदर्शनी का आयोजन
अनुभूति के बच्चों ने सीखी एक्शन पेंटिंग
चित्रकला प्रदर्शनी आयोजित
हिना, शिवानी, मुद्रिका रहीं प्रथम

स्वस्थ भोजन तो स्वस्थ शरीर
खुशबू छात्रसंघ अध्यक्ष और तानिया सचिव बनीं
एनएसएस के उद्देश्यों को करें साकार

महाविद्यालय परिवार

डा० शालिनी पंत - प्राचार्या

शिक्षिका वर्ग -

कला संकाय

1. **डा० अर्चना मिश्रा**, एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
2. **डा० अनुपमा गर्ग**, एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी
3. **डा० अलका आर्य**, एसोसिएट प्रोफेसर, चित्रकला
4. **डा० भारती शर्मा**, असिस्टेंट प्रोफेसर, अंग्रेजी
5. **डा० कामना जैन**, असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
6. **डा० किरन बाला**, असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र
7. **कु० अंजलि प्रसाद**, असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र
8. **डा० अर्चना चौहान**, असिस्टेंट प्रोफेसर, चित्रकला
9. **डा० प्रतिभा शुक्ला**, असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत
10. **डा० सीमा रॉय**, प्रवक्ता हिन्दी (प्रबन्ध तंत्र)
11. **कु0 प्रीति**, प्रवक्ता हिन्दी (प्रबन्ध तंत्र)

विज्ञान संकाय (स्ववित्त पोषित)

1. **डा० असमा सिद्दीकी**, प्रवक्ता, वनस्पति विज्ञान
2. **डा० उमा रानी**, प्रवक्ता, वनस्पति विज्ञान
3. **श्रीमती पल्लवी सिंह**, प्रवक्ता, रसायन विज्ञान
4. **डा० गीता सैनी**, प्रवक्ता, रसायन विज्ञान
5. **डा० रेखा सिंह**, प्रवक्ता, जन्तु विज्ञान
6. **डा० संगीता सिंह**, प्रवक्ता, जन्तु विज्ञान
7. **श्रीमती शैली सिंघल**, प्रवक्ता, कम्प्यूटर साइंस
8. **श्रीमती दीप्ति नागपाल**, प्रवक्ता, कम्प्यूटर
9. **डा० पारुल चड्डा**, प्रवक्ता, गणित
10. **डा० मोनिका गोयल** प्रवक्ता, गणित
11. **श्रीमति मोनिका मित्तल**, प्रवक्ता, भौतिक विज्ञान
12. **कु० तारणी अग्रवाल**, प्रवक्ता, भौतिक विज्ञान
13. **श्रीमती ज्योति शर्मा**, प्रवक्ता, माइक्रोबायोलाजी
14. **डा० नीलम रावत**, प्रवक्ता, माइक्रोबायोलाजी

एम० ए० (स्ववित्त पोषित)

1. **श्रीमती रूमन**, प्रवक्ता चित्रकला
2. **कु० प्रीति देवी**, प्रवक्ता चित्रकला
3. **कु० शिवानी**, प्रवक्ता चित्रकला
4. **डा० शालिनी वर्मा**, प्रवक्ता राजनीति विज्ञान
5. **डा० रुचि गहलौत**, प्रवक्ता राजनीति विज्ञान
6. **कु० प्रवीन**, प्रवक्ता राजनीति विज्ञान

शिक्षणेत्तर कर्मचारी वर्ग -

कला संकाय

श्री अनुज कुमार सिंघल, नैत्यिक लिपिक
श्री बलुरा गिरी, चौकीदार
श्री नवाब सिंह, माली
श्री राजपाल सिंह, बुक लिफ्टर
श्री रामराज शर्मा, पुस्तकालय परिचर
श्री रविन्द्र कुमार, कला परिचर
श्री पंकज कुमार, परिचर
श्री सतीश कुमार, सफाईकार
श्री तीरथपाल, परिचर
श्री कर्णपाल सिंह, परिचर

विज्ञान संकाय एवं एम०ए० (स्ववित्त पोषित)

श्री राकेश कुमार शर्मा, कार्यालय अधीक्षक
श्रीमति प्रीति शर्मा, पुस्तकालय प्रभारी
श्री निशान्त पंडित, लिपिक
सुश्री सुषमा देवी, पुस्तकालय लिपिक
श्री विनोद कुमार, प्रयोगशाला सहायक
श्री शिव मंगल वर्मा, प्रयोगशाला सहायक
श्री संदीप भटनागर, प्रयोगशाला सहायक
श्रीमती नीतू तायल, प्रयोगशाला सहायक
श्री अजय अविनाश, कम्प्यूटर ऑपरेटर
कु० प्रियंका, प्रयोगशाला सहायक
श्रीमति सुषमा कटारिया, प्रयोगशाला सहायक
श्री गगन रस्तोगी, परिचर
श्री उमेश कुमार, परिचर
श्री राजेश कुमार, परिचर
श्रीमती नीलम, सफाई कर्मचारी
श्री तेलूराम, परिचर
श्री मुकेश, परिचर

अपराजिता